बी0टी0सी0 (तृतीय सेमेस्टर) कक्षा–शिक्षण विषयवस्तु
(सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए)
हिन्दी
पाठ–1
पाठ्यपुस्तक में आये प्रमुख कवियों और लेखकों का परिचय (कक्षा–2 से 4 तक)

रामनरेश त्रिपाठी द्वारा रचित 'नन्दू का जुकाम' शीर्षक कविता कक्षा–3 के अध्याय 11 में रखी गयी है। इसमें कवि ने बाल मनोविज्ञान के अनुसार भावों को अभिव्यक्त किया है। इस कविता के माध्यम से बच्चे आनन्द की अनुभूति कर सकें, वे ॠतुओं के बदलने से शरीर पर पड़ने वाले प्रभावों को समझ सके तथा उनमें कल्पना शक्ति का विकास हो इन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत कविता को पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

1–रामनरेश त्रिपाठी–द्विवेदी युग के प्रसिद्ध कवि रामनरेश त्रिपाठी का जन्म सन् 1891 में जौनपुर जिले के कोईरीपुर ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम रामदत्त त्रिपाठी था। घर पर ही स्वाध्याय से उन्होंने संस्कृत, अंग्रेजी और उर्दू की शिक्षा प्राप्त की। जीवन के आरम्भिक काल में त्रिपाठी जी कलकत्ता चले गये। वहीं उन्होंने एक मिल में नौकरी कर ली। यहीं उन्होंने बंगला का ज्ञान प्राप्त किया। इसके बाद वे मारवाड़ गये और वहाँ जाकर गुजराती भाषा का ज्ञान प्राप्त किया। इस प्रकार विविध भाषाओं का ज्ञान उन्हें हो गया।

'साहित्य भवन प्रयाग' की स्थापना में उनका बड़ा हाथ था। हिन्दी के प्रचार का कार्य उन्होंने कई प्रकार से किया। उन्होंने पुस्तकें लिखीं और समय–समय पर दक्षिण भारत जाकर हिन्दी का प्रचार किया। जीवन के अन्तिम दिनों में वे सुल्तानपुर (अवध) में रहने लगे थे। सन् 1963 ई0 में पौष शुक्ल एकादशी को प्रयाग में उनका स्वर्गवास हो गया।

'मिलन', 'पथिक' और 'स्वप्न' तीन प्रबन्धात्मक काव्यों की रचना की, जिसमें लौकिक प्रेम उदानीकृत होकर देश–प्रेम का पर्याय हो गया है। 'मानसी' इनकी फुटकर कविताओं का संग्रह है जिसमें देश–भक्ति, प्रकृति और नीति का निरूपण किया गया है। इन्होंने लोकगीतों का भी संग्रह किया है।

त्रिपाठी जी ने अपने साहित्य द्वारा देश–प्रेम की पावन भावना भरकर युवकों को उत्साहित किया, कर्म मार्ग का महत्व समझाकर उन्हें कर्तव्य प्रिय बनाया और अपनी विविध रचनाओं से हिन्दी साहित्य का कोश भरा। हिन्दी जगत उनकी साहित्यिक देन के प्रति आभारी है।

मूल्यांकन–

- रामनरेश त्रिपाठी किस युग के कवि थे ?
- उनकी रचनाओं का मूल प्रतिपाद्य क्या था ?
- उनकी प्रमुख रचनाओं के नाम बताइए।

सुभद्रा कुमारी चौहान कृत 'बादल किसके काका' शीर्षक के कक्षा–3 के अध्याय–3 में स्थान दिया गया है। इसमें कवयित्री ने बारिश को घड़ा, दरवाजा, माँ, काका आदि से जोड़ते हुए बाल स्वभाव के अनुसार वर्णित किया है। बच्चे सहजता से ऋतुओं से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त कर सके। उनके शब्द भण्डार में वृद्धि हो। उनमें शब्दों को विविध सन्दर्भों में प्रयोग करने की समझ विकसित हो, इन विविध उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रस्तुत पाठ्यक्रम में सँजोया गया है।

2. सुभद्रा कुमारी चौहान–सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म प्रयाग में सन् 1905 में हुआ था। इनके पिता रामनाथ सिंह एक विद्वान व्यक्ति थे। सुभद्रा जी को दो भाई और तीन बहने थीं। उनका परिवार राष्ट्रीय विचारधारा से प्रभावित था। स्वयं सुभद्रा जी ने भी असहयोग आन्दोलन में भाग लिया और अध्ययन छोड़ दिया। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा प्रयाग के क्रास्थवेट कालेज में हुई थी। उनका विवाह खण्डवा निवासी लक्ष्मण सिंह के साथ हुआ। यहीं उनको काव्य गुरु के रूप में माखनलाल चतुर्वेदी मिले। उनके प्रभाव में रहकर सुभद्रा जी ने राष्ट्रीय भाव की कविताएँ लिखीं। राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के कारण उन्हें कई बार जेल–यात्रा भी करनी पड़ी।

राष्ट्रीय भाव की कविता लिखने में अग्रणी सुभद्रा जी का देहावसान 1984 ई0 में मोटर दुर्घटना में हुआ।

सुभद्रा जी मुख्यतः कहानी लेखिका और कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनकी रचनाओं में मुकुल, बिखरे मोती, उन्मादिनी, त्रिधारा आदि प्रमुख हैं।

मूल्यांकन–

- सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म कब हुआ था ?
- इनके काव्य गुरु का नाम बताइए।
- इनकी कहानी संग्रह का क्या नाम है ?

रामधारी सिंह 'दिनकर' कृत 'चाँद का कुर्ता' शीर्षक कविता कक्षा–3 के अध्याय–12 में रखी गयी है। प्रस्तुत कविता बच्चों की कल्पना पर आधारित है। इस कविता के माध्यम से भाषा, गणित तथा पर्यावरणीय अध्ययन का परस्पर सम्बन्ध दिखाते हुए बच्चों को उनसे परिचित कराना ही मुख्य उद्देश्य है। जैसे–मोटा, छोटा–बड़ा, अंगुल, फीट आदि की बात (कविता में आए शब्द) गणित के विषय में की जा सकती है और पर्यावरणीय अध्ययन में ऋतुओं की।

3. रामधारी सिंह दिनकर–राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म सन् 1908 ई0 में बिहार के मुंगरे जिला स्थित सिमरिया ग्राम में हुआ था। उन्होनें पटना विश्वविद्यालय से बी0 ए0 (आनर्स) की शिक्षा प्राप्त की। आगे चलकर दिनकर जी ने असहयोग आन्दोलन में भी भाग लिया था।

सन् 1935 में बिहार प्रान्तीय साहित्य सम्मेलन का सभापतित्व किया। स्वतंत्र भारत के कवियों का प्रतिनिधित्व करने के लिए वे विदेश भी गये। आरम्भ में सब रजिस्ट्रार के पद पर भी कार्य किया। इसके पश्चात् वे मुजफ्फरपुर कालेज में आचार्य नियुक्त हुए। राज्यसभा के सदस्य के रूप में भी मनोनित किये गये। इनका देहावसान सन् 1974 ई0 में हुआ।

रेणुका, हुँकार, रसवन्ती, द्वन्द्वगीत, सामधेनी, धूप और धुवाँ, इतिहास के आँसू, नील कुसुम आदि इनकी राष्ट्रीयता प्रधान रचनाएँ हैं। इसके अतिरिक्त इन्होंने 'मिट्टी की ओर' और 'अर्द्धनारीश्वर'

नाम की आलोचना सम्बन्धी पुस्तकें भी लिखी। 'संस्कृति के चार अध्याय' शीर्षक पुस्तक से इन्हें विशेष प्रसिद्धि मिली। अपनी रचनाओं के माध्यम से इन्होंने ओजस्वी एवं प्रगतिशील स्वर मानवता के क्षेत्र में मुखरित किया। रूढ़ि–विद्रोह, नवीन स्फूर्ति और ओजस्विता की दृष्टि से इनकी कविताएँ अद्वितीय हैं।

मूल्यांकन–

- रामधारी सिंह दिनकर की कुछ प्रमुख रचनाओं के नाम बताइए।
- साहित्यकार के अतिरिक्त अपने जीवन काल में इन्होंने और किस पद पर कार्य किया?

4. मैथिलीशरण गुप्त–कक्षा 4 के अध्याय–9 में गुप्त जी की 'सरकस' शीर्षक कविता रखी गयी है। प्रस्तुत कविता में कवि ने कुछ ऐसे अटपटे अनोखे खेलों तथा दृश्यों का वर्णन किया है जो प्रायः सरकस में बच्चों को देखने को मिलता है। कविता के पाँचवे, छठे और सातवें चरण के माध्यम से उन्होंने परतंत्र देश की स्थिति की ओर संकेत किया है। जहाँ कुछ लोग जंजीरों में बँधकर चाटुकारिता पूर्ण जीवन शैली अपनाये हुए हैं। कवि की दृष्टि में ऐसे लोग वीरों (भारतीय) की सन्तान होकर भी वीर कहलाने के अधिकारी नहीं। देश–भक्ति की भावना एवं मान–सम्मान के साथ जीने का सन्देश इस कविता में निहित है।

हिन्दी काव्य प्रेमी मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 1886 ई0 में चिरगाँव जिला झाँसी में हुआ था। इन्होंने नवीं कक्षा की पढ़ाई विद्यालय से की। इसके बाद घर पर ही शिक्षा और अध्ययन का कार्य चलता रहा। उनकी 'हे भक्त' शीर्षक कविता से प्रभावित होकर महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अपना शिष्य बनाया। द्विवेदी जी की देखरेख में गुप्त जी का कविता लिखने का क्रम चलता रहा और इन कविताओं का प्रकाशन 'सरस्वती' में होता रहा।

साहित्य रचना के साथ ही गुप्त जी स्वाधीनता आन्दोलन में भी सक्रिय थे। असहयोग आन्दोलन में उन्होंने जेल यात्रा भी की थी। सन् 1948 में आगरा विश्वविद्यालय में इन्हें आनरेरी डी0लिट0 की उपाधि दी। राष्ट्रपति द्वारा आपको राज्य–परिषद का सदस्य मनोनीत किया गया। इनका निधन 12 दिसम्बर सन् 1964 ई0 को हुआ।

इन्होंने लगभग 40 मौलिक काव्य–ग्रन्थों की रचना की जिसमें रंग में भंग, जयद्रथ वध, भारत–भरती, किसान, शकुन्तला, पंचवटी, अनघ, त्रिपथगा, द्वापर, यशोधरा, नहुष, सिद्धराज, कुणाल गीत, पृथ्वी पुत्र, जय भारत आदि उल्लेखनीय हैं। 'भारत–भारती' की रचना कर गुप्त जी ने राष्ट्रकवि का पद प्राप्त किया।

मूल्यांकन–

- मैथिलीशरण गुप्त ने किसके शिष्यत्व में काव्य लेखन का कार्य किया ?
- आगरा विश्वविद्यालय द्वारा इन्हें कौन सी उपाधि प्रदान की गयी थी ?
- अपनी किस रचना के कारण ये राष्ट्रकवि कहे जाते हैं ?

5–सुमित्रानन्दन पन्त–सुमित्रानन्दन पन्त की 'ग्राम श्री' कविता कक्षा–4 के अध्याय–16 में रखी गयी है। प्रस्तुत कविता में कवि ने बसन्त ऋतु के आगमन का चित्र खींचा है। आम वृक्षों पर रूपहली और सुनहली बौरों का लद जाना, कोयल का कूकना, ढाक–पीपल के पत्तों का झरना। जहाँ एक ओर आँखों के सामने आने लगता है वहीं बाग–बगीचों में कटहल, जामुन और खेतों में धनियाँ की महक पाठक तक पहुँचने लगती है।

बच्चे प्राकृतिक दृश्यों से प्रभावित होकर स्वयं भी उनका वर्णन अपने शब्दों में कर सके। उनमें स्वतंत्र भावों/विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास हो, इस दृष्टि से प्रस्तुत कविता को पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म सन् 1900 में अल्मोड़ा स्थित कौशानी नामक ग्राम में हुआ। जन्म के कुछ घण्टे बाद ही उनकी माँ सरस्वती देवी दिवंगत हो गयीं। इनके पिता का नाम गंगादत्त पंत था। अपने चार भाइयों में पन्त जी सबसे छोटे थे। इनकी शिक्षा काशी स्थित जयनारायण स्कूल में हुई। वहाँ से स्कूल लीविंग परीक्षा पास करने के बाद कवि पन्त ने म्योर कालेज प्रयाग से एफ0ए0 की शिक्षा प्राप्त की। तदन्तर संस्कृत और बंगला का अध्ययन करने लगे। उन्होंने 'रूपाभ' का सम्पादन किया। प्रयाग रेडियो–स्टेशन के उच्च पदाधिकारी के रूप में भी इन्होंने विशेष ख्याति प्राप्त की। इन पर पाश्चात्य स्वच्छन्द धारा के कवियों शैली, वर्ड्सवर्थ, कीड्स और टेनिसन का गहरा प्रभाव था। भारतीय विचारकों में विवेकानन्द, गाँधी और अरविन्द के दर्शन का उन पर प्रभाव पड़ा। इन्हीं प्रभावों के कारण उनकी काव्य प्रवृत्ति में भी परिवर्तन होता रहा। प्रकृति प्रेमी पन्त जी का निधन 28 दिसम्बर सन् 1977 ई0 को हुआ।

इनकी कविताओं में वीणा, ग्रन्थि, पल्लव, गुंजन, युगान्त, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्ण–किरण, स्वर्ण–धूलि, युगान्तर, उत्तरा, रजत शिखर, अतिमा, वाणी, चिदम्बरा, कला और बूढ़ा चाँद, लोकायतन आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

मूल्यांकन–

- पन्त की रचनाओं का नाम बताइए।
- पन्त द्वारा किस पत्रिका का सम्पादन किया गया ?
- पन्त पर किन पाश्चात्य कवियों का प्रभाव माना जाता है ?

'सरिता' शीर्षक कविता के कवि गोपाल सिंह नेपाली ने यह लघु सरिता का बहता जल के माध्यम से मनुष्य को निरंतर संघर्ष करते हुए जीवन पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है तथा अपने प्रकृति–प्रम को भी दर्शाया है। हमें भी प्रकृति से प्रेम करना चाहिए।

गोपाल सिंह नेपाली–गोपालसिंह नेपाली का जन्म 1911 ई0 में बिहार राज्य के चम्पारण जिले में बेतिया में हुआ। इनका प्रारम्भिक नाम गोपाल बहादुर सिंह था। उन्होंने बेतिया राज्य उच्च आंग्ल विद्यालय में प्रवेशिका तक शिक्षा पाई और यही उनकी औपचारिक शिक्षा की सीमा थी। प्रकृति से उनको गहरा लगाव था। वन, पर्वत, निर्झर, घाटी एवं बीहड़ों में घूमने और उन्हें देखने का बड़ा शौक था। उनके इसी प्रकृति–प्रेम ने उनके कवि–मन को बड़ा प्रभावित किया। 'भारत गगन के जगमग सितारे' उनकी पहली कविता थी, जो 1930 ई0 में दरभंगा से प्रकाशित होने वाले 'बालक' मासिक में छपी थी। 1932 ई0 में काशी में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के अभिनन्दन–उत्सव के अवसर पर आयोजित कवि–सम्मेलन में उन्होंने पहली बार सार्वजनिक मंच से कविता पढ़ी जो बहुत सराही गई। 1945 ई0 में इन्हें सर्वश्रेष्ठ गीतकार का पुरस्कार मिला। 16 अप्रैल 1963 को नेपाली जी का निधन हो गया।

नेपाली की कविता में प्रकृति–प्रेम, देश–प्रेम और राष्ट्रीयता तथा मिलन–विरह के स्वरों की प्रमुखता है। उनके गीतों में प्रकृति के नैसर्गिक एवं ग्राम्य–सौन्दर्य के विविध रूपों का चित्रण हुआ है।

उनकी कविता में मस्ती और निर्भीकता की जो अभिव्यक्ति हुई है, वह उनके व्यक्तित्व को उजागर करती है। उन्होंने फिल्मी जगत में हिन्दी गीतों को प्रतिष्ठित करके उन्हें सर्वथा नई दिशा, नई भाषा एवं नई शैली प्रदान की। कहीं तद्भव के शब्दों के प्रयोग उन्हें लोक–जीवन के निकट ला खड़ा करते हैं तो कहीं कोमलकान्त तत्सम शब्दावली उन्हें रोमानी भावावेश और कल्पना–प्राण लोक की सैर कराने लगती है। मुख्य रचनाएँ–उमंग, पंछी, रागिनी, नवीन, नीलिमा एवं पंचमी उनकी प्रमुख काव्यकृतियाँ हैं।

मूल्यांकन के प्रश्न–

- गोपालसिंह नेपाली का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?
- उन्हें प्रकृति से प्रेम क्यों था ?
- साहित्य के अलावा उन्होंने किस क्षेत्र में काम किया ?
- उनकी रचनाएँ लिखिए ?

महादेवी वर्मा–श्रीमती महादेवी वर्मा का जन्म संवत् 1934 में होलिका दहन के पुण्य पर्व के दिन उ0प्र0 के सुप्रसिद्ध नगर फर्रूखाबाद में हुआ। इनकी माता हेमरानी साधारण कवियित्री थीं एवं श्री कृष्ण में अटूट श्रद्धा रखतीं थीं। इनके नाना को भी ब्रजभाषा में कविता करने का चाव था। नाना एवं माता के इन गुणों का महादेवी पर भी प्रभाव पड़ा, जिसके प्रस्फुटन के परिणामस्वरूप ही आप कवयित्री बनीं। नौ वर्ष की छोटी उम्र में ही इनका विवाह स्वरूप नारायण वर्मा से हो गया। माता का साया सिर से उठ जाने पर भी इन्होंने अपना अध्ययन जारी रखा तथा पढ़ने में और अधिक मन लगाया। इन्होंने मैट्रिक से लेकर एम0ए0 तक की परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीण कीं। तदनन्तर वे प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्रधानाचार्य के रूप में नियुक्त हो गयीं। आपका सम्पूर्ण जीवन हिन्दी सेवा तथा महिलाओं की शिक्षा के लिए समर्पित रहा। चित्रकला और संगीत में आपकी विशेष रूचि रही, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण आपकी कविताओं में दृष्टिगोचर होता है। आपका काव्य संगीत की मधुरता से परिपूर्ण है। रंग–बिरंगी चित्रकला जैसे शब्दचित्र उपस्थित कर देना आपकी कविताओं की विशेषता है।

सर्वप्रथम आपकी रचनाएँ 'चाँद' में प्रकाशित हुई। आप 'चाँद' की सम्पादिका भी रहीं। आपकी रचनाएँ हैं–नीहार, रश्मि, सांध्यगीत, दीपशिखा, नीरजा, आधुनिक कवि, सप्तपर्णा आदि। आपको, आजीवन हिन्दी सेवा के लिए उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने भारत–भारती पुरस्कार से नवाजा। 'यामा' के लिए भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार तथा 'नीरजा' के लिए सेक्सरिया पुरस्कार भी प्रदान किया गया। 'नीहार', 'रश्मि', 'आधुनिक कवि' के मंगला प्रसाद पारितोषिक भी प्राप्त हुआ। आप आधुनिक छायावाद की प्रमुख कवयित्रियों में से एक हैं। छायावाद के साथ आपकी रचनाओं में रहस्यवाद भी मिलता है, जिसका कारण है आपका दर्शनशास्त्र से प्रेम। आपने प्रकृति के भिन्न–भिन्न रूपों का चित्रण किया है, जो प्रभावोत्पादक है।

मूल्यांकन के प्रश्न–

- महादेवी वर्मा का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?
- इनके जीवन की कुछ बातें लिखिए ?
- इन्हें कौन–सा पुरस्कार प्राप्त हुआ ?

- उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए ?
- महादेवी वर्मा किस पत्रिका की सम्पादिका थीं ?

कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर'—प्रभाकर जी का जन्म सन् 1906 ई0 में हुआ था। आपके पिता श्री रामदत्त मिश्र पण्डिताई करते थे। आप शान्त स्वभाव के संतोषी ब्राह्मण थे, परन्तु आपकी माता का स्वभाव बड़ा ही कर्कश तथा उग्र था। आपके परिवार में शान्ति नहीं थी। इन्हीं कारणों के फलस्वरूप 'प्रभाकर' जी की प्रारम्भिक शिक्षा सुचारू रूप से नहीं हो पाई। आपने स्वाध्याय से ही हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषाओं का गहन ज्ञान प्राप्त किया। बाद में आप खुर्जा के संस्कृत विद्यालय के विद्यार्थी बने तभी आपने राष्ट्रीय नेता मौलाना आसफ अली का भाषण सुना, जिसका आप पर इतना प्रभाव पड़ा कि आप अपनी परीक्षा त्यागकर स्वतंत्रता के आन्दोलन में कूद पड़े। तब से आपने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र—सेवा को समर्पित किया। आपको अनेक बार जेल यात्राएँ करनी पड़ी। आपने हिन्दी में लघुकथा, संस्मरण, रेखाचित्र और रिपोर्ताज की अनेक विधाओं का प्रवर्तन किया है। आपने पत्रकारिता के क्षेत्र में साधना कर उसे विशेष प्रतिष्ठा दिलायी है। आप जीवनपर्यन्त एक आदर्शवादी पत्रकार के रूप में प्रतिष्ठित रहे हैं। आपकी प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं—'धरती के फूल', 'आकाश के तारे', 'जिन्दगी मुस्कराई', 'भूले—बिसरे चेहरे', 'दीपजले शंख बजे', 'माटी हो गयी सोना', 'महके आँगन चहके द्वार', 'बाजे पायजनियाँ के घुँघरू', 'क्षण बोले कण मुस्काये' आदि। आपकी भाषा में मुहावरों तथा उक्तियों का बड़ा सहज प्रयोग हुआ है। आलंकारिक भाषा से आपकी रचनाएँ कविता का सौन्दर्य प्राप्त कर गयी हैं। आपके वाक्य प्रायः छोटे—छोटे एवं सुसंगठित हैं, जिनमें सूक्ति की सी संक्षिप्तता और अर्थ गाम्भीर्य है। आपकी भाषा में व्यंग्यात्मक सरलता, मार्मिकता, वेग, चुटीलापन और भावाभिव्यक्ति की अद्भुत क्षमता है। आप हिन्दी साहित्य निबन्ध विधा के स्तम्भ हैं।

कक्षा—5 'मैं और मेरा देश'

इस पाठ के रचयिता कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर' हैं। उन्होंने दो तीन घटनाओं का उल्लेख करके यह बताने का प्रयास किया है कि हम अपने आचरण के द्वारा किस तरह अपने देश का सम्मान घटा या बढ़ा सकते हैं। यदि आपका आचरण शिष्ट है तो आपसे राष्ट्र का सम्मान बढ़ेगा, यदि आपका आचरण अशिष्ट है तो राष्ट्र के सम्मान को भयंकर आघात पहुँचेगा। इसलिए आचरण की सभ्यता से हम अपनी संस्कृति को सुरक्षित रख सकते हैं तथा राष्ट्र का सम्मान भी कायम रख सकते हैं।

मूल्यांकन के प्रश्न—

- 'प्रभाकर' जी का जन्म कहाँ हुआ था ?
- 'प्रभाकर' जी के पारिवारिक स्थितियों की विवेचना कीजिए ?
- 'प्रभाकर' जी की शिक्षा—दीक्षा कहाँ हुई ?
- 'प्रभाकर' जी ने किन—किन विधाओं में लिखा ?
- 'प्रभाकर' जी की रचनाएँ कौन—कौन सी है ?
- 'प्रभाकर' जी की भाषा—शैली कैसी है ?

रसखान–रसखान कृष्णभक्त कवि थे। आपने 'भक्ति–नीति माधुरी' कविता के माध्यम से श्रीकृष्ण के विविध रूपों का सुन्दर वर्णन किया है।

रसखान का जन्म सन् 1558 ई0 के लगभग हुआ था। इनका असली नाम सैय्यद इब्राहिम था। ये बचपन से बड़े प्रेमी स्वभाव के थे। इनका प्रेम कृष्ण भक्ति के रूप में विकसित हुआ। बाद में ये स्वामी विट्ठलनाथ के शिष्य हो गये। सन् 1916 ई0 के लगभग आपकी मृत्यु हो गयी। रसखान की गणना भक्तिकाल के कवियों में की जाती है। आपकी रचनाओं में सगुण भक्ति की कृष्णमार्गी धारा प्रवाहित हुई है। आपका सांसारिक प्रेम कृष्ण के प्रति अलौकिक प्रेम के रूप में चिरस्थायी हो गया। श्रीकृष्ण के सौन्दर्य और बाल–लीला के साथ ब्रज–भूमि का सौन्दर्य चित्रण अद्वितीय है।

रसखान की दो रचनाएँ हैं–'सुजान–रसखान' तथा 'प्रेम–वाटिका'। 'सुजान–रसखान' की रचना सवैया एवं कवित्व छन्दों में तथा 'प्रेम–वाटिका' की रचना दोहा शैली मे की गयी है। रसखान किसी परम्परा का पान करने के बजाय नवीन परम्परा के जनक बने। इनकी मुक्तक शैली परवर्ती कवियों के लिए अधिक श्रेयस्कर हुई। आपकी सम्पूर्ण रचना मधुर ब्रजभाषा में है। अलंकारों के सटीक प्रयोग से भाषा में भाव–सौन्दर्य और बढ़ गया है। ब्रजभाषा में कविता करने वाले मुसलमान कवियों में रसखान सर्वोपरि हैं। ब्रजभाषा के भक्त कवियों में आपका स्थान महत्त्वपूर्ण है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के शब्दों में–

'इन मुसलमान हरिजन पै, कोटिक हिन्दू निबारिए।'

मूल्यांकन के प्रश्न–

- रसखान का जन्म कब हुआ और उनका असली नाम बताइए ?
- इनकी रचना किन–किन छन्दों में हुई है ?
- रसखान किसके भक्त थे ?
- उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए ?

तुलसीदास–तुलसीदास जी ने अपनी रचनाओं में ज्ञान, भक्ति तथा वैराग्य का अद्भुत समन्वय किया है। आपने नीति के दोहे भी लिखे हैं। आपकी भक्ति दास्य भाव की है।

भारतीय संस्कृति के अपर गायक गोस्वामी तुलसीदास का अब तक कोई प्रामाणिक जीवन–चरित्र प्रस्तुत नहीं हो सका है। डॉ0 नगेन्द्र द्वारा लिखित 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में उनकी जन्मतिथि क्रमशः 1497 ई0, 1526 ई0 तथा 1532 ई0 दी गयी है। इसी प्रकार उनका जन्म स्थान राजापुर जिला बाँदा, सोरो जिला एटा तथा सूकर क्षेत्र जिला आजमगढ़ वर्णित है। इन मतों में सर्वाधिक मान्यता राजापुर ग्राम जिला बाँदा जन्मतिथि सन् 1532 ई0 को ही प्रदान की गयी है। तुलसीदास सरयूपारी ब्राह्मण थे। आपके पिता का नाम आत्माराम दूबे और माता का नाम हुलसी था। कहा जाता है कि जन्म के समय ही इनके मुख में दाँत थे। इनके जन्म को अशुभ मानकर माता–पिता ने इन्हें त्याग दिया। फलस्वरूप इनका बचपन कष्ट में व्यतीत हुआ। संयोगवश इनकी भेंट बाबा नरहरिदास से हो गई। बाबा ने इन्हें अपना शिष्य बना लिया और तीर्थ स्थानों की यात्रा कराते हुए काशी ले गये और वहाँ गुरू शेख सनातन से वेद, दर्शन, धर्म एवं शास्त्र विद्या प्राप्त कर ये अपनी जन्म–भूमि लौट आए। आपका विवाह पं0 दीनबन्धु पाठक की पुत्री रत्नावली के साथ हुआ। उससे अत्यधिक पेम करते थे। जनश्रुति के अनुसार एक दिन वर्षा की घनघोर अंधेरी रात में ये अपनी पत्नी से मिलने उसके मायके पहुँच गये।

इनकी पत्नी ने इन्हें लौकिक प्रेम की नश्वरता पर कोसते हुए कहा–''लाज न आयी आपको दौरे आयहु साथ'' इससे उनके ज्ञान चक्षु खुल गए। इनका शेष जीवन तीर्थ–भ्रमण, सत्संग, कीर्तन और रामकथा में बीता।

आपकी रचनाओं में –'रामलला–नहछू', 'रामाज्ञा प्रश्नावली', 'जानकी मंगल', 'रामचरितमानस', 'बरवै रामायण', 'गीतावली', 'कवितावली', 'विनयपत्रिका', 'दोहावली' आदि प्रसिद्ध हैं। इनमें रामचरितमानस हिन्दी साहित्य का रत्न ग्रन्थ माना जाता है। विश्व की अनेक भाषाओं में इसका रूपान्तरण हो चुका है। तुलसी ब्रज और अवधी दोनों भाषाओं के साथ संस्कृत, अरबी, फारसी शब्द बनाने में सफल हैं।

मूल्यांकन के प्रश्न–

- तुलसीदास जी के जन्म के बारे में बताइए ?
- उनकी सुप्रसिद्ध रचना कौन सी है तथा उनके इष्टदेव कौन हैं ?
- उनकी अन्य रचनाओं का उल्लेख कीजिए ?
- उन्होंने अवधी भाषा में किस काव्य की रचना की है ?

राहुल सांकृत्यायन–कक्षा–5 'किन्नौर देश की ओर' एक यात्रावृत्तांत है। हिमालय से किन्नौर तक की पूरी यात्रा का वर्णन आपने इस पाठ में किया है।

राहुल जी का जन्म उ0प्र0 के आजमगढ़ जिले में सन् 1893 ई0 में हुआ था। आपके पिता पं0 गोवर्धन पाण्डेय कनेला ग्राम में रहते थे। आप कट्टर धमनिष्ठ ब्राह्मण थे। आपके बचपन का नाम केदारनाथ था। संकृति गोत्र होने के कारण आप सांकृत्यायन कहलाए। बौद्ध धर्म में आस्था होने के कारण आपने आना नाम बदलकर राहुल रख लिया। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा रानी की सराय निजामाबाद में हुई। आपने सन् 1907 ई में उर्दू में मिडिल पास किया। इसके बाद वाराणसी में संस्कृत की उच्च शिक्षा प्राप्त की। वहीं आपकी रूचि पालि–साहित्य में हो गयी और आपने पालि का गहन अध्ययन कर ज्ञान प्राप्त किया। आपके पिता की तीव्र इच्छा थी कि आप आगे भी पढ़ाई करें, परन्तु बौद्ध धर्म में आस्था हो जाने के कारण इनका मन पढ़ाई के बन्धन में नहीं रहना चाहता था। अपने नाना से दक्षिण भारत की यात्रा के अनुभव सुन आपकी घूमने की इच्छा बलवती हुई। तत्पश्चात् आपने अपने घुमक्कड़ स्वभाव के कारण भारत, एशिया, यूरोप, सोवियत और लंका की भूमि पर यात्रा किया। बाद में धुमक्कड़ों के निर्देशन के लिए आपने घुमक्कड़ शास्त्र लिख डाला। यहीं घुमक्कड़ी जीवन राहुल जी की पाठशाला और विश्वविद्यालय था। सन् 1963 ई0 को आपका निधन हो गया।

आपकी प्रमुख रचनाएँ–यात्रा साहित्य–'मेरी तिब्बत यात्रा', 'मेरी यूरोप यात्रा', 'लंका', 'मेरी लद्दाख यात्रा', 'रूस में पच्चीस मास', 'जापान', 'ईरान', 'घुमक्कड़ शास्त्र एवं मंगोलिया यात्रा वृत्तांत। कहानी संग्रह–'वोल्गा से गंगा', 'कनैला की कथा', 'सतमी के बच्चे', 'बहुरंगी मधुपरी' आदि। उपन्यास–'जय यौधेय', 'दिवोदास', 'सिंह सेनापति', 'विस्मृत यात्री', 'मधुर स्वप्न', 'सप्तसिन्धु' आदि। जीवनी–'महात्मा बुद्ध', 'कार्लमार्क्स', 'लैनिन', 'स्टालिन' आदि। आत्मकथा–'मेरी जीवन यात्रा', 'धर्म और दर्शन–'बौद्धदर्शन', 'दर्शन दिग्दर्शन', 'धम्मपद', 'मज्झिमनिकाय', 'बुद्धचर्या' आदि। विज्ञान–'विश्व की रूपरेखा'।

मूल्यांकन के प्रश्न–

- राहुल जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?
- उनके पिता का नाम और उनकी विशेषताओं के बारे में लिखिए ?
- 'घुमक्कड़ी प्रवृत्ति' से आप क्या समझते हैं ?
- इनकी रचनाओं के नाम लिखिए ?

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र–'अंधेर नगरी' रचना भारतेन्दु जी की नाटक का संक्षिप्त अंश एकांकी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जब राज्य में राजा अनुशासन नहीं रख पाता तो जीवन किन–किन परिस्थितियों से होकर गुजरता है इसका वर्णन है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक माने जाते हैं। आपका जन्म 1850 ई0 में काशी में हुआ था। आपके पिता बाबू गोपालचन्द्र 'गिरधरदास' के उपनाम से कविता करने वाले एक श्रेष्ठ कवि थे। पुत्र–पिता से एक कदम आगे ही रहता है। इस उक्ति को चरितार्थ करते हुए भारतेन्दु जी ने पाँच वर्ष की अल्पायु में ही काव्य–रचना कर सभी को विस्मित कर दिया। बाल्यावस्था में ही माता–पिता की छत्रछाया सिर से उठ जाने के कारण आपको उनकी वात्सल्यमयी छाया से वंचित रहना पड़ा। इसी कारण आपकी शिक्षा सुचारू रूप से न चल सकी। स्वाध्याय से ही आपने हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, फारसी, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं का गहन ज्ञान प्राप्त किया। 13 वर्ष की अल्पायु में आपका विवाह मन्नोदेवी के साथ हुआ। भारतेन्दु जी की रूचि साहित्यिक एवं सामाजिक कार्यों में बहुत थी। साहित्य और समाज की सेवा में आप तन–मन–धन से समर्पित थे। फलस्वरूप आपके ऊपर बहुत ऋण चढ़ गया। ऋण की चिंता से आपका शरीर क्षीण हो गया और सन् 1885 ई0 में पैंतीस वर्ष की अल्पायु में ही हिन्दी साहित्य का यह सूर्य सदा के लिए अस्त हो गया।

भारतेन्दु जी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं–

कविता संग्रह–'भक्त–सर्वस्व', 'प्रेम–सरोवर', 'प्रेमतरंग', 'सतसई–श्रृंगार', 'भारत–वीणा', 'प्रेम–प्रलाप', 'प्रेम–फुलवारी', 'बैजयन्ती' आदि।

नाटक–'विद्या–सुन्दर', 'रत्नावली', 'पाखण्ड–विडम्बना', 'धनंजय–विजय', 'कर्पूर–मंजरी', 'मुद्राराक्षस', 'भारत–जननी', 'वैदिकी हिंसा–हिंसा न भवति', 'सत्य हरिश्चन्द्र', 'श्री चन्द्रावली', 'विषस्य–विषमौषधम्', 'भारत–दुर्दशा', 'नीलदेवी', 'अंधेर–नगरी', 'सती–प्रताप', 'प्रेम जोगनी' आदि।

पत्र–पत्रिकाएँ–'हरिश्चन्द्र मैंगनीज', 'कवि–वचन–सुधा'।

इस प्रकार विविध विधाओं में सृजन करके और हिन्दी साहित्य को सौ से अधिक रचनाएँ समर्पित कर उसे और अधिक समृद्ध बनाया।

मूल्यांकन के प्रश्न–

- भारतेन्दु जी का जन्म कहाँ हुआ था ?
- भारतेन्दु जी किससे प्रभावित होकर कविता लिखते थे ?
- उनके बचपन की कुछ बातें बताइए ?
- उनकी रचनाओं के नाम लिखिए ?

सुभद्राकुमारी चौहान–'झाँसी की रानी की समाधि पर' सुभद्राकुमारी चौहान जी की प्रसिद्ध रचना है। आपने इस कविता के माध्यम से झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के शौर्य तथा वीरता का वर्णन किया है।

श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म सन् 1904 ई0 में इलाहाबाद जिले के निहालपुर गाँव में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा इलाहाबाद में ही हुई। अल्पायु में ही इनमें काव्य–प्रेम अंकुरित हुआ जो कालान्तर में पुष्पित एवं पल्पवित हुआ। 15 वर्ष की कम उम्र में ही इनका विवाह खंडवा (म0प्र0) निवासी ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान के साथ हुआ। विवाह के पश्चात कुछ समय तक इन्होंने वाराणसी में अध्ययन किया। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के विचारों से प्रभावित होकर इन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और देश–सेवा का व्रत लेकर असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाने लगीं। स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के कारण इन्हें जेल की यातनाएँ भी सहन करनी पड़ी। आप मध्य प्रदेश विधान सभा की विधायक भी रहीं। सन् 1948 ई0 में मोटर दुर्घटना में इनकी असामयिक मृत्यु हो गयी।

सुभद्रा जी का विलक्षण व्यक्तित्व आपकी रचनाओं में स्पष्ट झलकता है। आपकी कहानियाँ भी पाठकों को प्रभावित करने में पूर्णतया समर्थ हैं। आपकी काव्य–रचनाएँ हैं–'मुकुल', 'त्रिधारा' तथा कहानी संग्रह–'विखरे मोती', 'उन्मादिनी' आदि। आपकी कविताओं में भाव–जागृत करने की अपूर्व क्षमता है। आप राष्ट्रीय भावों को झकझोरने वाली प्रथम कवियित्री हैं। 'भारतमाता' सम्बन्धी आपके गीत प्रेरणादायक हैं। आपकी भाषा सरल, सुबोध और स्वाभावित है। आपकी भाषा आडम्बरहीन प्रसाद तथा ओज गुण से युक्त है। आपकी रचनाओं में रस का जैसे स्रोत फूट पड़ा हो। वात्सल्य, वीर एवं श्रृंगार का आधिक्य है। आप तन, मन से जीवनभर साहित्य सेवा में लगी रहीं। प्रत्येक दृष्टि से आपका स्थान गौरवपूर्ण है।

मूल्यांकन के प्रश्न–

- सुभद्राकुमारी चौहान जी का जन्म कहाँ हुआ था ?
- इनकी प्रसिद्ध राष्ट्रीय रचना कौन सी है ?
- इन्होंने किनके विचारों से प्रभावित होकर अपने को स्वतंत्रता आन्दोलन में लगाया ?
- सुभद्राकुमारी चौहान के प्रेरणादायक गीत कौन से हैं ?
- सुभद्राकुमारी चौहान की अन्य रचनाएँ कौन सी हैं ?

सुमित्रानन्दन पन्त–'चिर महान' कविता में ईश्वर से लोककल्याण और मानवता की सेवा करने की शक्ति प्राप्त करने के लिए प्रार्थना की है।

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानन्दन पंत का जन्म सन् 20 मई 1900 ई0 में अल्मोड़ा के कौसानी गाँव में हुआ था। जन्म के कुछ घंटो बाद ही माँ का निधन हो जाने के कारण दादी ने इनका लालन–पालन किया। सात वर्ष की आयु में चौथी कक्षा में पढ़ते हुए इन्होंने सर्वप्रथम छनद रचना की। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम की ही पाठशाला में हुई। जब ये उच्च कक्षा में पढ़ने के लिए अल्मोड़ा आए तब अपना नाम गुसाईदत्त से बदलकर, सुमित्रानन्दन पन्त रखा। जुलाई 1919 में इलाहाबाद आये और म्योर सेन्ट्रल कालेज में प्रवेश किया, लेकिन 1921 में महात्मा गांधी के आह्वान पर कालेज दोड़ दिया। अपने कोमल स्वभाव के कारण सत्याग्रह में सम्मिलित नहीं हुए और साहित्य साधना में संलग्न हो गये। सन् 1931 में कालाकॉकर चले गये। वहाँ मार्क्सवाद का अध्ययन किया और प्रयाग आकर प्रगतिशील विचारों की पत्रिका 'रूपामा' निकाली। सन् 1942 में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' से प्रेरित होकर 'लोकायतन

नामक, सांस्कृतिक पीठ' की योजना बनायी। इन्होंने सुप्रसिद्ध नर्तक उदयशंकर के साथ भारत–भ्रमण किया। भारत भ्रमण के दौरान इनका परिचय श्री अरविन्द से हुआ। ये उनके विचारों से बहुत प्रभावित हुए तथा काव्य–संकलन प्रकाशित किया यथा–'स्वर्णकिरण', 'स्वर्ण–धूल', 'उत्तरा' आदि। इनकी प्रारम्भिक रचना 'वीणा', 'ग्रन्थि', 'पल्लव', 'गुंजन' और 'चिदम्बरा' आदि में हम इन्हें प्रकृति के विभिन्न रूपों का अभिनन्दन करते हुए देखते हैं। इनकी साहित्यिक सेवा के लिए भारत सरकार द्वारा इन्हें 'पद्म–भूषण' सम्मान से विभूषित किया। पन्त जी का निधन 28 दिसम्बर सन् 1977 ई0 को हुआ।

मूल्यांकन के प्रश्न–

- सुमित्रानन्दन पंत का जन्म कहाँ हुआ था ?
- इनका लालन–पालन किसने किया ?
- आपका पहला नाम कौन सा था ?
- पन्त जी ने किस पत्रिका का सम्पादन किया ?
- पन्त जी को प्रकृति का सुकुमार कवि क्यों कहा जाता है ?
- पन्त जी की कौन–कौन सी रचनाएँ हैं ?

जयशंकर प्रसाद–प्रस्तुत कहानी 'छोटा जादूगर' में बालक की मात्रभूमि, उसकी व्यवहार कुशलता तथा कठिनाइयों से जूझने की क्षमता का सुन्दर चित्रण किया गया है।

जयशंकर प्रसाद आधुनिक हिन्दी–साहित्य की श्रेष्ठ प्रतिभा हैं। ये छायावाद के प्रवर्तक, उन्नायक तथा प्रतिनिधि कवि होने के साथ ही युग–प्रवर्तक, नाटककार एवं कहानीकार भी हैं।

प्रसाद जी का जन्म माघ शुक्ल दशमी संवत् 1946 को काशी में सुघनी साहू नाम से प्रसिद्ध वैश्य परिवार में हुआ था। परिवार जनों की मृत्यु, अर्थ–संकट, पत्नी–वियोग आदि संघर्षों को अत्यन्त जीवट से झेलता हुआ यह अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न युगस्त्रष्टा साहित्यकार हिन्दी के मंदिर में अपूर्व गन्धमय रचना सुमन अर्पित करता रहा। प्रसाद जी का दृष्टिकोण विशुद्ध मानवीय रहा है। उसमें आध्यात्मिक आनन्दवाद की प्रतिष्ठा है। ये जीवन की चिरन्तन मानवीय समाधान खोजना चाहते हैं। इच्छा, ज्ञान और क्रिया का सामंजस्य ही उच्च मानवता है। उसी की प्रतिष्ठा प्रसाद जी ने की है। 'कामायनी' के माध्यम से यही संदेश प्रसाद जी ने सम्पूर्ण मानवता को दिया है। 'चित्राधार' में ये प्रकृति की रमणीयता और माधूर्य पर मुग्ध हैं। 'प्रेम पथिक' में प्रकृति की पृष्ठभूमि में कवि–हृदय में मानव–सौन्दर्य के प्रति जिज्ञासा का भाव जागता है। 'आँसू' प्रसाद जी का उत्कृष्ट, गम्भीर, विशुद्ध मानवीय विरह काव्य है। 'कानन कुसुम' झरना, लहर, काव्य कृतियाँ एवं 'राज्यश्री', विशाख, जन्मेजय का नागयज्ञ, अजातशत्रु, चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, ध्रुवस्वामिनी आदि इनके उत्कृष्ट नाटक हैं। प्रसाद जी छायावादी कवि हैं। प्रेम और सौन्दर्य इनके काव्य का प्रधान विषय है। प्रसाद का रहस्यवाद साधनात्मक नही है। वह भावसौन्दर्य से संचालित प्रकृति का रहस्यवाद है। अनुभूति की तीव्रता, वेदना, कल्पना–प्रवणता आदि प्रसाद काव्य की कतिपय अन्य विशेषताएँ हैं। अलंकारों की दृष्टि से प्रसाद जी का काव्य अत्यन्त समृद्ध है। विविध छंदों का प्रयोग और नवीन छंदों की उद्भावना भी प्रसाद जी ने की है। वस्तुतः प्रसाद जी का साहित्य अनन्त वैभव सम्पन्न है। सन् 1994 वि0 में इनका रोग जर्जर–शरीर निष्प्राण होकर हिन्दी साहित्य के एक अध्याय का पटाक्षेप कर गया।

कक्षा–5 'विमल इन्दु की विशाल किरणें'

प्रस्तुत कविता में कवि जयशंकर प्रसाद जी ने ईश्वर की महिमा को विभिन्न रूपों में दिखलाकर उनकी वन्दना की है। उन्होंने चन्द्रमा, सागर, सागर की तरंगे, चन्द्रिका तथा नदियाँ को प्रतीक के रूप में लिया है। किसी भी काम की शुरूआत के पहले अपने इष्टदेव को याद किया जाता है।

मूल्यांकन के प्रश्न–

- जयशंकर प्रसाद जी का जन्म कब और किस परिवार में हुआ था ?
- उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना का नाम बताइए ?
- उनकी अन्य रचनाओं के नाम लिखिए ?
- उनकी साहित्यिक विशेषताएँ बताइए ?
- उन्हें छायावाद कवि क्यों कहा जाता है ?

पाठ–4 कबीर

कबीर के दोहों में (नीति संबंधी) आचार–विचार से संबंधित जीवन मूल्यों पर प्रकाश डाला गया है। कबीर के जन्म के संबंध में कबीर पंथियों में 'कबीर चरित्र बोध' ग्रन्थ के आधार पर यह उक्ति प्रचलित है–

''चौदह सौ पचपन साल गये, चन्द्रवार एक ठाट ठये।
जेठ सुदी बरसायत को, पूरनमासी प्रगट भए।।

विद्वानों ने संवत् 1455 विक्रमी को ही इनकी जन्मतिथि माना है। इनकी मृत्यु के संबंध में अनेक विवाद हैं, पर अधिकतर विद्वारों ने सं0 1551 माना है। कबीर के गुरु के संबंध में भी एक प्रवाद है। कबीर को उपयुक्त गुरु की तलाश थी, पर वैसा कोई व्यक्ति नहीं मिल रहा था। एक समय अंधेरे में कबीर गंगातट पर सोये हुए थे, उधर से स्वामी रामानन्द जी गंगा स्थान के लिए गुजरे और उनका पाँव इन पर पड़ गया। स्वामी रामानन्द जी राम–राम कह बैठे। बस तभी से कबीर ने रामानन्द को अपना गुरु मान लिया।

कबीर अपने युग के सबसे महान समाज सुधारक, प्रतिभा सम्पन्न एवं प्रभावशाली व्यक्ति थे। ये अनेक प्रकार के विरोधी संस्कारों में पले थे। नाथ सम्प्रदाय के योग मार्ग और हिनदुओं के वेदान्त और भक्ति मार्ग का इन पर गहरा प्रभाव था। वाह्याडंबर, कर्मकाण्ड और पूजापाठ की अपेक्षा कबीर नैतिक और सादे जीवन को अधिक महत्त्व देते थे। सत्य, अहिंसा, दया तथा संयम से युक्त धर्म के सामान्य स्वरूप में ही ये विश्वास करते थे। कबीर निर्गुण एवं निराकार ईश्वर के उपासक थे। 'मसि मागद छूयो नहीं' कहकर कबीर अपने को अनपढ़ होने की सूचना देते हैं। कबीर की भाषा में पंजाबी, राजस्थानी, अवधी आदि अनेक प्रान्तीय भाषाओं के शब्दों की खिचड़ी मिलती है। इसलिए इनकी भाषा को 'पंचमेल खिचड़ी' अथवा 'सधुक्कड़ी' भाषा कहा जाता है। इनकी रचनाएँ 'बीजक', साखी, सबद, रमैनी, कबीर ग्रन्थावली और कबीर 'वचनावली' है। हिन्दी के आलोचक और विद्वान इन्हें समाज सुधारक मानते हैं। पर कबीर के इस रूप में इनका युग–प्रवर्तक महाकवि का रूप भी छिपा हुआ है।

मूल्यांकन के प्रश्न–

- कबीरपंथियों के हिसाब से कबीर का जन्म कब हुआ था ?
- कबीरदास जी के गुरु का नाम बताइए ?

- कबीर जीवन में किन बातों को ज्यादा महत्त्व देते थे ?
- कबीर की भाषा 'खिचड़ी' क्यों कही जाती है ?
- कबीरदास की रचनाओं के नाम लिखिए ?

रहीम

'नीति के दोहे और भक्ति के पद' शीर्षक में नीति एवं भक्ति के पदों का विवेचन किया गया है। रहीम का पूरा नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था। इनका जन्म सन् 1556 ई0 के लगभग लाहौर नगर (अब पाकिस्तान) में हुआ था। ये अकबर के संरक्षक वैरम खाँ के पुत्र थे। रहीम अकबर के दरबार के नवरत्नों में से थे। ये अकबर के प्रधान सेनापति और मंत्री भी थे। वे वीर योद्धा थे और बड़े कौशल से सेना का संचालन करते थे। इनकी दानशीलता की अनेक कहानियाँ प्रचलित हैं। सन् 1627 ई0 में इनकी मृत्यु हो गयी।

अरबी, तुर्की, फारसी तथा संस्कृत के ये पंडित थे। हिन्दी काव्य के ये मर्मज्ञ थे और हिन्दी कवियों का बड़ा सम्मान करते थे। गोस्वामी तुलसीदास से भी इनका परिचय तथा स्नेह सम्बन्ध था। रहीम बड़े लोकप्रिय कवि थे। इनके नीति के दोहे तो सर्व साधारण की जिह्वा पर रहते हैं। इनके दोहों में कोरी नीति की नीरसता नहीं है। उनमें मार्मिकता तथा कवि–हृदय की सच्ची संवेदना भी मिलती है। दैनिक जीवन की अनुभूतियों पर आधारित दृष्टान्तों के माध्यम से इनका कथन सीधे हृदय पर चोट करता है। उनकी रचना में नीति के अतिरिक्त भक्ति तथा श्रृंगार की भी सुन्दर व्यंजना हुई है।

'रहीम सतसई', 'श्रृंगार सतसई', 'मदनाष्टक', 'रासपंचाध्यायी', 'रहीम रत्नावली' तथा 'वरवै नायिका भेद वर्णन' इनकी रचनाएँ हैं। इन्होंने फारसी भाषा में भी ग्रंथों की रचना की है। उनकी रचनाओं का पूर्ण संग्रह रहीम रत्नावली के नाम से प्रकाशित है। रहीम जन–साधारण में अपने दोहों के लिए प्रसिद्ध हैं, पर इन्होंने कवित्त, सवैया, सोरठा तथा बरवै छंदों में भी सफल काव्य रचना की है। रहीम का ब्रज और अवधी भाषाओं पर समान अधिकार था।

मूल्यांकन के प्रश्न–

- रहीम का जन्म कब हुआ था ?
- लाहौर कहाँ स्थित है ?
- रहीमदास किन–किन भाषाओं के जानकार थे ?
- रहीम किसके दरबार में रहते थे ?
- कवि रहीम ने किस भाषा में ग्रन्थों की रचना की है ?
- रहीम की अन्य रचनाओं के नाम लिखिए ?

मीराबाई

अपने पदों में मीराबाई ने श्रीकृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति तथा उनके दर्शन की उत्कृष्ट लालसा प्रकट की है।

मीराबाई का जन्म सन् 1498 ई0 के लगभग राजस्थान में भेड़ता के पास चोकड़ी ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम रतनसिंह था। उदयपुर के राणा साँगा के पुत्र भोजराज के साथ इनका विवाह

हुआ था। विवाह के कुछ ही समय बाद इनके पति की मृत्यु हो गयी। मीरा की मृत्यु सन् 1546 ई0 के आसपास मानी जाती है।

मीरा बचपन से ही कृष्ण भक्त थीं। गोपियों की भाँति मीरा माधुर्य भाव से कृष्ण की उपासना करती थीं। वे कृष्ण को ही अपना पति कहतीं थी और लोक–लाज खोकर कृष्ण के प्रेम में लीन रहती थीं। बचपन से ही ये अपना अधिक समय संत–महात्माओं के सत्संग में व्यतीत करती थीं। मन्दिर में जाकर अपने आराध्य की प्रतिमा के समक्ष ये आनन्द विह्वल होकर नृत्य करती थीं। इनका इस प्रकार का व्यवहार उदयपुर की राजमर्यादा के प्रतिकूल था। अतः परिवार के लोग इनसे रुष्ट रहते थे।
आपकी रचनाए हैं–'नरसी जी का मायराः 'रागगोविन्द' राग सोरठ में पद तथा गीत–गोविन्द की टीका आदि।

मीरा ने गीत काव्य की रचना की और कृष्ण भक्त कवियों की परम्परागत पद–शैली को भी अपनाया। मीरा के सभी पद संगीत से बँधे हुए हैं। इनके गीतों में इनकी आवेशपूर्ण आत्म–अभिव्यक्ति मिलती है। कृष्ण के प्रति आत्म–समर्पण की भावना, तन्मयता तथा प्रेमभाव की व्यंजना ही आपकी कविता का उद्देश्य रहा। जीवन भर कृष्ण की वियोगिनीं बनी रहीं। मीरा की काव्य–भाषा शुद्ध साहित्यिक ब्रज–भाषा के निकट है तथा उस पर राजस्थानी, गुजराती, पश्चिमी हिन्दी और पंजाबी का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। आपकी काव्य–भाषा अत्यन्त मधुर, सरस और प्रभावपूर्ण है।

मूल्यांकन के प्रश्न–

- मीराबाई का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?
- इनके पिता का क्या नाम था ?
- इनका विवाह किसके साथ हुआ था ?
- इनको कृष्ण की उपासिका क्यों कहा जाता है ?
- मीराबाई ने किस भाषा में रचना की है ?
- मीराबाई की रचना कौन सी है ?

महाश्वेता देवी

'क्यों–क्यों लड़की' पाठ में एक आदिवासी लड़की के विचारों में जिज्ञासा, जीवन संघर्ष तथा कार्य करने की लगन को रोचक संवाद शैली में महाश्वेता जी ने प्रस्तुत किया है।

महाश्वेता देवी का जन्म 14 जनवरी सन् 1926 ई0 को ढाका (बांग्लादेश) में हुआ था। उनकी आरम्भिक शिक्षा ढाका और कोलकाता में हुई। साहित्य के प्रति बचपन से आपका लगाव था। आपको स्कूल कालेज में शिक्षा पाने का अवसर नहीं मिला। पर घर में उपलब्ध पुस्तकों–पत्रिकाओं को पढ़ने की रोक नहीं थी। आशापूर्णा दी एक कट्टरपंथी परिवार से थीं, इसीलिए बाहरी जगत से उनका समीपी परिचय नहीं था, लेकिन घर के भीतर के पूरे जीवन को उन्होंने अपने साहित्य में मूर्त कर दिया। उन्होंने लगभग छह दशक तक स्त्री के तन व मन के दो धुवांतों के बीच उठनेवाले शाश्वत सवालों को बदलते सामाजिक पारिवारिक संदर्भों में जितनी प्रखरता से प्रस्तुत किया वह विलक्षण है। 'प्रथम प्रतिश्रुति' उनकी प्रसिद्ध कथात्रयी की पहली कड़ी है। बाद की कड़ियाँ हैं–'सुवर्णलता और 'बकुलकथा' आपके उपन्यास हैं–'झाँसी की रानी', 'अख्येर अधिकार', 'हजार चौरासी की माँ', 'चोटि्ट मुंडा और उसका तीर', 'अग्निगर्भ' 'अक्लांत कौरव', 'सूरज गहराई', और 'मास्टर साब'। उनकी रचनाओं की कथावस्तु में

आदिवासियों का जीवन–संघर्ष और उनकी पीड़ा है। महाश्वेता देवी की पहली कहानी 'पत्नी और प्रेयसी' सात दशक पहले 1937 में आनंद बाजार पत्रिका के शारदीया विषेषांक में छपी थी। महाश्वेता देवी को उनकी साहित्यिक और सामाजिक सेवाओं के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिनमें साहित्य अकादमी, ज्ञानपीठ मैग्सेसे आदि प्रमुख हैं।

मूल्यांकन के प्रश्न–

- महाश्वेता देवी का मूल निवास स्थान बताइए ?
- आपका जन्म कहाँ हुआ था ?
- महाश्वेता देवी का पारिवारिक जीवन कैसा था ?
- उनकी 'कथात्रयी' की रचनाओं का नाम लिखिए ?
- महाश्वेता देवी की अन्य रचनाओं के नाम लिखिए ?

मैथिलीशरण गुप्त

'माँ कह एक कहानी' प्रस्तुत कविता में यशोधरा अपने पुत्र राहुल को एक कहानी के द्वारा बुद्ध के दया और क्षमा जैसे गुणों के बारे में बताती हैं।

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म चिरगाँव जिला झाँसी में सन् 1886 ई0 में हुआ था। काव्य रचना की ओर बाल्यावस्था से इनका झुकाव था। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से इन्होंने हिन्दी काव्य की नवीन धारा को पुष्ट कर उसमें अपना विशिष्ट स्थान बना लिया था। इनकी कविता में देशभक्ति एवं राष्ट्रप्रेम की व्यंजना प्रमुख होने के कारण इन्हें हिन्दी संसार ने 'राष्ट्र–कवि' का सम्मान दिया। राष्ट्रपति ने इन्हें संसद सदस्य मनोनीत किया।

गुप्त जी आधुनिक युग के श्रेष्ठ कवियों में हैं। इनकी 'भारत–भारती' कविता में भावात्मक सरसता का अभाव पाया जाता है। छायावाद के आगमन के साथ गुप्त जी की कविता में लाक्षणिक वैचित्र्य और मनोभावों की सूक्ष्मता की मार्मिकता आयी। गुप्त जी का झुकाव भी गीति–काव्य की ओर हुआ। प्रबंध के भीतर ही गीति–काव्य का समावेश करके गुप्त जी ने भाव–सौन्दर्य के मार्मिक स्थलों से परिपूर्ण 'यशोधरा' और 'साकेत' जैसी उत्कृष्ट काव्य–कृतियों का सृजन किया।

गुप्त जी की रचना सम्पदा विशाल है। इनकी विशेष ख्याति रामचरित पर आधारित महाकाव्य 'साकेत' के कारण है। 'जयद्रथ–वध', 'भारत–भारती', 'अनध', 'पंचवटी', 'यशोधरा', 'द्वापर', 'सिद्धराज' आदि गुप्त जी की अन्य प्रसिद्ध काव्य कृतियाँ हैं।

इनकी कविता में आज की समस्याओं और विचारों के स्पष्ट दर्शन होते हैं। गांधीवाद तथा कहीं–कहीं आर्यसमाज का प्रभाव भी उन पर पड़ा है। इन्होंने अपनी कविता में लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग भी किया है। गुप्त जी युगीन चेतना और इसके विकसित होते हुए रूप के प्रति सजग थे। भारती का यह साधन सन् 1964 में गोलोकवासी हो गया।

मूल्यांकन के प्रश्न–

- मैथिलीशरण गुप्त का जन्म कहाँ हुआ था ?
- महावीर प्रसाद द्विवेदी से इन्हें क्या प्रेरणा मिली ?
- इन्हें राष्ट्रकवि क्यों कहते हैं ?

- इनके महाकाव्य का नाम लिखिए ?
- आपने अपनी कविताओं में किन–किन चीजों का प्रयोग अधिक किया है ?
- आपकी अन्य रचनाएँ कौन सी हैं ?

रामधारी सिंह दिनकर

'हिन्द महासागर में छोटा सा हिन्दूस्तान' पाठ में लेखक ने मारीशस के सौन्दर्य और वहाँ हिन्दी भारतीय संस्कृति का वर्णन किया हे। यह यात्रा–वृत्तांत विधा पर आधारित है।

राष्ट्रीय भावनाओं के ओजस्वी गायक कविवर रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया गाँव में 30 सितम्बर सन् 1908 को हुआ था। पटना कालेज से सन् 1933 में बी0ए0 किया और फिर एक स्कूल में अध्यापक हो गये। उसके बाद सीतामढ़ी में सब–रजिस्ट्रार बने। द्वितीय महायुद्ध में राजकीय प्रचार विभाग में आ गये। उन दिनों भारत में अंग्रेजों का शासन था और अंग्रेजी सरकार का कोई भी कर्मचारी उस सरकार के विरूद्ध कुछ नहीं कर सकता था। तो भी 'दिनकर' ने राजकीय सेवा के काल में भी स्वदेशानुराग की भावना से परिपूर्ण ओत–प्रोत, पीड़ितों के प्रति सहानुभूति की भावना से परिपूर्ण और क्रन्ति की भावना जगाने वाली रचनाएँ लिखीं।

'दिनकर' प्रारम्भ से ही लोक के प्रति निष्ठावान, सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति सजग और जनसाधारण के प्रति समर्पित कवि रहे हैं। इन्होंने छायावादी कवियों की भाँति काव्य रचना न करके 'रेणुका' का आलोक फैलाया। 'रसवन्ती' रचना के प्रणयी गायक के रूप में इनका कुसुम कोमल व्यक्तित्व प्रकट हुआ। लेकिन देश की विषम पुकार ने कवि को भावुकता, कल्पना और स्वप्न के रंगीन लोक से खींचकर उबड़–खाबड़ धरती पर लाकर खड़ा कर दिया तथा तथा शोषण की चक्की में पिसते हुए जनसाधारण और भूखे–नंगे बच्चों का प्रबल समर्थक बना दिया। फिर देश के मुक्ति राग के ओजस्वी गायक के रूप में इनका व्यक्तित्व निखर उठा। इन्होंने 'कुरूक्षेत्र', 'रश्मिरथी' काव्यों की रचना की। दिनकर की साधना निरन्तर जारी रही। सन् 1961 में इनका बहुचर्चित काव्य 'उर्वशी' प्रकाशित हुआ। इस रचना पर उन्हें एक लाख रूपये का ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। इनके 'नीम के पत्ते' संकलन में आज के राजनेताओं पर तीखे व्यंग्य हैं। इनका अन्तिम काव्य–संकलन 'हारे को हरिनाम' इनकी ऐसी ही करूण, निराश, दीन, आतुर आत्मा की विनयपत्रिका है। इनकी मृत्यु 24 अप्रैल सन् 1974 में हो गयी।

मूल्यांकन के प्रश्न–

- रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?
- उनके जीवन की घटनाओं का उल्लेख कीजिए।
- दिनकर जी की रचनाओं में कौन सी भावना उजागर होती है ?
- आपका कोमल व्यक्तित्व किस रचना में दिखाई देता है ?
- आपका बहुचर्चित काव्य कौन सा है ?
- आपको किस रचना पर पुरस्कार प्राप्त हुआ है ?
- दिनकर जी की अन्तिम काव्य रचना का नाम लिखिए ?

कक्षा–5

'काँटों में राह बनाते हैं' कविता के कवि श्री रामधारी सिंह दिनकर जी हैं। उनका मानना है कि विपत्ति या दुख कायरों को ही डराते हैं। जो विपत्ति में धैर्य धारण करते हैं उन्हें सूरमा की उपाधि दी गई है। काँटों को प्रतीक बनाकर उन्होंने जीवन पथ पर आने वाली कठिनाइयों, बाधाओं को पार करने की प्रेरणा इस कविता के माध्यम से दी है। जीवन में निरन्तर प्रयास करते रहना चाहिए।

प्रेमचन्द

'ईदगाह' के लेखक प्रेमचन्द ने बाल–मनोविज्ञान का सुन्दर चित्रण कहानी के माध्यम से करते हुए बालक हामिद के प्रति दादी के वात्सल्य को और दादी के प्रति हामिद के प्रगाढ़ प्रेम को दिखाया है।

प्रेमचन्द जी का जन्म 31 जुलाई सन् 1880 ई0 में लमही, वाराणसी में हुआ था। ये कहानी और उपन्यास सम्राट के रूप में प्रसिद्ध हैं। प्रेमचन्द का असली नाम धनपतराय था। वे उत्तर प्रदेश के एक सरकारी विद्यालय में शिक्षक थे। वे जाति के कायस्थ थे। कायस्थों को मुशी कहा जाता था। इसलिए वे 'मुंशी प्रेमचन्द' के नाम से प्रसिद्ध हुए। धनपतराय के पिता का नाम अजायब लाल था। वे डाकखाने में नौकरी करते थे। शुरू में धनपतराय (नवाबराय) के नाम से लिखते थे। उनकी पहली मौलिक कहानी थी–'दुनिया का सबसे अनमोल रत्न' यह एक देशभक्तिपूर्ण कहानी थी। ये कहानियाँ सन् 1908 में संग्रह रूप में 'सोजेवतन' के नाम से प्रकाशित हुई। प्रेमचन्द एक सफल अनुवादक भी थे। उन्होंने 'टालस्टाय से प्रभावित होकर 'टालस्टाय की कहानियाँ' नाम से उनकी कहानियों का अनुवाद किया। इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं–'सेवासदन', 'निर्मला', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि', 'गबन', 'गोदान', 'कायाकल्प'।
इनकी प्रमुख कहानियाँ हैं–'सप्तसरोज', 'नवनिधि', 'प्रेमपूर्णिया', 'प्रेम–पचीसी', 'प्रेम–प्रतिमा', 'प्रेम द्वादशी', 'समरयात्रा' मानसरोवर भाग 1–2, 'कफन' आदि।

वैसे तो प्रेमचंद के उपन्यासों और कहानियों में भारत के नगरों कस्बों और गाँवों के जीवन के विविध पहलुओं का चित्रण हुआ है, पर भारतीय किसानों का जीवन चित्रित करने में उन्हें असाधारण सफलता मिली है। इनका साहित्य समाज सुधार, राष्ट्रीय भावना और सामान्य जनजीवन से परिपूर्ण है। 8 अक्टूबर, सन् 1936 को आपका निधन हो गया।

मूल्यांकन के प्रश्न–

- प्रेमचन्द जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?
- आपको किस–किस विधा में 'सम्राट' की उपाधि प्राप्त है ?
- आप 'मुंशी प्रेमचन्द' कैसे बने ?
- शुरू में आप किस नाम से लिखते थे ?
- आपकी पहली मौलिक कहानी कौन सी है ?
- आप पश्चिम में किस कवि से प्रभावित थे ?
- प्रेमचन्द जी की अन्य उपन्यास और कहानियाँ कौन सी हैं ?

कक्षा–5

'पंच परमेश्वर' आपकी प्रसिद्ध कहानी है। इस पाठ में आपने जुम्मन शेख और अलगू चौधरी की प्रगाढ़ मित्रता दिखाकर गंगा–जमुनी तहजीब को बढ़ाया है। एक–एक घटना में जब दोनों को 'पंच

परमेश्वर' बनाया जाता है तो दोनों अपनी–अपनी जगह सिर्फ न्याय की भावना से निर्णय देते हैं, जबकि इस फैसले से दोस्ती में दरार आ सकती थी। लेकिन दोनों की मित्रता और प्रगाढ़ हो गयी। यह मित्रता की एक अद्‌भुत मिसाल है।

विष्णु प्रभाकर

कक्षा–6

विष्णु जी का जन्म 21 जून सन् 1912 ई0 को मुजफ्फरनगर जिले के मीरनपुर (मीरापुर) गाँव में हुआ। पंजाब विश्वविद्‌यालय से बी0ए0 और फिर हिन्दी प्रभाकर परीक्षा उत्तीर्ण की। यहीं से आपके नाम के साथ 'प्रभाकर' जुड़ गया। आप दिल्ली में रहते हुए विभिन्न महत्त्वपूर्ण संस्थाओं के सदस्य रहे। आकाशवाणी दिल्ली में ड्रामा प्रोड्‌यूसर और बालभारती के संपादक भी रहे। आपने उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, स्कैच और रिपोर्जात विधाओं में रचनाएँ की हैं। 'सीमा रेखा', 'पुस्तक–कीट' आदि आपके प्रमुख एकांकी हैं। 'आवारा मसीहा' आपकी बहुप्रशंसित रचना है।

'बहादुर बेटा' विष्णु प्रभाकर जी का लिखा हुआ एकांकी है। आपने इस एकांकी में पात्रों और संवादों के माध्यम से एक बहादुर बालक की बहादुरी का वर्णन किया है।

मूल्यांकन के प्रश्न–

- विष्णु जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?
- आपने कौन–कौन सी परीक्षा उत्तीर्ण की ?
- आपके नाम में प्रभाकर कब जुड़ा ?
- आप किस पत्रिका के सम्पादक रहे ?
- आपने किन–किन विधाओं में रचना की है ?

डॉ0 हरिकृष्ण देवसरे

'साप्ताहिक धमाका' के लेखक डॉ0 हरिकृष्ण देवसरे का जन्म 3 मार्च सन् 1940 ई0 को नागोद, सतना (म0प्र0) में हुआ। आपके शोध का शीर्षक 'हिन्दी बाल साहित्य' एक अध्ययन था। हिन्दी जगत में बाल साहित्य पर आधारित यह प्रथम शोध–प्रबन्ध है। आप सन् 1960 ई0 से सन् 1984 ई0 तक 'आकाशवाणी' में रहे। तदुपरान्त स्वैच्छिक अवकाश ग्रहण करके सन् 1984 ई0 से सन् 1991 ई0 तक 'पराग' मासिक बाल पत्रिका के सम्पादक के रूप में कार्य किया। आपने बच्चों के लिए 300 से अधिक पुस्तकें लिखीं हैं, इसके अतिरिक्त आपने समीक्षा, आलोचना और कई अंग्रेजी पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद भी किये हैं।

'साप्ताहिक धमाका' पाठ में लेखक ने बाल अखबार के महत्त्व और उपयोगिता का रोमांचकारी वर्णन बड़े ही रोचक ढंग से किया है।

मूल्यांकन के प्रश्न–

- डॉ0 हरिकृष्ण देवसरे का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?
- आपके शोध का शीर्षक क्या था ?
- आप किस सन् से किस सन् तक आकाशवाणी में रहे ?
- आपने किस बाल पत्रिका का सम्पादन किया ?

- आपने बच्चों के लिए कितनी पुस्तकें लिखी हैं ?
- आपने किन विधाओं में रचना की है ?

त्रिलोचन

हिन्दी के वयोवृद्ध कवि त्रिलोचन का आधुनिक प्रगतिशील कविता में विशिष्ट स्थान है। वे हिन्दी भाषा साहित्य एवं संस्कृत की अमूल्य निधि हैं। 20 अगस्त 1917 को सुल्तानपुर के चिरानीपट्टी, कटघरापट्टी में जन्में त्रिलोचन जी अपने संघर्षशील–सृजनशील जीवन साधना के 20 अगस्त 2006 90 वर्ष में प्रवेश कर गए हैं। धरती (1945 कविता संग्रह) के जीवित विश्वकोष कहे जाने वाले त्रिलोचन का पूरा जीवन ही साहित्य के जनधर्मी–जीवनधर्मी मूल्यों को समर्पित रहा है। 'धरती' (1945) से, 'मेरा घर' (2002) तक के लंबे सफर में 'गुलाब और बुलबुल', 'दिगन्त', 'ताप के ताए हुए दिन', 'शब्द', 'उस जनपद का कवि हूँ', 'अरधान', 'तुम्हें सौंपता हूँ' जैसी काव्यकृतियों ने हिन्दी कविता के आकाश को विस्तारित किया है। हमारे कोश के कलेवर को बढ़ाया है। इस विपुल रचना संसार में वे हमेशा गतिशील रहे। इस गतिशीलता में उनका अपार जीवनानुभव शामिल है। आपकी भाषिक चेतना हिन्दी कविता के कोश को व्यापकता प्रदान करती है। तत्सम, तद्भव, देशी, ढेठपन, गाँव–जवार–सिवान की बोली–भाषा के प्रति आप बेहद सजग हैं। 'तुलसी बाबा' भाषा मैने तुझसे सीखी मेरी सजग चेतना में तुम रमे हुए हो। 'गालिब गैर नहीं है, अपनों से अपने हैं।' बताने वाले त्रिलोचन लंबी–लंबी दूरियाँ तय करने वाले, गली–गली भटकने वाले पैदलमार्गी कवि रहे हैं। रेल–पटरियों के सहारे पैदल चलकर किशोरवय में दिल्ली पहुँचे थे। कभी यहाँ कभी वहाँ चलते रहने का नाम है त्रिलोचन।

'महल खड़ा करने की इच्छा है शब्दों का
जिसमें सब रह सकें, रम सकें।'

'बादल चले गये वे' हिन्दी के बयोवृद्ध कवि त्रिलोचन जी की रचना है। प्रस्तुत कविता में बादल के माध्यम से कवि ने सुख और दुख की बात कही है, जैसे बादल आते हैं और जाते हैं, वैसे ही सुख–दुःख भी जीवन में आते हैं और चले जाते हैं।

मूल्यांकन के प्रश्न–

- त्रिलोचन जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?
- आपको धरती का विश्वकोश क्यों कहा जाता है ?
- आपकी भाषिक चेतना कैसी थी ?
- त्रिलोचन जी की कुछ विशेषताएँ बताइए ?
- उनकी रचनाएँ कौन–कौन सी हैं ?

भवानीप्रसाद मिश्र

भवानीप्रसाद मिश्र प्रयोगशील एवं नयी कविता के बड़े सशक्त कवि हैं। आपकी रचनाओं में (1914) ऐसी नवीनता अम्लानता और सरलता पायी जाती है, जो आज के किसी दूसरे कवि में दृष्टिगोचर नहीं होती। विषय का चयन और वर्णन करने का ढंग उनका अपना है। जीवन में जो कुछ स्वस्थ है, मंगलदायक है, आह्लादकारी है, उसे उभारने एवं प्रचारित प्रसारित करने के लिए ही इन्होंने काव्य को साधन बनाया है। प्रारम्भ में आपकी ख्याति 'गीत फरोश' शीर्षक कविता के कारण अचानक हुई। आप प्रकृति के बड़े प्रेमी हैं। प्रकृति के साथ आपने कुछ ऐसी गहरी आत्मीयता स्थापित कर ली है

कि ये उसे स्थान–स्थान पर सम्बोधित करते पाये जाते हैं। मध्यप्रदेश आपकी रचनाओं में सोते से जाग उठा है। विन्ध्याचल, नर्मदा और रेवा आपकी साँसों में बसते हैं। आपकी कविताएँ जीवन के प्रेम की कविताएँ हैं, जीवन के संघर्ष की कविताएँ हैं, जीवन के आनन्द की कविताएँ हैं। सुख ढूढ़ने से सुख मिलता है और दुःख ढूढ़ने से दुःख यह बात आपने अपनी रचनाओं में हजार तरह से समझाई है। इस प्रकार आपकी रचनाओं में प्राणों की पूरी उठाना, जीवन की पूरी गम्भीरता और प्रसन्नता तथा अभिव्यक्ति सहज भाव से लिखते हैं जैसे किसी से बात कर रहे हों।

जी, हाँ हूजूर, मैं गीत बेचता हूँ।
मैं तरह–तरह के गीत बेचता हूँ,
मैं किसिम–किसिम के गीत बेचता हूँ।

'प्राणी वही प्राणी है' कविता भवानीप्रसाद मिश्र द्वारा रचित रचना है। इस कविता में आपने मनुष्य के परोपकारी जीवन का चित्र प्रस्तुत किया है।

मूल्यांकन के प्रश्न–

- भवानीप्रसाद मिश्र जी ने अपनी कविता के माध्यम से क्या बताना चाहा है ?
- किस कविता ने आपको प्रसिद्धि दिलाई ?
- आपको प्रकृति प्रेमी क्यों कहा जाता है ?
- आपकी कविताओं की क्या–क्या विशेषताएँ हैं, लिखिए।
- आप उनकी कौन सी कविता पढ़ते हैं, नाम लिखिए ?

डॉ0 भगवतशरण उपाध्याय

'लोकगीत' पाठ के लेखक ने लोकगीतों तथा लोकनृत्यों के सांस्कृतिक महत्त्व पर प्रकाश डाला है। डॉ0 भगवतशरण उपाध्याय का जन्म सन् 1910 में बलिया जिले में उजियारीपुर में हुआ था। पुरातत्व, संस्कृति और साहित्य में आपकी विशेष रूचि थी। आपने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से प्राचीन इतिहास विषय में एम0ए0 किया। आप पुरातत्व विभाग प्रयोग संग्रहालय एवं लखनऊ संग्रहालय के अध्यक्ष रहे। आपने पिलानी में बिड़ला विश्वविद्यालय में प्राध्यापक पद पर कार्य किया। आपने विक्रम विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग में प्रोफेसर एवं अध्यक्ष के पद पर भी कार्य किया। उपाध्याय जी ने कई बार यूरोप, अमरीका, चीन आदि का भी भ्रमण किया जहाँ आपने भारतीय संस्कृति एवं साहित्य पर बहुत से महत्त्वपूर्ण व्याख्यान दिए। आप अपने मौलिक एवं स्वतंत्र विचारों के लिए प्रसिद्ध हैं। आपने हिन्दी और अंग्रेजी में सौ से अधिक पुस्तकों की रचना की है। आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं–'विश्व साहित्य की रूपरेखा', 'साहित्य और कला', 'खून के छींटे', 'इतिहास के पन्नों पर', 'बुर्जियों के पीछे', 'इतिहास साक्षी है', 'ठूँठा आम', 'सागर की लहरों पर', 'विश्व को एशिया की देन', 'कलकत्ता से पीकिंग', 'मंदिर और भवन', 'कालिदास और उनका युग' आदि। अंग्रेजी में लिखीं आपकी पुस्तकें विदेशों में बड़ी रूचि के साथ पढ़ी जाती हैं। आपकी शैली भावुकतापूर्ण और अलंकृत है। आपका निधन सन् 1982 ई0 में हुआ। प्रस्तुत पाठ में लेखक ने संसार के नवनिर्माण में मजदूर की महत्त्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालते हुए उसके सुख–दुःख और पीड़ा का एक अवपूर्ण चित्र खींचा है। लोकगीत के कई प्रकार हैं, जैसे–चैता, कजरी, बारहमासा, दादरा, ठुमरी इत्यादि। भोजपुरी में विदेशिया, दूसरे लोकप्रिय गाने

आल्हा, पहाड़ी प्रदेशों के गीत, भील–संथालों के गीत, जिसमें मूक्ति और नृत्य साथ–साथ चलते हैं, का उल्लेख किया गया है।

मूल्यांकन के प्रश्न–

- डॉ0 भगवतशरण उपाध्याय जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?
- उनकी रूचि किन–किन विषयों में थी ?
- आपने किन–किन पदों पर कार्य किया ?
- आपने विदेशों में कहा–कहाँ भ्रमण किया ?
- आपकी रचना कौन–कौन सी है ?
- आपकी भाषा–शैली कैसी है ?

सुदर्शन

प्रेमचन्दयुगीन कहानीकारों में 'सुदर्शन' को विशेष ख्याति प्राप्त हुई। उनका वास्तवित नाम बद्रीनाथ भट्ट था। सुदर्शन उपनाम से वे साहित्यसाधना करते थे। इनका जन्म पंजाब स्थित सियालकोट में संवत् 1953 वि0 में हुआ था। आरम्भिक शिक्षा उर्दू माध्यम से हुई। कुछ अध्ययन के बाद अंग्रेजी की पढ़ाई आरम्भ की और बी0ए0 तक की शिक्षा प्राप्त की। जब ये कक्षा–6 में पढ़ते थे, तभी इन्होंने पहली कहानी रची। इसके बाद उर्दू में कई कहानियाँ लिखीं। इस क्षेत्र में उन्हें पर्याप्त प्रतिष्ठा मिली। बाद में हिन्दी कहानियाँ लिखने लगे। संवत् 1977 में उनकी पहली कहानी 'सरस्वती' में प्रकाशित हुई।

उन्होंने साहित्यिक कहानियों के अतिरिक्त चित्रपट के लिए भी कहानियाँ लिखीं। 'सिकन्दर' और 'पत्थर का सौदागर' नामक फिल्मों की कथावस्तु और उसके संवाद आपने ही लिखे थे। सुदर्शन जी की प्रतिभा का चमत्कार कहानी साहित्य में देखने को मिलता है। उन्होंने उपन्यास, नाटक, जीवनी, बाल साहित्य, धार्मिक साहित्य, गीत आदि भी लिखे हैं। 12 अप्रैल 1978 ई0 को उनका निधन हो गया।

रचनाएँ–

1–कहानी–संग्रह–पुष्पलता, सुप्रभात, परिवर्तन, सुदर्शन–सुधा, तीर्थयात्रा, सुहराब और रूस्तम, सात कहानियाँ, सुदर्शन–सुमन, गल्प मंजरी, चार कहानियाँ, पनघट, नगीना।

2–उपन्यास–भगवन्ती, प्रेम पुजारित

3–नाटक–दयानन्द, अंजना, आनरेरी मजिस्ट्रेट, सिकन्दर, धूपछाँह, भाग्यचक्र, छाया।

4–जीवनी–आंजनेय, धर्मवीर–दयानन्द, गांधी बाबा।

5–बाल साहित्य–फूलवती, विज्ञान–वाटिका, अंगूठी का मुकदमा, राजकुमार सागर, बच्चों का हितोपदेश।

6–धार्मिक साहित्य–पर्वोत्सव विवरण।

7–गीत संग्रह–झंकार, दिल के तार।

8–अनुवाद–विद्रोही आत्माएँ।

सुदर्शन जी आदर्शोन्मुख–यथार्थवादी कलाकार थे। उनके कथा साहित्य में समाज की वर्तमान समस्याओं को कथावस्तु के रूप में स्वीकार किया गया है। वर्तमान समस्याओं को प्रस्तुत करते हुए उसके हल का संकेत देना उनकी कला की विशेषता रही है।

सुदर्शन ने कहानीकार के रूप में प्रेमचन्द की कला का अनुगमन किया है। किन्तु उनसे थोड़ा भिन्न मार्ग अपनाया है। उन्होंने अपनी कहानियों में पहले आदर्श निश्चित किया है और बाद में उस आदर्श के अनुरूप पात्रों और घटनाओं को समाज से चुना है जबकि प्रेमचन्द और कौशिक जी ने यथार्थ की भूमि पर आदर्श को प्रतिष्ठित किया है। सुदर्शन जी की कहानियों में सत्य की व्यंजना अधिक है। वातावरण के चित्रण में उन्हें अभूतपूर्व सफलता मिली है।

कहानियों में शैली की भिन्नता है। अधिकांश कहानियाँ अन्य प्ररुषात्मक शैली में लिखित हैं किन्तु 'प्रताप के पत्र', 'बलिदान' आदि में शैली बदली है। ये पत्र शैली में है।

उपन्यासकार और नाटककार रूप में भी वे सफल थे। नाटक में उन्होंने इतिहास और पुराण की प्रख्यात कथाओं को कथावस्तु रूप में स्वीकार किया है।

सुदर्शन जी की भाषा व्यावहारिक थी। संस्कृत के तत्सम शब्दों की स्वीकृति के साथ ही उन्होंने नित्यप्रति के व्यवहार में आने वाले उर्दू के शब्दों का भी खुलकर प्रयोग किया है। उदाहरण तथा मुहावरों से उनकी भाषा आकर्षक हो उठी है।

उनकी भाषा में प्रमुखतः दो शैलियों का प्रयोग हुआ है–साधारण बोलचाल की भाषा, अलंकृत शैली की भाषा। विषय प्रतिपादन हेतु इनमें परिवर्तन भी होते गये हैं। सत्य के उद्घाटन के समय विचारात्मक पात्रों के मनोभावों और प्रेमानुभूतियों के कथन के लिए भावात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

सुदर्शन जी के गद्य साहित्य पर विचार के पश्चात् कहा जा सकता है कि प्रेमचन्द जी के बाद कहानी क्षेत्र में प्रतिष्ठा अर्जित करने वाले कलाकारों में सुदर्शन का नाम प्रथम पंक्ति में आता है। उनके कथा–साहित्य से हिन्दी–साहित्य की श्रीवृद्धि हुई है।

हार की जीत (कहानी)

किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जितनी खुशी प्राप्त होती है, उतनी ही खुशी बाबा भारती को अपने घोड़े 'सुल्तान' को देखकर होती थी। डाकू खड़गसिंह की नजर उस घोड़े पर थी। एक दिन वह साधु वेष में आकर बाबा भारती से धोखे से उनका घोड़ा ले जाता है। बाबा भारती ने डाकू से इतना ही कहा कि इसकी चर्चा किसी से मत करना, वरना लोगों का गरीबों पर से विश्वास उठ जायेगा। यह बात डाकू को बदल देती है तथा वह रात के अन्तिम पहर में घोड़े को अस्तबल में छोड़कर चला गया। सुल्तान को देखकर बाबा भारती बहुत प्रसन्न होते हैं।

मूल्यांकन के प्रश्न–

- बद्रीनाथ भट्ट का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?
- उनका उपनाम बताइए।
- उन्होंने किन–किन विधाओं में रचना की थी ?
- उनकी रचनाओं के नाम लिखिए।
- उनकी भाषा–शैली कैसी थी ?

मंजरी (हिन्दी की पाठ्यपुस्तक) कक्षा–7

जयशंकर प्रसाद–जयशंकर द्वारा रचित 'जागो जीवन के प्रभात' नामक कविता एक जागरण गीत है। इस कविता में कवि ने अज्ञान और अंधकार को मिटाकर कार्य करने की प्रेरणा दी है। इस कविता को पुस्तक के प्रथम पाठ में रखा गया है, बच्चों में उत्साह भरने एवं जीवन में नयी आशा का संचार करने के उद्देश्य से इसे पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित किया गया है।

छायावाद काव्य के जनक और पोषक जयशंकर प्रसाद जी आधुनिक काव्यधारा का गौरवमय प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रसाद जी ने कविता विषय का सबसे प्रथम विस्तार किया, कल्पना और सौन्दर्य के नए स्पर्श का अनुभव कराया। उन्होंने रीतिकाल की अफीमची श्रृंगारिकता से कविता कामिनी को निकाला एवं द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मक नीरसता के शुष्क रेगिस्तान में मधुर रसधारा उत्पन्न की। प्रसाद जी की कोमल कल्पना ने प्रेम के स्वरूप को उपस्थित करते हुए मधुर और कोमल भावनाओं से कविता–कामिनी का श्रृंगार किया। वे हिन्दी के महान कवि, नाटककार, निबन्धकार आदि के रूप में युगप्रवर्तक साहित्यकार थे।

जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी के प्रसिद्ध वैश्य परिवार में सन् 1889 ई0 को हुआ था। इनका परिवार सुंघनी–साहू के नाम से प्रसिद्ध था। प्रसाद जी के पिता देवी प्रसाद स्वयं साहित्यप्रेमी व्यक्ति थे। कहा जाता है कि प्रसाद जी के घर पर अद्भुत लोगों का जमावड़ा होता था। कभी कोई कवि आ रहे हैं तो कभी कोई गवैया। कोई वैद्य कोई संस्कृत पण्डित। अनेक तरह के चरित्र वहाँ आते और अनेक तरह के किस्से सुनने को मिलते। सबके व्यवहार और हावभाव का अध्ययन प्रतिभाशाली किशोर जयशंकर प्रसाद करते रहते। इस प्रकार जन्म से ही इनको साहित्यिक वातावरण प्राप्त हुआ था। कहा जाता है कि एक बार कवि के प्रारम्भिक अध्यापक स्व0 मोहिनी लाल 'रसमय सिद्ध' ने उनको एक समस्या दी और उसकी पूर्ति करने के लिए कहा। मात्र नौ वर्ष के प्रसादजी ने इतने चमत्कारिक छन्द रच कर दे दिया।

इनकी प्रारम्भिक स्कूली शिक्षा तो कक्षा–8 तक ही हुई थी किन्तु घर पर रहकर इन्होंने अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत आदि भाषाओं का गहन अध्ययन किया। बाल्यावस्था में प्रसादजी ने अपने माता–पिता के साथ देश के विभिन्न तीर्थ स्थानों की यात्रा की। अमरकंटक पर्वत श्रेणियों के बीच नर्मदा में नाव के द्वारा यात्रा की। यहाँ से लौटने के बाद इनके पिताजी का देहान्त हो गया और उसके चार वर्ष बाद माता का साया भी सिर से उठ गया। बड़े भाई शम्भूनाथ जी ने आपके शिक्षा–दीक्षा की अच्छी व्यवस्था की। मात्र 17 वर्ष की अवस्था में भाई भी परलोक सिधार गये। संकट के बादलों ने घेर लिया किन्तु प्रसाद जी का काव्य सृजन अनवरत चलता रहा। सन् 1909 ई0 में प्रसाद जी ने 'इन्दु' नामक मासिक पत्र निकाला जो 1926 तक चला, किन्तु माता–पिता, बड़े भाई, तीन पत्नियों की मृत्यु और व्यापार के घाटे ने आपको क्षीणकाय कर दिया। संयमित जीवन यक्ष्मा जैसे असाध्य (तब) रोग से ग्रसित हो गया और 15 नवम्बर सन् 1937 ई0 को आप इस संसार से विदा लेकर हिन्दी साहित्य को रिक्त कर गये।

'इन्दु' मासिक पत्र जिसका सम्पादन प्रसाद जी के भानजे अम्बिका प्रसाद गुप्त करते थे, के माध्यम से प्रसाद जी की अनेक कविताएँ, कहानियाँ, लेख प्रकाशित हुए। प्रसाद जी ने 'इन्दु' की पहले अंक में ही स्वच्छन्तावाद का विगुल पूर्व के काव्याचार्यों के सिद्धान्तों का खण्डन कर फूँका। उन्होंने लिखा–साहित्य का कोई लक्ष्य विशेष नहीं होता और उसके लिए कोई विधि का निबन्धन नहीं है क्योंकि साहित्य स्वतंत्र प्रकृति सर्वतोगामी प्रतिभा के प्रकाशन का परिणाम है, वह किसी की परतंत्रता को सहन

नहीं कर सकता। संसार में जो कुछ सत्य और सुन्दर है, वही साहित्य का विषय है। साहित्य केवल सत्य और सौन्दर्य की चर्चा करके सत्य को प्रतिष्ठित और सौन्दर्य को पूर्णरूप से विकसित करता है, आनन्दमय, हृदय के अनुशीलन में और स्वतंत्र आलोचना में उसकी सत्ता देखी जाती है।

रचनाएँ–प्रसाद जी महान् कवि, श्रेष्ठ निबन्धकार, कहानीकार, सफल नाटककार और उपन्यासकार थे। उनकी रचनाएँ निम्नवत् हैं–

1–नाटक–चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, अजातशत्रु, ध्रुवस्वामिनी, विशाख, राज्यश्री, कामना, जनमेजय का नागयज्ञ, करुणालय एवं एक घूँट आदि। इनमं अधिकांश नाटक ऐतिहासिक हैं। मानव चरित्र के मनोवैज्ञानिक चित्रण के साथ–साथ भारतीय एवं पाश्चात्य नाट्यकला का सुन्दर समन्वय किया गया है।

2–कहानी संग्रह–प्रतिध्वनि, छाया, इन्द्रजाल एवं आकाशदीप आपके प्रमुख कहानी–संग्रह हैं। इनकी कहानियों में मानव–मूल्यों एवं भावनाओं का काव्यमय चित्रण किया गया है।

3–काव्य–लहर, झरना, आँसू और कामायनी।

4–उपन्यास–कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण)।

5–निबन्ध–संग्रह–'काव्यकला तथा अन्य निबंध' इनमें प्रसाद जी का गंभीर चिन्तन एवं साहित्य संबंधी स्वस्थ दृष्टिकोण प्रतिबिम्बित हुआ है।

प्रसाद जी संस्कृत भाषा के भी बहुत अच्छे ज्ञाता थे, अतः भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग हुआ है। भावों और विचारों के अनुसार भाषा का स्वरूप विषयवस्तु के आधार पर ही गठित हुआ है जिसके कारण उसमें विविधता दृष्टिगोचर होती है। आपकी भाषा का एक उदाहरण–''रोहतास दुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी हुई युवती ममता, शोण के तीक्ष्ण गंभीर प्रवाह को देख रही है। ममता विधवा थी। उसका यौवन शोण के समान ही उमड़ रहा था।''

प्रसाद जी का काव्य अनुभूतिप्रधान है। अभिव्यक्ति का निखार भी देखने योग्य है। उन्होंने प्रकृति के रौद्र और सौम्य दोनों रूपों का प्रयोग किया है। उनका काव्य, काव्यकला की सच्ची अभिव्यक्ति है।

मूल्यांकन–

- प्रसाद जी ने कौन सा मासिक पत्र निकाला, उसके माध्यम से उन्होंने क्या कहा?
- प्रसाद जी के काव्य की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'–मंजरी कक्षा–7 के पाठ–3 में सूर्यकान्त त्रिपाठी जी की 'भिक्षुक' शीर्षक कविता रखी गयी है। इस कविता में आर्तजनों के प्रति कवि के हृदय में स्थित संवेदनशीलता दिखाई देती है। कवि ने भिखारी व्यक्ति के माध्यम से देश में गरीब जनों की पीड़ा का सचित्र वर्णन किया है। पाठ्यपुस्तक में इस कविता को रखने के पीछे उद्देश्य है– बच्चों को समाज के पीड़ित, दुःखी, दीन–हीन जन के प्रति संवेदनशील बनाना। यह कहानी कवि के 'परिमल' काव्य संग्रह से ली गयी है।

सूर्यकान्त त्रिपाठी जी का जन्म सन् 1897 ई0 में बंगाल के मिदिनीपुर जिले के महिषादल में हुआ था। इनका मूल पैतृक निवास गढ़ाकोला (उन्नाव) में था। इनकी शिक्षा बंगला भाषा के माध्यम से हुई, किन्तु संस्कृत और अंग्रेजी का भी अध्ययन इन्होंने किया। 14 वर्ष की अवस्था में उनका विवाह मनोहरा देवी से हुआ। पत्नी के हिन्दी ज्ञान से प्रभावित होकर उन्होंने स्वयं हिन्दी में पांडित्य प्राप्त किया। माता की मृत्यु तो बाल्यावस्था में ही हो चुकी थी। पिता और कुछ वर्षों बाद पत्नी की मृत्यु हो गयी। इनकी दो सन्तानें थीं–एक पुत्र और एक पुत्री। पुत्री सरोज का भी विवाह के एक वर्ष बाद ही स्वर्गवास हो

गया। उसकी स्मृति में ही कवि ने 'सरोजस्मृति' शीर्षक कविता की रचना की। लगातार लगे आघातों से 'निराला' जी विरक्त हो उठे, किन्तु उनकी विरक्ति में भी आशा बराबर बनी रही। उन पर भारतीय दर्शन का प्रभाव था। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के प्रोत्साहन से इन्होंने बैलूर से निकलने वाले 'समन्वय' नामक पत्र का सम्पादन प्रारम्भ किया। बाद में वे कलकत्ता से प्रकाशित 'मतवाला' के सहकारी संपादक हो गये। उनका बाद का जीवन इलाहाबाद के दारागंज मुहल्ले में व्यतीत हुआ। यहीं 15 अक्टूबर सन् 1961 को उनका स्वर्गवास हो गया।

निराला जी को घुड़सवारी, बंदूक चलाने, कुश्ती लड़ने में रुचि थी। संगीत का भी अच्छा ज्ञान था। उनका व्यक्तित्व अक्खड़ किन्तु दयालु और दानी था। बेटा कह देने पर एक भीख माँगने वाली बुढ़िया को पर्याप्त रूपया दे देना जैसी अनेक घटनाएँ उनके जीवन में घटी थीं।

रचनाएँ–

काव्य–अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, हलाहल, बेला, अणिमा, नये पत्ते, अपरा, अर्चना, आराधना, गीत–गुंज आदि। 'बिल्लेपुर बकरिहा', 'प्रभावती' और 'निरूपमा' उनकी प्रसिद्ध गद्य रचनाएँ हैं। उनकी रचनाओं पर स्वामी रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक विचारों का प्रभाव दिखता है। अपनी प्रार्थनात्मक कविताओं में निराला जी ने अदृश्य सत्ता के प्रति अपने भावों की व्यंजना की है। 'जीवन खेवनहार' का संबोधन उसी अदृश्य सत्ता के लिए उन्होंने किया है। उन्होंने जगत में सर्वत्र एक अभेद भाव का दर्शन किया है। उनकी गीतात्मक कविताओं में यह अभेद भाव ध्वनित है। उनकी दार्शनिक कविताओं में आध्यात्मिक और प्राकृतिक दोनों ही प्रकार के रहस्यवादों की पुष्टि हुई है।

मूल्यांकन–

- 'निराला' जी की कविताओं के नाम लिखिए।
- 'सरोज स्मृति' की क्या विशेषता है?

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचना को 'निजभाषा उन्नति' नाम से पाठ–5 में रखा गया है। इस पाठ में अपनी भाषा के महत्त्व से सम्बन्धित दोहों को एवं 'घर की फूट बुरी' शीर्षक से कवि के कुछ पदों को समाहित किया गया है। पाठ को रखने के पीछे उद्देश्य है बच्चों में स्वाभिमान और देशप्रेम की भावना का विकास करना और इसके लिए अपनी मातृभाषा के विकास के लिए प्रेरित करना। साथ ही राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के लिए परस्पर मिलजुलकर रहने का संदेश देना भी पाठ का उद्देश्य है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी का जन्म सन् 1850 ई0 में काशी में हुआ था। इनके पिता बाबू गोपालचन्द्र जी भी कवि थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने निबन्ध, नाटक, कविता आदि की रचना की। वे आधुनिक काल के जन्मदाता कहे जाते हैं। पाँच वर्ष की अवस्था में इनकी माता का निधन हो गया और दस वर्ष की अवस्था में पिता का। अतः विद्यालय से अध्ययन छूट गया। घर पर ही रहकर उन्होंने मराठी, गुजराती, बँगला, उर्दू, अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। पाँच वर्ष की अवस्था में इन्होंने एक दोहा अपने पिता को सुनाया, जिसे सुनकर उन्होंने उनको सुकवि होने का आशीर्वाद दिया। 13 वर्ष की अवस्था में उनका विवाह लाला गुलाबराय की कन्या से हुआ। उनके छोटे भाई का नाम गोकुलचन्द्र था। भारतेन्दु बाबू की दानशीलता से सम्पत्ति की क्षति होते देख पत्नी ने

गोकुलचन्द्र से बँटवारा कराने को कहा। बँटवारे में पिता की पुस्तकों को भारतेन्दु जी ने माँगा, शेष सम्पत्ति उन्होंने गोकुलचन्द्र को दे दी।

भारतेन्दु जी बड़े भावुक थे। स्वदेश–प्रेमी होने के कारण उन्होंने विविध पत्र–पत्रिकाओं का संपादन और संस्थाओं का संस्थापन भी किया। वाराणसी स्थित 'हरिश्चन्द्र' विद्यालय की स्थापना उन्होंने ही की थी। उनकी सेवाओं के कारण ही भारतीयों ने उन्हें 'भारतेन्दु' की उपाधि दी। समाज के बीच से अंधविश्वास, कुरीतियों तथा बुराइयों को हटाने के लिए उन्होंने काव्यग्रन्थ लिखे, नाटक–कम्पनी खोलकर लोगों के नाटक दिखाया और 35 वर्ष की अल्पायु में सन् 1885 ई0 में इनकी मृत्यु हो गयी।

रचनाएँ–उन्होंने छोटी–बड़ी सब मिलाकर 175 कृतियों की रचना की। यह उनकी प्रतिभा को दर्शाता है। उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ–प्रेममाधुरी, प्रेम फूलवारी, भक्तमाल आदि हैं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने हिन्दी साहित्य की सेवा में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। भाषा के प्रति उनका प्रेम इस दोहा में व्यंजित है–

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल।।'

उनकी प्रेरणा से ही हिन्दी जनभाषा बनी। उनकी कविताओं में एक ओर श्रृंगार रस की धारा बहती दीखती है तो दूसरी ओर स्वदेशप्रेम और समाज–सुधार की भावनाएँ तरंगित होती दिखायी पड़ती हैं। उनमें प्राचीन और नवीन, पौर्वात्य और पाश्चात्य का समन्वय मिलता है। वर्तमान साहित्य की समस्त प्रवृत्तियों का प्रतिफलन उनकी रचनाओं में हुआ है। इसीलिए वे हिन्दी साहित्य के 'आधुनिक युग के जन्मदाता' कहे जाते हैं। उनके पूर्व हिन्दी गद्य का बिखरा रूप साहित्य में मिलता तो है किन्तु गद्य साहित्य को भारतेन्दु जी ने ही पुष्ट किया।

भारतेन्दु जी की कविताओं की मार्मिकता और रसमयता ने उन्हें सर्वप्रिय बना दिया। उन्होंने अपने प्रगतिशील विचारों से देश–सेवा का कार्य किया और भाषा तथा साहित्य को समृद्ध बनाया। निश्चित ही वे एक असाधारण प्रतिभा और व्यक्तित्व से पूर्ण साहित्यकार थे। भाषा और भाव दोनों की दृष्टि से वे आधुनिक काल के साहित्य के जन्मदाता माने जाते हैं। उन्होंने खड़ी बोली में गद्य लिखा और गद्य लिखने के लिए लोगों को उत्साहित किया। आज का साहित्यिक जगत उनके सम्मुख नत–मस्तक है।

मूल्यांकन–

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को आधुनिक युग का जन्मदाता क्यों कहा जाता है?
- भारतेन्दु जी की कविता की मुख्य विषयवस्तु का वर्णन कीजिए।

नागार्जुन–पाठ्यपुस्तक के पाठ–9 में 'मेघ बजे, फूले कदम्ब' शीर्षक से कवि की दो कविताएँ रखी गयी हैं। प्रस्तुत कविता में प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण है। 'मेघ बजे' कविता में बादलों की उमड़–घुमड़ एवं ध्वनि का स्वाभाविक वर्णन किया गया है। प्रथम वर्षा से पृथ्वी पर छाई खुशहाली का वर्णन सुन्दर तरीके से हुआ है। दूसरी कविता में सावन में फैली हरियाली तथा फूले हुए कदम्ब वृक्ष का सजीव चित्रण है। प्रकृति–प्रेम इस पाठ का उद्देश्य है।

कवि और कथाकार नागार्जुन का पूरा नाम वैद्यनाथ मिश्र था। उनका जन्म बिहार के दरभंगा जिलान्तर्गत सतलखा ग्राम में सन् 1911 ई0 में हुआ। उनकी अभावग्रस्त बाल्यावस्था ने उन्हें संघर्ष हेतु

प्रेरित किया। प्रारंभिक शिक्षा संस्कृत पाठशाला में हुई। देशाटन, पर्यटन और स्वाध्याय के फलस्वरूप वैद्यनाथ मिश्र 'नागार्जुन' ने मैथिली, पालि और संस्कृत भाषा में पाण्डित्य प्राप्त किया। प्रारम्भ में वे 'यात्री' उपनाम से रचना किया करते थे। सन् 1937 में वे बौद्धधर्म के प्रभाव में आये और तब उन्होंने 'नागार्जुन' नाम धारण किया। यही नाम उनकी पहचान बन गया।

नागार्जुन मानवता के उपासक और कलुष मान्यताओं के विरोधी थे। भ्रमणशील व्यक्तित्व के नागार्जुन भ्रमण करते हुए ही लंका पहुँचे, जहाँ संस्कृत के आचार्य के रूप में कार्य किया। 1941 ई0 में भारत लौटे। उनके ऊपर राहुल सांकृत्यायन, निराला का अत्यधिक प्रथाव था। वे अनेक महापुरुषों और साहित्यकारों के संपर्क में रहे। सर्वप्रथम उन्हें व्यंग्यकार, कथाकार और कवि के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त हुई। उन्होंने साम्यवाद और यथार्थवाद को मान्यता देते हुए अनेक रचनाएँ कीं। वे वर्मा और तिब्बत भी गये। उन्होंने समाज, शासन और शोषित जनता को देखा और अपनी रचनाओं में उसे स्थान दिया। निर्भीक रचनाकार नागार्जुन को जेल यात्रा करनी पड़ी, विरोध का सामना करना पड़ा। उन्होंने रुढ़ियों, अव्यवस्थाओं, दूषित प्रवृत्तियों का विरोध किया। उनकी रचनाओं में प्रकृति प्रेम, राष्ट्रप्रेम दिखाई देता है। 5 नवम्बर 1998 को दरभंगा में इनका निधन हो गया।

रचनाएँ–

उपन्यास–रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नई पौध, बाबा बटेसरनाथ, दुःखमोचन, वरूण के बेटे, कुम्भीपाक, हीरक जयंती, उग्र तारा।

काव्य–युगधारा, प्यासी पथराई आँखें, सतरंगे पंखों वाली, तुमने कहा था।

खण्डकाव्य–भस्मासुर।

इसके अतिरिक्त 'खून और शोले', 'प्रेम का बयान', 'चनाजोर गरम', 'अब तो बन्द करो हे देवि', 'यह चुनाव का प्रहसन' आदि अन्य रचनाएँ भी हैं।

एक प्रगतिवादी कवि के रूप में नागार्जुन को सर्वाधिक यश प्राप्त हुआ। उन्होंने संघर्षशील सर्वहारा वर्ग की महत्ता का अंकन किया है, मध्यमवर्गीय जनता की समस्याओं को पहचानते हुए उसका कथन किया है तथा देश की स्वतंत्रता, खुशहाली और राष्ट्रीय चेनता को उजागर कर भारत की जनता को सर्वोपरि महत्त्व दिया है। उनके काव्य में वैयक्तिकता, सामाजिक यथार्थ, प्रणय भावना, स्वदेश प्रेम, प्रकृति प्रेम आदि का दर्शन मिलता है। उन्होंने सामयिक समस्याओं को व्यंग्यात्मक पद्धति पर प्रस्तुत करने में बड़ी सफलता प्राप्त की है।

छन्दविधान की दृष्टि से नागार्जुन ने अधिकांश कविताएँ मुक्त छंद में लिखी हैं, किन्तु कुछ छन्दबद्ध रननाएँ भी हैं। भाषा, अलंकार, छन्द और भाव की दृष्टि से नागार्जुन की रचनाओं का बड़ा महत्त्व है। निश्चय ही वे एक श्रेष्ठ कवि थे।

मूल्यांकन–

- नागार्जुन की कविताओं की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
- नागार्जुन जी की प्रसिद्धि किस रूप में अधिक है।
- उन्होंने अपनी रचनाओं में किस बात पर सबसे ज्यादा लिखा है?

हजारी प्रसाद द्विवेदी–'क्या निराश हुआ जाय' शीर्षक से पाठ–16 में द्विवेदी जी का निबन्ध सम्मिलित किया गया है। पाठ में बड़े ही सुन्दर तरीके से देश की स्थितियों पर विचार करते हुए निबन्धकार ने

बुराइयों से विचलित न होते हुए आशावान रहने की प्रेरणा दी है। इसके लिए लेखक ने कई उद्धरण दिये हैं और यह सिद्ध किया है कि बुराईयों के साथ ही सच्चाई और मानवता भी समाज में है। अतः सकारात्मक दृष्टिकोण रखना चाहिए।

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध निबंधकार द्विवेदी का जन्म श्रावण शुक्ल 11, सं0 1964 को बलिया जिले के आरत दूबे का छपरा नामक ग्राम में सरयूपारीण ब्राह्मण परिवार में हुआ। बाल्यावस्था में उनका नाम वैद्यनाथ दूबे था। उनके पिता का नाम पं0 अनमोल द्विवेदी और उनकी माता का नाम श्रीमती ज्योतिकली देवी था। उनके पिता संस्कृत के पंडित थे। वंश–परंपरा से द्विवेदी जी के पूर्वजों ने ज्योतिषशास्त्र में पांडित्य प्राप्त किया था। उनके प्रपितामह अपने समय के मान्य ज्योतिषाचार्य थे। हजारी प्रसाद जी के चाचा पं0 बाँके दूबे बसरिकापुर में रहते थे। उन्हीं की देखरेख में वहीं के मिडिल स्कूल में सं0 1978 वि0 में द्विवेदी जी ने मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके पश्चात् उन्होंने काशी आकर संस्कृत का अध्ययन किया। प्रवेशिका परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे काशी विश्वविद्यालय में प्रविष्ट हुए। सं0 1984 में उन्होंने एडमिशन की परीक्षा उत्तीर्ण की। उन्होंने इण्टर की भी परीक्षा उत्तीर्ण की तथा ज्योतिष विषय से आचार्य की उपाधि प्राप्त की। वे बी0ए0 की परीक्षा में सम्मिलित होना चाहते थे, किन्तु अस्वस्थ हो जाने के कारण उन्हें अध्ययन स्थगित कर देना पड़ा।

संवत् 1987 वि0 में वे शांतिनिकेतन में शिक्षक हुए। कुछ समय बाद वे हिन्दी विभाग के अध्यक्ष हो गये। बीस वर्ष तक शान्ति निकेतन में उन्होंने अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। 2007 वि0 में वे काशी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष हुए। वे चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय में भी हिन्दी विभाग के अध्यक्ष थे।

अपने विद्यार्थी जीवन में कविवर मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानन्दन पन्त तथा बनारसीदास चतुर्वेदी से प्रभावित थे। शांतिनिकेतन में रवीन्द्र नाथ टैगोर के प्रभाव से उनमें शोध की प्रवृत्ति जगी और लिखने की प्रेरणा उत्पन्न हुई। साहित्य समिति इन्दौर द्वारा इनकी पुस्तक 'सूर साहित्य' हेतु उन्हें स्वर्णपदक प्रदान किया गया। 'कबीर' पुस्तक हेतु उन्हें मंगलाप्रसाद परितोषिक मिला। साहित्य क्षेत्र में की गयी उनकी सेवा से प्रभावित होकर सं0 2004 में कराची हिन्दी साहित्य सम्मेलन के साहित्य परिषद का अध्यक्ष बनाया गया। सं0 2006 में लखनऊ विश्वविद्यालय ने उन्हें डी0लिट0 की उपाधि दी। उनकी विद्वता और साहित्यिक प्रतिभा से प्रभावित होकर भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया। हिन्दी गद्य का नक्षत्र 19 मई सन् 1979 को अन्त हो गया।

रचनाएँ–कहा जाता है कि प्रारम्भ में द्विवेदी जी कविता किया करते थे। उनकी कीति निबन्धों और आलोचनाओं के कारण हुई। निबन्ध और आलोचना के अतिरिक्त उन्होंने चरित्र प्रधान उपन्यासों–'बाणभट्ट की आत्मकथा' तथा 'अनाामदास का पोथा' का भी लेखन किया। इनकी रचनाओं को तीन भागों में बाँटा गया है–

1–सम्पादित–निबंध संग्रह, संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो, संदेशरासक। विश्वकोश का भी सम्पादन कार्य द्विवेदी जी को सौंपा गया था। उसके संपादन में उनका योगदान प्राप्त हुआ।

2–अनुदित–प्रबन्ध–चिन्तामणि, पुरातन प्रबंध संग्रह, प्रबंध कोश, विश्व–परिचय, लाल कनेर, मेरा बचपन।

3–मौलिक रचनाएँ–सूर साहित्य, हिन्दी साहित्य की भूमिका, कबीर, सूरदास और उनका काव्य, हमारी साहित्यिक समस्याएँ, प्राचीन भारत का कला–विलास, नख–दर्पण में हिन्दी कविता, विचार और वितर्क, कल्पना, अशोक के फूल, बाणभट्ट की आत्मकथा, नाथ सम्प्रदाय, मध्यकालीन धर्म साधना, हिन्दी

साहित्य का आदिकाल, हिन्दी साहित्य, साहित्य का साथी, प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद, साहित्य का मर्म, विचार–प्रवाह, मेघदूत–एक पुरानी कहानी, चारूचन्द्र, पुनर्नवा, अनामदास का पोथा आदि।

द्विवेदी जी रचनाकार, शास्त्रज्ञ और गवेषक थे। उनका ज्ञान–क्षेत्र अत्यन्त व्यापक था। उनकी रचनाओं पर उनके अध्ययन का गंभीर प्रभाव दिखाई पड़ता है। उनके निबन्धों में उनके कवि के कवि के हृदय की उदारता का दर्शन होता है। इसी उदारवादी दृष्टि के कारण ही उनके निबन्धों में 'मानवतावाद' का प्रतिफलन हो सका। उनकी अपनी कथन प्रणाली है। 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' जैसे सामान्य विषय को लेकर भी उन्होंने मानव के मानवीय और पाशविक वृत्तियों का बड़ी गंभीरता के साथ निवेदन किया है। समाज कल्याण और लोक–मंगल की भावना द्विवेदी जी के निबन्धों में सर्वत्र दृष्टिगत होती है।

द्विवेदी जी की आलोचना पर उनकी विद्‌वता का प्रभाव है। प्रतिपादित विषय के समर्थन में वे प्रभूत सामग्री उपस्थित करते रहे हैं। इसीलिए उनकी आलोचना, तर्कसम्मत और प्रमाण–वाक्यों से सिद्ध है, उनमें उनकी अपनी निर्णयात्मिका बुद्धि का संचार कम है। वे भावनापूर्ण व्यक्तित्व के साहित्यसाधक थे, इसीलिए उनकी आलोचना में भावात्मक तथा विवेचनात्मक दोनों की शैलियों का दर्शन होता है। भावात्मक शैली में–'नई समस्याएँ' और विवेचनात्मक शैली में–'प्रेमचन्द का महत्त्व' निबन्ध हैं।

द्विवेदी जी निबन्धकार, उपन्यासकार तथा समीक्षक के रूप में ही नहीं बल्कि साहित्य के आचार्य के रूप में सुविख्यात थे। वे हमारे बीच अब नहीं हैं, पर अपनी कृतियों के माध्यम से वे सदा ही हमारे साथ हैं।

मूल्यांकन–

- द्विवेदी जी के दो उपन्यासों के नाम लिखिए।
- किस पुस्तक हेतु उन्हें मंगला प्रसाद पारितोषिक मिला था?
- भारत सरकार द्‌वारा उन्हें किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया?

सन्दर्भ ग्रन्थ–

- लेखक समीक्षा–डॉ0 श्यामलाकान्त वर्मा
- क्वि समीक्षा–डॉ0 श्यामलाकानत वर्मा
- हिन्दी साहित्य का इतिहास–डॉ0 नागेन्द्र

मंजरी (हिन्दी की पाठ्‌यपुस्तक) कक्षा–8

सरदार पूर्ण सिंह–सरदार पूर्ण सिंह द्‌वारा विचरित 'सच्ची वीरता' नामक निबन्ध पाठ्‌यपुस्तक के पाठ–3 में रखा गया है। पाठ में लेखक ने सच्चे वीर पुरूषों के धैर्य, साहस और स्वाभिमान जैसे गुणों की महत्ता दर्शायी है। अनेक उदाहरणों को देकर लेखक ने यह बताया है कि वीर पुरूष प्रत्येक स्थिति में सच्चाई का साथ देते हैं। यह पाठ बच्चों के लिए प्रेरणास्प्रद है।

सरदार पूर्ण सिंह का जन्म संवत् 1938 में हुआ था। उनके पिता एक सरकारी कर्मचारी थे और दौरे के कार्यों में सदैव व्यस्त रहा करते थे। सरदार पूर्ण सिंह ने अपनी धर्मपरायण माता के साथ रावलपिण्डी में रहकर शिक्षा प्राप्त की थी। हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् वे लाहौर चले गये और उन्होंने विज्ञान का अध्ययन प्रारम्भ किया। इसी समय उन्हें जापान–गमन के लिए छात्रवृत्ति

प्राप्त हुई। जापान में वे रसायन शास्त्र का अध्ययन करते रहे। वहाँ स्वामी रामतीर्थ से प्रभावित होकर उन्होंने वेदान्त का ज्ञान प्राप्त किया। उनसे शिक्षा प्राप्त कर वे सन्यासी हो गये और अध्ययन कार्य से मुक्ति लेकर भारत लौटे। भारत में कुछ समय तक उन्होंने सन्यासी का जीवन व्यतीत किया। कुछ समय बाद विचार बदले और गार्हस्थ–जीवन में प्रवेश किया। देहरादून के इम्पीरियल फारेस्ट इन्स्टीट्यूट में उन्होंने नौकरी शुरू की और वेतन का अधिकांश साधु–संगत में खर्च किया।

कालान्तर में कुछ परिस्थितियों के कारण उन्होंने स्वामी रामतीर्थ का साथ छोड़ दिया और सिक्ख धर्म में दीक्षित हो गये। कुछ दिनों बाद वे ग्वालियर चले गये। उसके बाद पंजाबान्तर्गत जडावाला में वे खेती करने लगे। संवत् 1988 वि0ई0 (31 मार्च 1931ई0) को उनका स्वर्गवास हो गया।

रचनाएँ और सेवाएँ– सरदार पूर्ण सिंह विज्ञान के अध्येता होते हुए भी हिन्दी के भक्त थे। उन्होंने हिन्दी और संस्कृत का स्वाध्याय किया था। उन्होंने कुल पाँच ही निबन्ध लिखे किन्तु इन निबन्धों से ही वे अमर हो गये। ये निबन्ध हैं–

1–कन्यादान या नयनों की गंगा 2–पवित्रता 3–आचरण की सभ्यता 4–मजबूरी और प्रेम 5–सच्ची वीरता।

सरदार पूर्ण सिंह भारतीय विचारधारा के व्यक्ति थे। प्रतिभा–सम्पन्न होने के कारण उन्होंने अल्पसंख्या में निबन्ध लिखकर भी जो ख्याति अर्जित की वह स्तुत्य है। वे सफल निबन्धकार थे। उनके निबन्धों का विषय सामाजिक और आचरण सम्बन्धी है। उन्होंने श्रमिक वर्ग के प्रति सहानुभूति उत्पन्न की। उनकी निबन्धकला में विचारों की गंभीरता के साथ हृदय की भावुकता का सामंजस्य है। इसीलिए उनके निबन्धों में कुछ विचार प्रधान हैं और कुछ भाव प्रधान। प्रथम दो निबन्ध–कन्यादान या नयनों की गंगा और पवित्रता भावात्मक कोटि के हैं और अन्तिम तीन निबन्ध आचरण की सभ्यता, मजदूरी और प्रेम तथा सच्ची वीरता विचारात्मक कोटि के हैं।

भाषा का जैसा प्रोज्ज्वल रूप और अभिव्यक्ति की जैसी निर्मलता उनके निबन्धों में मिलती है, अन्यत्र दुर्लभ है। उनके निबन्धों में उनके प्रगतिशील विचारों की छाप स्पष्ट है। लघु कलेवर में हास्य, व्यंग्य के द्वारा रोचक पद्धति में भावों का स्पष्टीकरण उनके निबन्धों की विशेषता है। उनके विचारप्रधान और भावप्रधान निबन्धों की भाषा विशुद्ध खड़ी बोली है। सरल, सुबोध और प्रभावोत्पादक भाषा में ही उन्होंने अपने विचार व्यक्त किये हैं। कहीं भाषा का व्यावहारिक रूप देखने को मिलता है और कहीं संस्कृत–गर्भित रूप। कथात्मक वर्णन में उर्दू, अंग्रेजी आदि के प्रचलित शब्द आ गये हैं। भाषा में मुहावरे और लोकोक्तियों का स्वाभाविक, सहज प्रयोग मिलता है। कहीं ओज है तो कहीं माधुर्य। वचन की वक्रता, व्यंग्य का समाहार, उद्धरणों का स्वाभाविक प्रयोग तथा अन्य ऐसी ही विविध विशेषताओं के कारण वे द्विवेदी युग के विशिष्ट शैलीकार के रूप में मान्य हुए। उनकी निबन्ध कला पर हिन्दी साहित्य को गर्व है।

मूल्यांकन–

- प्रारम्भ में उनके जीवन पर किसका प्रभाव था?
- सरदार पूर्ण सिंह के निबन्धों के नाम लिखिए।
- सरदार पूर्ण सिंह के भाषा की विशेषता बताइए।

बिहारी–मंजरी के पाठ–6 में बिहारी के नीति के पाँच और भक्ति के तीन दोहे 'नीति और भक्ति के दोहे' शीर्षक के अन्तर्गत रखे गये हैं। ये दोहे नीति और भक्ति के महत्त्वपूर्ण संदेशों को व्यक्त करते हैं। उनमें नैतिक एवं व्यावहारिक जीवनमूल्यों को स्पष्ट किया गया है।

जीवनवृत्त–कविवर बिहारी लाल के जीवन के सम्बन्ध में प्रामाणिक रूप से कुछ जानने के लिए 'बिहारी–विहार' नामक पद्यात्मक कृति का आश्रय लेना आवश्यक हो जाता है। 'रत्नाकर' द्वारा लिखे गये शोधपूर्ण निबन्ध भी बिहारी के जीवन पर प्रकाश डालते हैं। 'बिहारी–बिहार' में कवि के जन्म सम्वत् का कथन करते हुए एक दोहा कहा गया है–

''सम्वत् जुग सर रस सहित भूमि रीति गिन लीन्ह।
कातिक सुदि बुध अष्टमी जन्म हमहिं विधि दीन्ह।।''

इस दोहे के आधार पर भूमि की संख्या 1, रस की संख्या 6, सर की संख्या 5 और जुग की संख्या 2 मानकर लोगों ने उनका जन्म संवत् 1652 माना है। उनके पिता का नाम केशव राय था। कुछ लोग उनके पिता केशव राय और आचार्य केशवदास को एक ही मानते हैं, किन्तु केशव राय और केशव दास दो भिन्न व्यक्ति थे। इनकी जन्मभूमि ग्वालियर थी। बाद में वे बहुत दिनों तक अपनी ससुराल मथुरा में रहे, किन्तु अपमानित होने पर उन्हें वह स्थान छोड़ना पड़ा। जाति से वे धौम्य गोत्री माथुर चौबे थे। वे महाराज जयसिंह के आश्रित कवि थे। महाराज जब अपनी छोटी रानी के प्रेम पाश में बँधकर राज्य के प्रति उदासीन हो उठे थे, तब कविवर बिहारी ने अन्योक्ति–मूलक एक पद लिखकर उन्हें कर्तव्य–ज्ञान कराया था।

''नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सौ विंध्यौ आगे कौन हवाल।।''

अन्योक्ति–मूलक इस दोहे को पढ़कर राजा ने अपने कर्तव्य को समझा। कविवर बिहारी लाल ने दोहा छंद में ही रचनाएँ कीं। बिहारी–सतसई उनके द्वारा लिखित 719 दोहों का संग्रह है।

सतसई की परम्परा और बिहारी सतसई–संस्कृत साहित्य के 'अमरूक शतक' के प्रभाववश सतसई –रचना की ओर लोग प्रवृत्त हुए। 'आर्या सप्तशती' को विशेष ख्याति मिली, 'गाहा–सतसई' बहुत पहले ही प्रकाश में आ चुकी थी। इन्हीं सतसइयों तथा स्फुट मुक्तकों के प्रभाव में बिहारी–सतसई की रचना कविवर बिहारी द्वारा की गयी। इसके पश्चात् 'मतिराम सतसई', रामसहाय कृत 'राम सतसई', विक्रम शाह कृत 'विक्रम सतसई' आदि का भी दर्शन हुआ। सतसई की परम्परा में ही 'हजारा' का प्रचलन हुआ। रसनिधिकृत 'रतन हजारा' को विशेष ख्याति मिली। वर्तमान युग में वियोगी हरि द्वारा 'वीर सतसई' की भी रचना की गयी थी।

वर्ण्य विषय–बिहारीलाल के दोहों में श्रृंगार–रस का बाहुल्य है। बिहारी की कविता कहने से प्रायः पाठक और श्रोता श्रृंगार मूलकर कविताओं का ही अर्थ ग्रहण करते हैं। बिहारी ने श्रृंगार के अतिरिक्त नीति, भक्ति और वैराग्य सम्बन्धी दोहे भी रचे हैं, किन्तु उनकी प्रवृत्ति श्रृंगार–मूलक ही रही है। इसीलिए श्रृंगार–मूलक इन कविताओं में प्रेम वर्णन, ऋतु वर्णन, नायिका–विचार, शिख–नख सम्बन्धी दोहे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। विभिन्न हाव–भावों का चित्रण करने के साथ ही श्रृंगार के संयोग और वियोग दोनों ही पक्षों पर उन्होंने विचार किया है। दोहा जैसे छन्द में विभिन्न अन्तवृत्तियों का कथन करने के साथ व्यंग्य, उपदेश आदि का भी कथन उन्होंने इन दोहों के माध्यम से किया है।

रीतिकाल और बिहारी–बिहारीलाल रीतिकाल के रीतिसिद्‌ध धारा के एकमात्र कवि सिद्ध होते हैं। उन्होंने आचार्यत्व की कामना कभी भी नहीं की, कभी भी लक्षणों को स्पष्ट करने का उद्‌देश्य लेकर उन्होंने लक्षण सम्बन्धी दोहे नहीं लिखे, किन्तु श्रृंगार के प्रवाह में उनके काव्य में विभाव, अनुभाव, संचारी भावों के लक्षण तथा नायिका–भेद के लक्षण स्वतः ही उपस्थित हो गये हैं। उनके दोहों में कला–पक्ष को पर्याप्त स्थान मिला है, किन्तु कला के लिए उन्होंने भाव की हत्या नहीं होने दी है। भाव व कला दोनों का समन्वित रूप उनके दोहों में देखने को मिलता है, इसलिए वे रीतिसिद्ध कवि कहे जाते हैं।

'मेरी भव–बाधा हरौ राधा नागरी सोय।
जा तन की झाँई परै स्याम हरित द्रुति होय।।'

इस दोहा में यदि श्लेष का सुन्दर परिचय मिलता है तो भाव का भी उत्कृष्ट रूप देखने को मिलता है।

श्रृंगार–भावना और प्रेम वर्णन–संयोग श्रृंगार का वर्णन करते समय बिहारी लाल ने कहीं तो प्रेम का मर्यादित रूप दिखलाया है और कहीं उसका अत्यन्त निकृष्ट रूप। जहाँ संयोग का वर्णन करते हुए उन्होंने सुरति और विरति का कथन किया है, वह स्थल अमर्यादित हो उठा है, किन्तु जिन पदों सात्विकता–समन्वित भावों का कथन है उनमें संयोग का सुन्दर रूप ही व्यक्त हुआ है।

कविवर बिहारीलाल कृत 'बिहारी सतसई' के भाव पक्ष और कलापक्ष पर विचार करने के बाद यह कहा जा सकता है की प्रेम की सूक्ष्म स्थितियों का कथन बिहारी ने बड़ी कारीगरी से किया है। काव्य–कुशलता की दृष्टि से वे प्रथम–श्रेणी के कवियों की पंक्ति में स्थान पाने के अधिकारी माने गये हैं।

मूल्यांकन–

- बिहारी का जन्म कब हुआ था ?
- वे किस राजा के आश्रित कवि थे ?
- सतसई–परम्परा से आप क्या समझते हैं ?
- बिहारी को रीतिसिद्ध कवि कहा जाता है, इसकी विशेषताएँ क्या हैं ?

गोस्वामी तुलसीदास–'बाल छवि', 'विनय के पद', 'सीता स्वयंवर', नामक शीर्षक के अन्तर्गत पाठ–10 में सन्त कवि गोस्वामी तुलसीदास की रचनाओं के अंश रखे गये हैं। गोस्वामी की रचना 'कवितावली' से बाल–छवि, 'विनय पत्रिका' से विनय के पद एवं 'रामचरित मानस' के बालकाण्ड से 'सीता–स्वयंवर' का अंश लिया गया है। ये सभी भक्ति–भावना को जागृत करने के उद्‌देश्य से पुस्तक में समाहित हैं।

जीवनवृत्त–गोस्वामी तुलसीदास के जन्म, जन्मस्थान आदि के संबंध में विभिन्न विद्‌वानों के विभिन्न मत हैं। बाबा वेणीमाधवदास के अनुसार उनका जन्म संवत् 1554 वि0 माना गया है। गोसाई–चरित और तुलसी–चरित में भी इसे ही जन्म सम्वत् बतलाया गया है। शिवसिंह के अनुसार उनका जन्म–संवत् 1583 स्वीकार किया जाना चाहिए, किन्तु कई विद्‌वानों ने सं0 1589 को ही जन्म–संवत् माना है। पं0 रामगुलाम द्विवेदी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आदि ने उनका जन्म स्थान बाँदा जिलान्तर्गत राजापुर ग्राम में माना है। कुछ विद्‌वानों के मतानुसार वे सोरों में पैदा हुए थे और कुछ लोग उनका जन्मस्थान अयोध्या भी सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं। उनके पिता का नाम आत्माराम दूबे और माता का नाम हुलसी था। जन्म के समय मुँह से राम निकलने के कारण उन्हें रामबोला कहा गया और अभुक्त–मूल नक्षत्र में जन्म

लेने के कारण उन्हें परिवार वालों ने त्याग दिया। अपने जीवन के सम्बन्ध में कुछ बातें स्वयं तुलसीदास ने भी कही हैं–'राम को गुलाम रामबोला राखो नाम' के द्वारा उनका रामबोला नाम और 'मातु पिता जग जाय तज्यों' के द्वारा उनका जन्म के बाद त्यागा जाना प्रमाणित है। उनके आरम्भिक गुरु बाबा नरसिंहदास थे। बाद में महात्मा शेष–सनातन से काशी में गोस्वामी जी ने वेद, शास्त्र, दर्शन, पुराण आदि का ज्ञान प्राप्त किया। उनका विवाह रत्नावली नामक सुन्दर कन्या से हुआ था। उनके मायके जाने पर वे प्रेमान्ध हो विविध कठिनाइयों को पार कर अर्धरात्रि में उनके पास पहुँचे। पत्नी विदुषी थीं, उन्होंने इस आसक्ति पर उन्हें फटकारते हुए कहा–

''हाड़ माँस के देह मम, तापर एती प्रीति।
होती जो श्रीराम में, होति न तब भवभीति।।''

इससे इनमें वैराग्य भाव जगा और ये राम के अनन्य भक्त हो गये। कुछ लोग इनके विवाह की कथा को कपोल–कल्पित भी कहते हैं। जनश्रुति के अनुसार उसकी मृत्यु सं0 1680 की श्रावण शुक्ल सप्तमी को हुई, किन्तु वेणीमाधवदास कृत 'गोसाई चरित' में सं0 1680 में श्रावण कृष्ण तृतीया दिन शनिवार को स्वामीजी का गोलोकवास होना लिखा है। गोस्वामी जी के मित्र टोडर के वंश में इसी दिन आज भी लोग उनकी स्मृति में अन्नदान करते हैं। अतः यही तिथि सही लगती है। अधिकांश विद्वानों ने भी इसी का समर्थन किया है।

गोस्वामी जी के काव्य का विषय शील, शक्ति और सौन्दर्य से युक्त प्रभु रामचन्द्र से युक्त रामचन्द्र के जीवन की गाथा है। उन्होंने राम के जन्म से लेकर उनके सम्पूर्ण जीवन की कथा का कथन किया है, इसलिए जीवन की विविध स्थितियों का, मानव की विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन उनके 'मानस' में अपने आप ही हो गया है। उनकी 13 पुस्तकों का विषय इस प्रकार है–(1) वैराग्य सन्दीपन–62 छन्दों में धर्म, ज्ञान और सन्तलक्षण का कथन (2) रामलला नहछू–रामलला के व्याह के बाद अयोध्या आने पर नहछू नाम के संस्कार का वर्णन (3) बरवै रामायण–रामकथा के स्फुट प्रसंगों का वर्णन (4) पार्वती मंगल–शिवपार्वती के विवाह का कथन (5) जानकीमंगल–राम और जानकी के विवाह का कथन (6) रामाज्ञा प्रश्न–शकुन उठाने के उद्देश्य से रामकथा का वर्णन (7) दोहावली–576 छन्दों का संग्रह। इसमें नीति, भक्ति आदि के विविध दोहे संगृहित हैं। (8) गीतावली–राम की कोमल वृत्तियों का कथन करने वाले विभिन्न पदों का संग्रह (9) कवितावली–रामचरित और आत्म–चरित्र विषयक कविताओं का संग्रह (10) विनय–पत्रिका–राम के चरणों में निवेदित विनय–पदों का संग्रह (11) कृष्ण गीतावली–तुलसी के कुछ पदों का संग्रह मात्र (12) रामचरित मानस–राम के जीवन का पूर्ण चित्र।

इस सभी कृतियों में रामचरित मानस और विनय–पत्रिका को विशेष महत्त्व मिला है। 'रामचरित मानस' तो धर्म–ग्रन्थ के रूप में पूजा जाने लगा है।

गोस्वामीजी के युग में काव्य–भाषा के रूप में 'अवधी' और 'ब्रज' भाषा को मान्यता मिल चुकी थी। उन्होंने इन दोनों भाषाओं पर पूर्ण अधिकार प्राप्त किया। 'रामचरित मानस' की भाषा अवधी है और कवितावली, विनय–पत्रिका तथा गीतावली की भाषा 'ब्रज' है। पार्वती मंगल, जानकी मंगल और रामलला नहछू में पूर्वी अवधी का प्रयोग है। गोस्वामी जी की भाषा मुहावरेदार है। 'प्रसाद राम नाम के पसारि पाँय सूतिहौं' जैसी पंक्तियों में मुहावरे का प्रयोग स्पष्ट है। उनकी भाषा बड़ी परिमार्जित और सुगठित है, इसीलिए उनकी रचनाओं में न्यून–पदत्व दोष नहीं मिलता है।

गोस्वामी तुलसीदास लोक और शास्त्र दोनों के ज्ञाता थे। अपनी समन्वयात्मक बुद्धि के कारण उन्होंने जहाँ भी कुछ अच्छा देखा उसे स्वीकार कर लिया। उनकी कृतियों में वैराग्य और गार्हस्थ, भक्ति और ज्ञान, भाषा और संस्कृति सबका समन्वय मिलता है। उनके समान सूक्ष्म दृष्टि का दूसरा कवि नहीं दिखता। भारतीय जीवन का सर्वांग चित्र तुलसीदास की कविताओं में देखने को मिलता है। अतः उन्हें भारतीय जनता का प्रतिनिधि कवि कहा जाता है।

मूल्यांकन–

- गोस्वामी तुलसीदास के गुरु का नाम बताइए।
- इनके काव्य का मुख्य प्रतिपाद्य क्या रहा है ?
- रामचरितमानस में किस भाषा का प्रयोग हुआ है ?

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखित 'आत्मनिर्भरता' नामक निबन्ध पाठ्यपुस्तक के पाठ–11 में रखा गया है। इस निबन्ध में लेखक ने बच्चों, युवकों में आत्मनिर्भरता के विकास पर बल दिया है। हरिश्चन्द्र, राणाप्रताप, तुलसीदास, शिवाजी आदि का उद्धरण देते हुए लेखक ने सद्गुणों को विकसित करते हुए स्वावलम्बन हेतु प्रेरित किया है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का जन्म बस्ती जिले के अगोना नामक ग्राम में सं0 1941 की आश्विन पूर्णिमा को हुआ था। उनके पिता पं0 चन्द्रबली शुक्ल सुपरवाइजर कानूनगो थे। शुक्ल जी के पूर्वज पहले गोरखपुर स्थित भेड़ी ग्राम में रहते थे। पिता की नियुक्ति के कारण शुक्ल जी का आरम्भिक अध्ययन हमीरपुर के राठ नामक तहसील में हुआ। आरम्भिक शिक्षा उर्दू और फारसी के माध्यम से प्राप्त कर स्वरुचि के आधार पर शुक्ल जी ने कक्षा–8 उत्तीण करने के बाद हिन्दी पढ़ना आरम्भ किया। वहीं उनको माता का वियोग भी सहना पड़ा।

पिता के स्थानान्तरण के कारण शुक्ल जी को मिर्जापुर आना पड़ा। यहाँ जुबली स्कूल में शुक्ल जी ने अंग्रेजी का अध्ययन प्रारम्भ किया। एफ0ए0 कक्षा में अध्ययन करने की इच्छा से उन्होंने प्रयाग स्थित कायस्थ पाठशाला में प्रवेश किया। गणित में कमजोर होने के कारण उन्हें एफ0ए0 की पढ़ाई छोड़ देनी पड़ी। उन्होंने कानून पढ़ना शुरू किया, किन्तु उसमें भी असफल रहे। बाद में उन्होंने अंग्रेजी दफ्तर में राजकीय सेवा प्रारम्भ की। तत्कालीन कलेक्टर विंढम महोदय की कृपा से उन्हें नायब तहसीलदार की परीक्षा में प्रविष्ट होने की अनुमति मिल गयी। इस परीक्षा में वे उत्तीर्ण हुए किन्तु स्वाभिमानी प्रकृति के शुक्ल जी का मतभेद इसी समय अंग्रेजी दफ्तर के बाबू से हो गया और उन्होंने राजकीय सेवा से त्यागपत्र दे दिया।

'इण्डियन रिव्यूव' नामक पत्र में उनका एक निबन्ध 'ह्वाट हैज इण्डिया टु डू' प्रकाशित हुआ जिसे अधिकारियों ने क्रान्तिकारी समझा। फलतः उन्हें विंढम महोदय ने भी क्रन्तिकारी ही समझा। उनके सामने जीविका का प्रश्न उपस्थित हो गया। उन्होंने 20/– मासिक वेतन पर मिर्जापुर के मिशन स्कूल में ड्राइंग के अध्यापक के रूप में काम आरम्भ किया। यहाँ रहकर उन्होंने अपने 'साहित्यकार' को अधिक उन्नत रूप प्रदान किया।

संवत् 1966–67 में नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा संपादित होने वाले 'हिन्दी शब्द सागर' के सम्पादनार्थ उन्हें बुलाया गया। अपनी विद्वता के लिए इस समय वे कुछ सीमा तक प्रतिष्ठित हो चुके थे। सम्पादन के क्षेत्र में उन्हें अद्भुत सफलता मिली। वे नागरी प्रचारिणी पत्रिका के भी सम्पादक बने।

इस पत्रिका में शोधपूर्ण निबन्धों को प्रकाशित कर अपनी संपादन कला से तत्कालीन विद्वानों के बीच धाक जमा ली। संवत् 1987 वि0 में हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक पद पर नियुक्त हुए। संवत् 1994 में बाबू श्यामसुन्दर दास ने हिन्दी के अध्यक्ष पद से अवकाश ग्रहण किया और शुक्ल जी नियुक्त हुए। तीन वर्ष तक इस पद पर वे रहे। वे श्वांस रोग के रोगी थे। अत्यधिक बढ़ जाने के कारण माघ सुदी 6 रविवार को सं0 1997 में उनका स्वर्गवास हो गया।

रचनाएँ–शुक्ल जी की रचनाएँ दो भागों में बाँटी जा सकती हैं–

(1) अनूदित (2) मौलिक

(1) अनूदित–1. अंग्रेजी अनुवाद–विश्व प्रपंच, राज्य प्रबन्ध, आदर्श शिक्षा जीवन, मेगस्थनीज का भारतवर्षीय वर्णन, कल्पना का आनन्द, स्फुट अनुवाद।

2. शशांक–(बंगला उपन्यास का अनुवाद), स्फुट लेख आदि।

(2) मौलिक–1. इतिहास–हिन्दी साहित्य का इतिहास, फारस का प्राचीन इतिहास।

2. भूमिका रूप आलोचनाएँ–जायसी (जायसी ग्रन्थावली की भूमिका), तुलसीदास (तुलसी ग्रन्थावली की भूमिका), सूरदास (भ्रमरगीत सार की भूमिका)।

3. अन्य रचनाएँ–रस मीमांसा, चिन्तामणि भाग–1 तथा भाग–2, त्रिवेणी, चारण–विनोद।

सम्पादित ग्रन्थ–भ्रमरगीत सार, भारतेन्दु साहित्य, तुलसी ग्रन्थावली, जायसी ग्रन्थावली।

उनके अनुदित ग्रन्थों में अनुवाद की विशिष्ट शैली का उपयोग है। उनके अनुवाद, अनुवाद नहीं लगते। उनमें मौलिकता का आनन्द मिलता है। मौलिक रचनाओं में 'चिन्तामणिः प्रथम भाग' मुख्यतः मनोविकार संबंधी निबन्धों का संग्रह है। 'चिन्तामणिः भाग–2' में तीन आलोचनात्मक निबन्ध संग्रहीत हैं–काव्य में प्राकृतिक दृश्य, काव्य में रहस्यवाद और काव्य में अभिव्यंजनावाद। 'चिन्तामणि' हेतु उन्हें साहित्य सम्मेलन में 'मंगला प्रसाद' पारितोषिक प्रदान किया था। 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' के लिए उन्हें 'हिन्दुस्तान एकेडमी' की ओर से रू0 500 का पारितोषिक प्राप्त हुआ। 'त्रिवेणी' शीर्षक पुस्तक में 'सूर', 'तुलसी' और 'जायसी' से सम्बन्धित आलोचनात्मक निबंध संगृहीत हैं।

शुक्ल जी आरम्भ से ही हिन्दी की ओर प्रवृत्त थे। विद्याव्यसनी वे रात–रातभर अध्ययन किया करते थे। माता से धार्मिक प्रभाव, पिता की स्वतंत्र चिंतन–प्रणाली एवं भारतेन्दु जी की रचनाओं को पढ़कर साहित्यिक संस्कार प्राप्त किया था। पं0 विन्ध्येश्वरी प्रसाद और पं0 रामेश्वरनाथ शुक्ल के सम्पर्क में रहकर प्रकृति की सुरम्य छटा का दर्शन कर उन्होंने अपने मानस में सौन्दर्यनिष्ठ भावों को विकसित किया था। इन विविध संस्कारों से युक्त शुक्ल जी का हृदय पूर्णतः रस ग्राहक प्रवृत्ति सम्पन्न हो उठा था। बाद में बाबू श्यामसुन्दरदास और महामना मालवीय जी के सम्पर्क में उनके साहित्यकार रूप को पूर्णता प्राप्त हुई।

मूल्यांकन–

- शुक्ल जी के पूर्वज कहाँ के रहने वाले थे?
- अपने किस लेख के कारण उन्हें क्रान्तिकारी समझा गया?
- शुक्ल जी द्वारा सम्पादित किसी पत्रिका का नाम लिखिए।
- उनकी रचना चिन्तामणि–1 एवं 2 का मुख्य वर्ण्य विषय क्या है?
- 'चिन्तामणि' हेतु उन्हें कौन सा पुरस्कार दिया गया?

गिरिजा कुमार माथुर–गिरिजा कुमार माथुर की कविता 'पहरुए सावधान रहना' पाठ्यपुस्तक में पाठ–12 पर रखी गयी है। यह कविता देश की रखवाली करने वाले सैनिकों को संबोधित है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी देश की तमाम चुनौतियों की ओर ध्यान दिलाते हुए कवि देश के रखवालों को सजग रहने हेतु प्रेरित करते हैं। भावी पीढ़ी को देश को आगे बढ़ाने हेतु प्रेरित करने के भाव से लिखी यह कविता देश–प्रेम पर आधारित है।

जीवन परिचय–गिरिजा कुमार माथुर का जन्म 1919 ई0 में बुन्देलखण्ड स्थित अशोकनगर में देवीचरण के घर हुआ था। उनके पिता देवीचरण एक प्रसिद्ध कवि थे और ब्रजभाषा में कविता करते थे। उनके प्रभाव के कारण बालक गिरिजा कुमार 9 वर्ष की अवस्था में ही ब्रजभाषा की कविता में रूचि लेने लग गये थे। उस समय काव्य लेखन की शिक्षा के रूप में कवियों से समस्या–पूर्ति कराने की प्रथा थी। 'आरती' शब्द देकर कविता लिखने को कहा गया था। गिरिजाकुमार माथुर ने अत्यन्त सुन्दर रचना प्रस्तुत की। गणेशोत्सव पर विद्यालय में आयोजित कवि–सम्मेलन में इसे कवि माथुर ने पढ़कर सुनाया और उन्हें बड़ी प्रशंसा मिली। उनकी काव्य–प्रतिभा का सिक्का जम गया। वह कविता यहाँ उद्धृत की जा रही है–

''शोभा मुखचन्द्र की अनोखी सुप्रभा ललाम,
ऊषा उस छवि पर...
गिरिजाकुमार की उतारे सब आरती।''

गिरिजाकुमार माथुर छायावाद से प्रभावित थे। उन्होंने इसी प्रभाववश कुछ गीतों की रचना भी की। विक्टोरिया कालेज, ग्वालियर में आयोजित कवि–सम्मेलन में उन्होंने एक गीत पढ़कर सुनाया। कवि–सम्मेलन के अध्यक्ष माखनलाल चतुर्वेदी थे। उन्होंने उस पर व्यक्त करते हुए कहा कि यदि इसके साथ कवि का नाम न दिया जाए ते यह रचना कवयित्री महादेवी की कृति लगेगी। गिरिजाकुमार माथुर को यह बात चुभ गयी। उन्होंने निश्चय किया कि वे सबसे अलग तरह की रचना करेंगे। बाद में प्रगतिवादी कविता धारा की ओर मुड़ते हुए वे प्रयोगवादी कवि के रूप में प्रतिष्ठित हुए। वे नई कविता के शीर्षस्थ कवि माने गये। 1943 में 'अज्ञेय' ने 'तार सप्तक' का संपादन किया। इसमें सात प्रयोगधर्मी कवियों को स्थान दिया गया। कवि माथुर इनमें से एक थे। 73 वर्ष की अवस्था में 10 जनवरी, 1994 को गिरिजाकुमार माथुर का निधन हो गया।

कृतियाँ–'मंजीर', 'नाश और निर्माण', 'धूप के धान', 'कल्पातर', 'शिलापंख चमकीले', 'जो बँध न सका', 'साक्षी रहे वर्तमान', 'भीतरी नदी की यात्रा', 'मैं बंधन के हूँ सामने'। 'मैं बंधन के हूँ सामने' पर कवि माथुर को 'व्यास सम्मान' तथा अकादमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

काव्य–यात्रा के सोपान–कवि माथुर ने विद्यार्थी जीवन में ही काव्य रचना आरम्भ कर दी थी। 1937 में बिखरी स्मृतियाँ और 'तीसरा पहर' शीर्षक कविताओं का उन्होंने लेखन किया। 'तीसरा पहर' में उनके प्रयोगवादी रूप का परिचय मिला। 1941 में कवि माथुर का प्रथम काव्य संग्रह 'मंजीर' प्रकाशित हुआ। इस संग्रह की अधिकांश कविताएँ प्रणय, विरह, हर्ष, रोमांच और विषाद भाव को व्यक्त करती हैं, किन्तु कुछ कविताओं में जीवन और जगत की समस्याओं तथा ऐतिहासिक बोध का भी प्रकाशन है। संग्रह की कुछ कविताओं में कवि का छायावादी रूप भी झलकता दिखायी पड़ा है, पर छन्द–मुक्त रचनाओं की प्रतीक–योजना, बिम्ब–विधायिनी शक्ति तथा अन्य विशेषताओं के कारण यह संग्रह भी गिरिजाकुमार माथुर के नव्य प्रयोग का ही सूचक है।

सन् 1943 में कवि माथुर की बारह कविताओं को प्रथम तार–सप्तक में स्थान मिला। इनकी प्रशस्ति के मूल में इसका अत्यधिक योगदान था। इनमें से कुछ शीर्षक हैं–'पानी के बादल', 'क्वार की दोपहरी', 'भीगा दिन', 'अधूरा गीत', 'बुद्ध' आदि। सन् 1946 ई0 में 'नाश और निर्माण' शीर्षक दूसरा काव्य–संग्रह पाठकों के सामने आया। तीसरा काव्य–संग्रह 'धूप के धान' 1955 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में 45 कविताएँ हैं। इनमें कुछ कविताएँ गीत शैली में लिखित रुमानी भाव की हैं, पर अधिकांश मानववादी विचारधारा की पोषक हैं, यथा 'एशिया का जागरण', 'पहिये', 'धारादीप' आदि।

1961 में कवि माथुर की कविताओं का चौथा संग्रह 'शिला पंख चमकीले' प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में कुल 25 कविताएँ संकलित हैं। 1968 में उनका पाँचवा संकलन सामने आया। इसका शीर्षक है 'जो बँध न सका'। इस संग्रह में कवि की 63 रचनाओं को स्थान मिला है। कवि ने इसे तीन खण्डों में विभाजित किया है–(1) इतिहास की पीड़ा (2) कालदृष्टि (3) प्रतिबिम्बों की लय। प्रथम खण्ड में 23 कविताएँ हैं। इनमें आधुनिक विषमताओं का चित्र उपस्थित करते हुए कवि ने त्रस्त मानव का यथार्थ बिम्ब उभारा है। द्वितीय खण्ड की छह कविताओं में प्रतीकात्मकता अधिक है। इनमें देश की अपेक्षा काल के बिम्बों को प्रस्तुत करने में कवि ने रुचि ली है। तीसरे खण्ड की कविताएँ अधिकांशतः रूमानी कल्पना से सम्बन्धित हैं।

गिरिजाकुमार माथुर की सभी काव्य–कृतियों में नये उपमानों, प्रतीकों, बिम्बों तथा छन्दों का प्रयोग हुआ है। इसीलिए वे नये कवियों के प्रकाश–स्तंभ बन गये थे।

मूल्यांकन–

- गिरिजाकुमार माथुर के पिता का क्या नाम था और वे किस भाषा के कवि थे ?
- उनके प्रयोगवादी रूप का परिचय किस कविता में मिलता है ?
- गिरिजाकुमार माथुर के तीसरे काव्य संग्रह का क्या नाम है, इसमें कितनी कविताएँ हैं ?

वियोगी हरि–वियोगी हरि द्वारा लिखित निबन्ध 'लीक वही नहीं' पाठ्यपुस्तक के पाठ–22 में रखा गया है। यह बड़ा महत्त्वपूर्ण निबन्ध है। इसमें जीवन की संकीर्णताओं और रूढ़ियों को त्यागकर नये मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित किया गया है। निबन्धकार ने युवाओं को संदेश दिया है कि पुराने, बने–बनाये नियमों, मार्गों पर चलना ही बुद्धिमानी नहीं है अपितु पुरानी, बेकार बड़ गयी मान्यताओं को बदलने की क्षमता और साहस रखना जरूरी है।

जीवन परिचय– 'वियोगी हरि' उपमानधारी हरिप्रसाद द्विवेदी का जन्म बुन्देलखण्ड स्थित छतरपुर राज्य में चैत्र शुक्ल रामनवमी सं0 1953 वि0 को हुआ था। उनके पिता पं0 बलदेव प्रसाद द्विवेदी कान्यकुंज ब्राह्मण थे। छह मास की अवस्था में ही वियोगी हरि को पितृ वियोग सहना पड़ा। पिता की छाया उठ जाने पर उन्हें अपने ननिहाल रहना पड़ा। यहीं उनकी प्रारम्भिक शिक्षा–दीक्षा भी हुई। घर पर ही उन्होंने हिन्दी–संस्कृत का ज्ञान प्राप्त किया। छतरपुर हाईस्कूल से उन्होंने संवत् 1972 में हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके पश्चात् उन्होंने दर्शन शास्त्र का अध्ययन किया। माध्व–सम्प्रदाय में दीक्षित छतरपुर की महारानी श्रीमती कमलकुमारी 'जुगुल प्रिया' जी का उनपर प्रभाव था। उन्हीं से प्रभावित होकर वे भी 'द्वैतवादी' हो गये। उन्होंने कई बार तीर्थ स्थानों का भ्रमण किया। भारत के सभी तीर्थ स्थानों की उन्होंने यात्रा की। प्रयाग में उनकी भेंट राजर्षि पुरूषोत्तमदास टण्डन से हुई। टण्डन जी ने हिन्दी सेवा के लिए प्रयाग में रोक लिया। वहाँ उन्होंने 'सम्मेलन' पत्रिका का संपादन किया। इसके साथ ही उन्होंने

'संक्षिप्त सूरसागर' का भी सम्पादन किया। संक्षिप्त 'सूरसागर' का सम्पादन करते समय उन्होंने 'तरंगिणी' शीर्षक गद्य काव्य की रचना की। कुछ समय बाद तत्कालीन बंगला के प्रसिद्ध काव्य 'शुकदेव' के आधार पर उन्होंने भी खड़ी बोली के 'शुकदेव' काव्य की रचना की।

महारानी छतरपुर के स्वर्गवास के बाद उनका मन विक्षुब्ध हो उठा। वे संसार से विरक्त हो गये और अपना नाम 'वियोगी हरि' रख लिया। उन्होंने प्रयाग में 'हरितीर्थ' नामक संन्यासाश्रम की स्थापना की। संन्यासग्रहण करने पर भी साहित्स सेवा में लगे रहे । सन् 1932 ई0 में वे 'हरिजन सेवक संघ' में चले गये। यहाँ उन्होंने 'हरिजन–सेवक' का संपादन किया। सन् 1938 में वे हरिजन बस्ती उद्योगशाला के व्यवस्थापक बना दिये गये। उनकी साहित्य सेवा के साथ ही उनकी हरिजन–सेवा भी महत्त्वपूर्ण थी। कराची–हिन्दी–साहित्य सम्मेलन के वे सभापति बनाये गये। सं0 1980 में उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'वीर सतसई' पर उन्हें रू0 1200/– का 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' प्राप्त हुआ। इस धनराशि को उन्होंने साहित्य सम्मेलन को ही दान दे दिया। उनकी एक कहानी 'पाव भर आँटा' पर केन्द्रीय सरकार ने 500/–का पुरस्कार दिया।

वियोगी हरि जी का जीवन अत्यन्त सात्विक था। वे भारतीय संस्कृति में अपारनिष्ठा रखते थे। त्यागमय जीवन और अध्यवसाय ही उनकी पहचान थी। उन्होंने विभिन्न विषयों पर पुस्तकों की रचना की। अपनी रचनाओं से उन्होंने साहित्य और संस्कृति के उन्नयन में अपना योगदान दिया। 9 मई 1988 ई0 को उनका स्वर्गवास हो गया।

रचनाएँ– वियोगी हरि जी ने विविध क्षेत्रों में कार्य किया। उन्होंने काव्य, निबन्ध, नाटक, गद्यकाव्य, आत्मकथा आदि की रचना कर हिन्दी साहित्य का भण्डार भरा। उनकी कृतियाँ निम्नलिखित हैं–

सम्पादित ग्रन्थ–ब्रज माधुरी सार, संक्षिप्त सूरसागर, बिहारी–संग्रह, सूर पदावली, संत वाणी, विनय पत्रिका, हिन्दी गद्य रत्नमाला, तुलसी सूक्ति सुधा, पंचदशी, मीराबाई आदि का पद्य संग्रह और भजनमाला।

मौलिक ग्रन्थ–

1. **काव्य–**प्रेम शतक, प्रेम–पथिक, प्रेमांजलि, प्रेम–परिचय, मेवाड़ केशरी, शुकदेव, असहयोग वीणा, वीर वाणी, श्री गुरु पुष्पांजलि, कवि कीर्तन, अनुराग वाटिका, वीर सतसई।
2. **गद्य काव्य**–तरंगिणी, अन्तर्नाद, प्रार्थना, श्रद्धा कण, ठंडे छींटे, पगली, भावना, गद्य–गीत, उद्यान, मेरी हिमाकत।
3. **निबन्ध–**साहित्य बिहार।
4. **आत्मकथा–**मेरा जीवन प्रवाह।
5. **नाटक–**वीर हरदौल, श्री छद्मयोगिनी वाटिका, प्रबुद्ध यामुन।
6. **धार्मिक और सामाजिक कृतियाँ–**मंदिर प्रवेश, महात्मा गाँधी का आदर्श, योगी अरविन्द की दिव्य वाणी, प्रेम योग, विश्वधर्म, बढ़ते चलो, बुद्धवाणी, गीता में भक्तियोग, व्रत चन्द्रिका, बड़ों के प्रेरणादायक पत्र, बापू, बापा और सरदार।
7. **कहानी–**ना घर मेरा।

वियोगी हरि ने अपनी कृतियों के माध्यम से धर्म, राजनीति, दर्शन सम्बन्धी अपने विचारों को प्रकट किया है। वे प्रमुखतः कवि और गद्य–काव्यकार थे। उनके काव्यों में वीर और शान्त रस का ही प्राधान्य है। 'वीर रसात्मक वीर–सतसई' एक अन्योक्तिमूलक रचना है। उसके माध्यम से उन्होंने देश के युवकों

का चरित्र गठित करने का प्रयास किया है। उनके गद्यकाव्यों में सर्वत्र आध्यात्मिकता का दर्शन होता है। इनमें उनकी भक्ति–विह्वल–आत्मा का स्वर स्पष्टतः सुनायी पड़ता है। भावुकता, सरलता और मधुरता उनके गद्यकाव्यों की विशेषता है। उनके गद्यकाव्यों की भाषा भी प्रसंगानुकूल बदलती रही है।

वियोगी जी ने हिन्दी की महत्त्वपूर्ण सेवा की। उन्होंने हिन्दी साहित्य में नवीनता का समावेश किया। इसीलिए उनका एक वर्ग बन गया था, जिसे 'वियोगी हरि वर्ग' कहते थे।

मूल्यांकन–

- वियोगी हरि का वास्तविक नाम क्या है ? 'वियोगी हरि' नाम कैसे पड़ा ?
- 'वीर सतसई' हेतु उन्हें कौन सा पुरस्कार मिला ?
- वियोगी हरि के काव्य की मुख्य विशेषताएं क्या हैं ?

पाठ–2

श्रुत सामग्री में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रसंगानुकूल प्रयोग

''ध्वनियों के मेल से बने सार्थक वर्णसमुदाय को 'शब्द' कहते हैं।'' शब्द कभी अकेले और कभी दूसरे शब्दों के साथ मिलकर अर्थ प्रकट करते हैं। शब्दों की रचना ध्वनि और अर्थों के मेल से होती है। एक या अधिक वर्णों से बनी स्वतंत्र सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं। जैसे–लड़की, आ, मैं, धीरे, परन्तु इत्यादि। शब्द दो प्रकार के होते हैं। यथा–

1. सार्थक– शब्दों के अर्थ होते हैं।
2. निरर्थक– शब्दों के अर्थ नहीं होते हैं।

जैसे–'पानी' सार्थक शब्द है और 'नीपा' निरर्थक शब्द क्योंकि इसका कोई अर्थ नहीं।

उद्देश्य–

- शब्द भण्डार में वृद्धि करना।
- शब्द भण्डार की दृष्टि से शब्दों का वर्गीकरण करना।
- श्रुत सामग्री में शब्दों का प्रसंगानुकूल प्रयोग करना।

गतिविधि–01 बच्चों को दो भागों में बैठा दें। पहले भाग को 'तत्सम' के कुछ शब्द दे दें तथा दूसरे भाग को 'तद्भव' के कुछ शब्द दे दें। पहला टोली का बच्चा तत्सम का एक शब्द दिखाएगा तथा दूसरी टोली का बच्चा उसी से मिलता जुलता 'तद्भव' शब्द को दिखाएगा। जैसे–दुग्ध – दूध, भगिनी – बहिन, आम्र –आम, अग्नि – आग। प्रत्येक बच्चे से बारी–बारी से यह अभ्यास कराएँ। आप उन्हें प्रोत्साहित करें तथा उनका सहयोग भी करें। टोली बदल कर भी आप इस तरह का अभ्यास करा सकते हैं।

गतिविधि–02 उपरिलिखित गतिविधि का प्रयोग आप 'देशज' और 'विदेशी' शब्दों के लिए भी कर सकते हैं। देशज जैसे–डिबिया, चिड़िया, खिड़की, कटोरा, सुराही।

प्रशिक्षु के लिए–

विदेशी–जैसे–

क़ीमत (अरबी)	(हिन्दी) – कीमत
खूब (फारसी)	(हिन्दी) – खूब
अल्लाह (अरबी)	(हिन्दी) – अल्ला
परवा (फारसी)	(हिन्दी) – परवाह
अफ़सोस (फारसी)	(हिन्दी) – अफसोस
चमूच (तुर्की)	(हिन्दी) – चम्मच
बालाई (फारसी)	(हिन्दी) – भलाई

ऑफीसर, थियेटर, कम्पनी, कमीशन, नर्स, ड्राईवर, प्रेस, फ्रेम, नोटिस, पेन्सिल, नम्बर, पेट्रोल इस तरह अंग्रेजी के शब्दों का प्रचलन हिन्दी भाषा में होता है। क्योंकि भाषा मिश्रित होती है।

मूल्यांकन–इसी तरह अन्य दूसरे शब्दों को देकर तत्सम, तद्भव, देशज एवं विदेशी शब्दों की पहचान बच्चों को करा सकते हैं। प्रश्नों के माध्यम से बच्चे कहाँ तक समझ पाए हैं, आप इसका पता लगा सकते हैं तथा उन्हें अनेक शब्दों को सीखने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

गतिविधि–03–बच्चों की चार टोली बनाएँ। दो टोली में 'उपसर्ग' से बने शब्दों का अभ्यास कराएं तथा दो टोली में 'प्रत्यय' से बने शब्दों का अभ्यास कराएँ। फिर आपस में उन चारो टोली में उपसर्ग वाली टोली से 'प्रत्यय' एवं प्रत्यय वाली टोली से उपसर्ग की पहचान एवं अभ्यास कराएँ। उपसर्ग जैसे– अतिरिक्त, अत्यन्त, अभिभावक, अवशेष। प्रत्यये जैसे–झूला, चौड़ाई, अमावट इत्यादि।

गतिविधि कराते समय शिक्षक निदेश देते रहें तथा उनका सहयोग भी करें।

1–मूल्यांकन–

- शब्द किसे कहते हैं ?
- शब्द कितने प्रकार के होते हैं ?
- सार्थक और निरर्थक शब्दों के अन्तर बताइए।

2–अभ्यास कार्य–निम्नलिखित शब्दों में 'तत्सम' एवं 'तद्भव' शब्द ढूढ़कर लिखिए।

यथा–

क्षीर, द्योतक, चतुष्पादिका, हल्दी, तिक्त, बच्चा, फूल, चौथा, नौ, कृत।

3–पाठ्यपुस्तक में आए 'देशज' एवं विदेशी शब्दों को छँटवाइए। बच्चों से चार्ट भी बनवाइए।

4–'निर्मल' विशेषण के दो भाग हैं। इनमें मूल संज्ञा से पहले निर् उपसर्ग लगा है। निर – रहित, निर्मल – मल से रहित, स्वच्छ। नीचे कुछ संज्ञाएँ दी जा रही हैं। उनमें निर् उपसर्ग लगाकर विशेषण बनाइए और यथास्थान लिखिए–प्रसंगानुकूल वाक्य में प्रयोग कीजिए–

उदाहरण–	**संज्ञा**	**'निर' उपसर्ग से बने विशेषण**
	मल	निर्मल
	आहार	....
	दोष	....
	धन	....
	बल	....
	गन्ध	....

5–निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग को अलग कर कोष्ठक में लिखिए–यथा प्रसंगानुकूल वाक्य में प्रयोग कीजिए–

- अनुपस्थित ( )
- अपवाद ( )
- निबन्ध ( )
- परिणाम ( )
- नापसन्द ( )
- विमल ( )

6–नीचे कुछ उपसर्ग दिए गए हैं। इनमें से दो–दो शब्द बनाकर उपसर्ग के सामने रिक्त स्थानों में लिखिए तथा प्रसंगानुकूल वाक्य में प्रयोग कीजिए–

- परा 1.. 2..

- अप 1.. 2..
- कु 1.. 2..
- सम् 1.. 2..
- निस् 1.. 2..

7–नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं, उनके साथ जो प्रत्यय लगाए गए हैं, उन्हें सामने के कोष्ठक को लिखिए तथा प्रसंगानुकूल वाक्य में प्रयोग कीजिए–

- अड़ियल ( )
- जंगली ( )
- प्यासा ( )
- गेरुआ ( )
- बनैला ( )

8–नीचे कुछ प्रत्यय दिए गये हैं। उनके योग से जो शब्द बनते हैं, उनका एक–एक उदाहरण सामने के कोष्ठकों में लिखिए तथा प्रसंगानुकूल वाक्य में प्रयोग कीजिए–

- पन ( )
- इक ( )
- मान ( )
- त्व ( )
- आहट ( )

9–सुमेलित कीजिए तथा प्रसंगानुकूल वाक्य में प्रयोग कीजिए–

- अव रोध
- परि गम
- उप लोकन
- नि गमन
- उद् पूर्ण
- आ मान

मूल्यांकन–हमने पूर्व में देखा कि शब्दों का निर्माण चार प्रकार से होता है। उपसर्ग द्वारा, प्रत्यय द्वारा, तत्सम, तद्भव, देशज एवं विदेशी शब्दों द्वारा। बच्चों की सुविधा के लिए कुछ गतिविधियाँ एवं उदाहरणस्वरूप कुछ अभ्यास कार्य भी दिये गये हैं। आप स्वयं सोचे और बच्चों से इसी तरह का अभ्यास कराएँ–यथा

(1) सु + पुत्र = सुपुत्र – सुन्दर पुत्र
कु + पुत्र = कुपुत्र – दुष्ट पुत्र

यहाँ उपसर्ग ने पुत्र के पूर्व एक विशेषण जोड़ दिया। अर्थात पुत्र के साथ अच्छा और बुरा विशेषण भी लगा दिया। उपसर्ग हमेशा शब्द के पहले आते हैं। ये अव्यय होते हैं। उपसर्ग के प्रयोग से शब्द के अर्थ बलपूर्वक कहीं से कहीं पहुँच जाते हैं। इससे–

1. शब्द के अर्थ में एक नवीनता आ जाती है, जैसे–भाव – कु + भाव = कुभाव
2. शब्द का अर्थ अपने मूल अर्थ के विपरीत हो जाता है, जैसे योग – वि + योग = वियोग
3. शब्द का अर्थ कुछ बदल जाता है जैसे ख्यात – प्र + ख्यात = प्रख्यात। ज्ञान – वि + ज्ञान = विज्ञान।

(2) उठ + आन = उठान। मिल + आप = मिलाप। मानव + ता = मानवता। अच्छा + आई = अच्छाई।

आन, आप, ता तथा आई प्रत्यय हैं। ऐसे शब्द या शब्दांश जो किसी शब्द के अन्त में जुड़कर नये शब्द बना देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं।

ये प्रत्यय क्रिया की मूल धातु में लगते हैं। जैसे–

चल् + अप = चलन

उठ् + आन = उठान

बैठ् + अक = बैठक

हिन्दी की शब्द सम्पदा का शिक्षण करते समय शिक्षक को चाहिए कि वह सर्वप्रथम बच्चों में इस प्रकार की जिज्ञासा उत्पन्न करें कि बच्चे हिन्दी की शब्द सम्पदा के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए उत्सुक हों। ऐसा करने के लिए उन्हें चाहिए कि वे बच्चों की पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त कुछ तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी शब्दों की सूची का एक चार्ट तैयार करें और उस चार्ट को कक्षा में बच्चों के सम्मुख प्रस्तुत करें। बच्चों को निर्देश दें कि वह चार्ट को ध्यान से देखें। पुनः कुछ समय बाद यदि बच्चे स्वयं प्रश्न नहीं करते हैं तो अध्यापक को चाहिए कि वह स्वयं प्रश्नोत्तर विधि से पाठ का विकास करें और आवश्यकतानुसार कहानी, प्रयोग तथा उद्धरण विधि का प्रयोग करते हुए पाठ को सरस तथा रोचक बनाने का प्रयास करें। उन्हें बताना होगा कि ये सारे शब्द संस्कृत या विदेशी भाषाओं के हो सकते हैं, परन्तु चार्ट पर लिखे गये शब्द तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी ये सभी शब्द हिन्दी के हैं। हिन्दी ने सभी विदेशी भाषाओं के शब्दों को अपनी प्रकृति के अनुकूल अनुकूलित कर ग्रहण कर लिया है। जैसे– बख्शा.–बक्शा, चाइना – चीन, बाग. – बाग इत्यादि।

मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रसंगानुकूल प्रयोग

अरबी भाषा का 'मुहावर' शब्द को हिन्दी में 'मुहावरा' कहते हैं। उर्दू वाले 'मुहाविरा' बोलते हैं। इसका अर्थ 'अभ्यास' या 'बातचीत' है। हिन्दी में 'मुहावरा' एक पारिभाषिक शब्द बन गया है। कुछ लोग 'मुहावरा' को 'रोजमर्रा' या 'वाग्धारा' भी कहते हैं। मुहावरे के प्रयोग से भाषा में सरलता, सरसता, चमत्कार और प्रवाह उत्पन्न होते हैं। इसका काम है बात इस खूबसूरती से कहना कि सुननेवाला उसे समझ भी जाय और उससे प्रभावित भी हो, जैसे–कोई कहे कि 'पेट काटना' तो इससे कोई विलक्षण अर्थ प्रकट नहीं होता। इसके विपरीत कोई कहे कि 'मैंने पेट काटकर अपने लड़के को पढ़ाया' तो वाक्य के अर्थ में लाक्षणिकता, लालित्य और प्रवाह उत्पन्न होगा।

लोकोक्ति के पीछे कोई कहानी या घटना होती है। लोकोक्ति से निकली बात बाद में लोगों की जुबान पर जब चल निकलती है, जब 'लोकोक्ति' हो जाती है अर्थात् जो लोक में प्रचलित हो वही

लोकोक्ति कही जाती है। यथा–'एक पन्थ दो काज' (एक काम से दूसरा काम हो जाना)–दिल्ली जाने से 'एक पन्थ दो काज होंगे।' कवि–सम्मेलन में कविता–पाठ भी करेंगे और साथ ही वहाँ की ऐतिहासिक इमारतों को देखेंगे।

उद्देश्य–

- मुहावरों के प्रयोग से भाषा में सरलता तथा सरसता उत्पन्न करना।
- भाषा में चमत्कार एवं प्रवाह लाना।
- वाक्य में लाक्षणिकता एवं लालित्य का भाव उत्पन्न करना।
- लोकोक्ति के पीछे घटित घटनाओं एवं कहानियों से परिचित कराना।
- लोगों की जुबान पर आई बात को लोकोक्ति कहते हैं, इससे परिचित कराना।
- श्रुत पाठों में मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रसंगानुकूल प्रयोग कराना तथा उसके अर्थ से परिचित कराना।

गतिविधि–1 बच्चों की तीन टोली बना लें। पहली टोली को चार्ट पर लिखे कुछ मुहावरे दे दें। दूसरी टोली को मुहावरों के अर्थ वाले चार्ट दे दें। तीसरी टोली को मुहावरों के वाक्य प्रयोग वाले चार्ट दें। पहली टोली का बच्चा बारी–बारी से एक मुहावरा बोलेगा, दूसरी टोली इस मुहावरे का अर्थ बताएगी तथा तीसरी टोली का बच्चा उसका वाक्य में प्रयोग बताएगा। इस तरह से आप टोली बदलकर मुहावरों का अर्थ एवं वाक्य में प्रयोग का अभ्यास करा सकते हैं।

मूल्यांकन–बीच–बीच में प्रश्नों के माध्यम से बच्चों का मूल्यांकन करते चलें तथा यह पता करें कि बच्चे मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग कहाँ तक समझ पा रहे हैं। श्रुत पाठों या वाक्यों का प्रयोग एवं अर्थ समझ पा रहे हैं या नहीं ?

प्रश्न–

- मुहावरा से आप क्या समझते हैं ? उदाहरण सहित समझाइए।
- लोकोक्ति किसे कहते हैं ? कोई एक उदाहरण दीजिए।

शिक्षक के लिए–

लोकोक्ति और मुहावरे में अन्तर

मुहावरा	**लोकोक्ति**
मुहावरे शब्द या वाक्यांश होते हैं तथा वाक्य में प्रयुक्त होकर ही पूरा अर्थ देते हैं।	लोकोक्ति का वाक्य प्रयोग नहीं होता, क्योंकि वह स्वयं में भरपूर अर्थ लिए होती हे।
इनका स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता।	लोकोक्ति का स्वतंत्र प्रयोग होता है।
मुहावरों के अन्त में प्रायः 'ना' प्रत्यय लगा रहता है, जैसे–होश उड़ना, बात बनाना, नौ दो ग्यारह होना।	लोकोक्ति के पीछे कोई घटना या कहानी छिपी होती है।
मुहावरे वाक्य के भीतर कभी कर्ता, कभी कर्म तथा क्रिया आदि के रूप में होता है।	लोकोक्ति वाक्य के भीतर नहीं समाती वे आरम्भ या अन्त में प्रयुक्त होती है।

अभ्यास कार्य–

1–नीचे लिखे मुहावरों का अर्थ लिखिए–

- आँखों का तारा होना..
- उल्टी गंगा बहाना..
- गाँठ बाँध लेना...
- हथियार डालना..

2–नीचे लिखे मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

- टोपी उछालना...
- लकीर का फकीर होना......................................
- अंधे की लकड़ी होना..
- तिल का ताड़ करना...

3–नीचे लिखे लोकोक्तियों का प्रयोग कीजिए–

- का वर्षा जब कृषि सुखाने....................................
- अंधों में काना राजा...
- ऊँट के मुँह में जीरा..
- चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात...............

4–नीचे लिखे मुहावरों एवं लोकोक्तियों के अर्थ लिखिए–

- फूले न समाना...
- पनी–पानी होना...
- अधजल गगरी छलकत जाय............................
- लहू पसीना एक करना...............................
- खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है............

5–सुमेलित कीजिए–

(क) अंग अंग खिलना	मूर्खों में थोड़ा विद्वान
(ख) अंधों में काना राजा	प्रसन्न होना
(ग) कन्धा लगाना	बहुत अधिक प्यारा
(घ) आँख दिखाना	टालना
(ड.) आँखों का तारा	सहारा देना
(च) अनसुनी करना	डराना

मूल्यांकन

मुहावरे अर्थ तथा प्रयोग–

मुहावरा	अर्थ

अगर–मगर करना, टाल मटोल करना, बहाना करना

वाक्य प्रयोग–अभी कल ही तुमने अपनी किताबें मुझे देने का वचन दिया था और आज अगर–मगर करने लगे।

1–छोटा मुँह बड़ी बात–औकात से अधिक बढ़–चढ़कर बोलना।

वाक्य प्रयोग–बांग्ला देश भी अब कभी–कभी भारत के विरूद्ध छोटा मुँह बड़ी बात करने लगा है।

लोकोक्तियाँ, अर्थ एवं प्रयोग–

2–इधर कुँआ उधर खाई–दोनों ओर खतरा।

वाक्य प्रयोग–रहमान विद्यालय में मारपीट करके अब परेशान है, विद्यालय न जाने पर नाम कट जायेगा और जाने पर फिर पिटाई होने का भय है। उसके लिए तो– इधर कुँआ उधर खाई।

3–एक और एक ग्यारह होता है–संगठन में ही शक्ति होती है।

वाक्य प्रयोग–मिलकर काम करने से बड़ा से बड़ा कार्य देखते ही देखते पूरा हो जाता है। इसीलिए कहा गया है–एक–एक ग्यारह होता है।

4–सुमेलित कीजिए–

क	**ख**
पाला पड़ना	कठिनाई से भोजन मिलना
मुँह तोड़ जवाब देना	प्रण का पक्का
रंग चढ़ना	मुकाबला होना
रोटियों के लाले पड़ना	विजय पाना
बात का धनी	कड़ा उत्तर देना
मैदान मारना	असर पड़ना

5–नीचे लिखे वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति संबंधित मुहावरों से कीजिए–

(क) पुलिस को देखते ही वह अपराधी सिर पर..................................भाग गया।

(ख) पवन ने पाँच वर्ष की अवस्था में अपनी पढ़ाई का श्री....................किया।

(ग) प्रतिभावान छात्र सदैव अपने प्रिय शिक्षकों को सिर आँखों..........................है।

(घ) हमें सदैव अपना काम हवा का रूख..करना चाहिए।

(ड.) आलसी लोग सदैव हाथ पर ....बैठे रहते हैं।

(च) हाईस्कूल परीक्ष ामें प्रथम स्थान प्राप्त कर दिनेश बाँसों............................... ।

प्रशिक्षु के लिए–

- लोकोक्ति एक सामासिक पद है। लोक और उक्ति से उसकी रचना हुई है। अतः लोकोक्ति का शाब्दिक अर्थ हुआ लोक में प्रचलित उक्ति।
- लोकोक्ति में ही कहावतें, पहेलियाँ व सूक्तियाँ आती हैं, जबकि लोकोक्ति का रूढ़ अर्थ है 'कहावत'।
- 'कहावत' का अर्थ है ऐसी उक्तियाँ जिनमें युग–युग की मानव अनुभूतियाँ सूत्रबद्ध हों।
- लोकोक्तिया गाकर में सागर वाली उक्ति को चरितार्थ करती हैं।

- लोकोक्तियों का संसार इतना विस्तृत है कि जीवन का कोई कोना इससे अछूता नहीं है। यह हमारे सुख–दुःख, जीवन–मरण, रीति–रिवाज, खान–पान, पशु–पक्षी, खेती–बारी, शकुन–अपशकुन से जुड़ी हुई हैं।
- लोकोक्ति उद्भव के तीन स्रोत हैं–घटना, पहेली, लोककथा।
- यह हमारी अभिव्यक्ति को चमत्कारपूर्ण एवं प्रभावपूर्ण बना देती हैं।

मुहावरों एवं लोकोक्तियों का शिक्षण–

भाषा में लालित्य एवं चमत्कार लाने के लिए मुहावरों एवं लोकोक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है। इनके प्रयोग से विचारों की अभिव्यक्ति सरल, सरस, मार्मिक एवं सशक्त हो जाती है। भाषा में अनुठापन, प्रवाह एवं प्रभाव इन्हीं के प्रयोग से आता है। अतः छात्रों को मुहावरों एवं लोकोक्तियों का शिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि गद्य एवं निबन्ध शिक्षण या रचना करते समय छात्र उनका प्रसंगानुकूल प्रयोग कर सकें। पद्य, नाटक, कहानी के शिक्षण के समय भी इन पाठों में आए हुए मुहावरों एवं लोकोक्तियों का स्पष्टीकरण करते रहना चाहिए ताकि छात्र उसे पहचान सके एवं अधिक से अधिक अभ्यास कर सकें। आवश्यकता पड़ने पर अलग से पाठ योजना बनाकर शिक्षण किया जा सकता है।

- श्रुत सामग्री में प्रयुक्त शब्दों, लोकोक्ति और मुहावरों का प्रसंग के अनुसार प्रयोग कैसे करना है–यह बात स्पष्ट नहीं हुई है। इसे स्पष्ट करना जरूरी है।
- मूल्यांकन, अभ्यास कार्य और फिर मूल्यांकन लगातार में क्रम कुछ ठीक नहीं लग रहा है।

पाठ–3
राष्ट्रीय पर्वों, मेला, त्योहार जैसे विषयों पर अपने शब्दों में गद्य अथवा पद्य में स्वतंत्र लेखन

लेखन प्रक्रिया–
- **उद्देश्य**
- **विषय विस्तार**
- **स्वतंत्र लेखन की शिक्षण विधि/गतिविधि क्रमशः 1 से 7 तक**
- **मूल्यांकन**

उद्देश्य–
- विद्यार्थियों में अपने विचारों एवं भावों को शुद्ध लेखन द्वारा भाषा में प्रकट करने की योग्यता का विकास करना।
- उनमें ऐसी क्षमता उत्पन्न करना कि वे किसी भी विषय को भली प्रकार समझकर उसे अपने शब्दों में व्यक्त कर सके।
- उनकी भाषा और शैली को सुव्यवस्थित बनाना।
- उनकी बौद्धिक शक्तियों का विकास करना।
- उनमें समीक्षात्मक प्रवृत्ति को जागृत करना तथा उनके दृष्टिकोण को समीक्षात्मक बनाना।
- हिन्दी भाषा तथा साहित्य के प्रति अनुराग पैदा करना।
- उन्हें स्वतंत्र लेखन के लिए प्रोत्साहित करना।

विषय विस्तार–

भाषा शिक्षण के उद्देश्यों में एक प्रमुख उद्देश्य यह है कि विद्यार्थियों के अन्तर्निहित भावनाओं और विचारों को सुअवसर देकर उनका पूर्ण विकास करना। उनकी विचार शक्ति और कल्पना शक्ति में वृद्धि करना। यदि बोलचाल और लेखन की शिक्षा का समुचित आयोजन किया जाये तो बच्चों की विचार शक्ति और कल्पना शक्ति विकसित होती हुई स्वतंत्र अभिव्यक्ति का अपना मार्ग स्वतः बनाती चली जाएगी। दूसरे शब्दों में लिखित रचना के अवसर देते हुए विद्यार्थियों के सृजनात्मक प्रतिभा को जागृत और स्वतंत्र भाव प्रकाशन की क्षमता प्रदान कर उन्हें साहित्य सृजन के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

शिक्षक/प्रशिक्षक के रूप में नवीनता, व्यक्ति भावों की सजगता, शब्दों के चयन आदि पर हम विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करते हुए उनके लेखन को परिष्कृत करते रहें।

स्वतंत्र लेखन का अवसर देने पर विद्यार्थियों के व्यवहार में निम्नलिखित परिवर्तन देखे जा सकते हैं–
- अपने विचार को शुद्ध भाषा में प्रकट करने हेतु अग्रसर होंगे।
- उनके संचित शब्द कोष में वृद्धि होगी।
- तर्क–संगत ढंग से सोच सकते हैं।

- विचार और भावों के अनुरूप लेखन शैली अपना सकते हैं।
- सत्साहित्य सृजन के लिए प्रेरित हो सकते हैं।

विद्यार्थी स्वतंत्र ढंग से कुछ लिख सके इसके लिए शिक्षक/प्रशिक्षक को उन्हें चरण दर चरण लेखन की दिशा में आगे बढ़ने को प्रोत्साहित करना चाहिए। अचानक कोई विषय देकर उस पर लम्बी–चौड़ी बात लिखने को देना न तो समझदारी कही जाएगी और ना ही ऐसा करना बच्चों के हिसाब से न्यायसंगत होगा। बच्चे इस राह में सरपट दौड़ लगा सकें इसके लिए आवश्यक होगा कि हम पहले उन्हें धीरे–धीरे चलना सिखाएं। इसके लिए बच्चों के बीच कुछ संगत असंगत शब्द रखकर उस पर वाक्य निर्माण कराया जाए, जैसे–होली, छाता, कुर्सी–ऐसे ही कुछ शब्द देकर प्रत्येक बच्चे से उस पर वाक्य बनाने को कहें। जब बच्चे ऐसा कर ले तो उन्हें वाक्य देकर अनुच्छेद का निर्माण करने को कहें और जब अनुच्छेद बन जाए तो उसे कविता, संस्मरण, निबन्ध आदि किसी विधा में बढ़ाने को कह सकते हैं।

कुछ ही प्रयासों में आप पाएंगे कि बच्चे स्वतंत्र लेखन में आगे बढ़ रहे हैं और तब उन्हें अपने लेखन को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए कुछ बातों पर विशेष ध्यान देने की सलाह देनी चाहिए, जैसे–

- जिस विषय पर आपको लिखना है उस विषय से सम्बन्धित पर्याप्त ज्ञान होना आवश्यक है। इसके लिए विषय से सम्बन्धित सामग्री को विचार–विमर्श, परिचर्चा एवं विषय आधारित पुस्तकों की सहायता से एकत्र करना चाहिए।
- लेखन के रुप एवं विधा के अनुरुप शैली का चुनाव करना चाहिए। जैसे निबंध, कहानी, नाटक, एकांकी आदि की शैली में पर्याप्त भिन्नता है। इस प्रकार वार्त्तालाप एवं कविता लेखन की अपनी अलग शैली होती है। अतः लेखक को विधा के अनुरुप ही शैली का भी प्रयोग करना चाहिए।

  (शिक्षक/प्रशिक्षक को विधागत शैली का अन्तर विद्यार्थियों को स्पष्ट कर देना चाहिए। पाठ्यपुस्तक से किसी साहित्यकार की रचना पढ़ाते समय उसकी भाषा शैली की ओर विद्यार्थियों का ध्यान आकृष्ट करना चाहिए।)
- तथ्यों, प्रमाणों के साथ ही आदर्श रचना के उदाहरण द्वारा भी अपनी रचना को आकर्षक बनाया जा सकता है। पाठ्य–पुस्तक के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों एवं पत्र–पत्रिकाओं से ऐसे उदाहरण संकिलत किये जा सकते हैं।
- निरीक्षण शक्ति का विकास करना। विविध स्थानों, प्राकृतिक दृश्यों, घटनाओं एवं क्रिया–कलापों के स्वयं निरीक्षण के आधार पर लिखी गई रचना अधिक आकर्षक एवं प्रभावपूर्ण होती है।
- कल्पना शक्ति का विकास करना। सृजनात्मक अभिव्यक्ति के मूल में कल्पना होती है। अतः विद्यार्थियों को नई–नई कल्पना करने को प्रोत्साहित करना चाहिए।

- किसी भी विषय, वस्तु, दृश्य या घटना को अपने दृष्टिकोण से देखना। सुनी–सुनायी या परम्परा में प्रचलित बातों की जगह किसी भी विषय का आकलन अपने तर्क और विवेक से करना चाहिए। विषयान्तर से बचना चाहिए।
- भाषा सरल, सुबोध तथा विषय के अनुरुप होनी चाहिए।
- विषय वस्तु अनुच्छेद में बँाटी होनी चाहिए।
- बार–बार एक ही बात न दोहराएं।
- विषय से सम्बन्धित काव्य पंक्तियों, सूक्तियों आदि का प्रयोग करें।
- अप्रासंगिक बातों का समावेश नहीं होना चाहिए।
- भाव विस्तार में उचित क्रम का ध्यान रखना चाहिए।
- लम्बी चौड़ी भूमिका से बचना चाहिए।
- किसी भी विषय को पक्ष और विपक्ष दोनों दृष्टियों से विचार करके ही लिखना चाहिए।

<u>स्वतंत्र लेखन की शिक्षण विधि</u> –

1–प्रश्नोत्तर विधि–शिक्षक/प्रशिक्षक विद्यार्थियों/प्रशिक्षणार्थियों से जिस विषय अथवा शीर्षक पर स्वतंत्र लेखन कराना है उससे सम्बन्धित कुछ प्रारम्भिक बातें करते हुए उनसे विषय से जुड़े प्रश्न पूछते हुए उनके उत्तर द्वारा इस दिशा में लेखन के लिए प्रोत्साहित कर सकता है। जैसे–यदि 'ताजमहल' पर स्वतन्त्र लेखन कराना है तो यह आवश्यक है कि उन्हें ताजमहल से सम्बन्धित मूलभूत बातों का पहले से ज्ञान हो–इस दृष्टि से आप सन्तुष्ट हो तो उनसे इस प्रकार से वार्त्तालाप का प्रश्न पूछा जा सकता है–

प्रशिक्षक–संसार के सात आश्चर्य माने जाते हैं, उनमें ताजमहल को भी आश्चर्य में गिनते हैं, बताइए–

- ताजमहल का निर्माण किसने किया था?
- ताजमहल क्यों बनवाया गया ?
- यह यमुना के किस किनारे पर स्थित है?
- इसके (भवन के) चारो ओर आप क्या देखते हैं?
- यह किस पत्थर का बना है?
- इसको देखने के लिए कहाँ–कहाँ से यात्री आते है?

मूल्याकंन–

- प्रश्न को सही ढ़ग से समझ पा रहे है या नहीं।
- प्रश्नों के दिये गए उत्तर में अपनी बात क्रम से लिख सके या नहीं। प्रयुक्त किये गए शब्दों में कहीं कोई अशुद्ध तो नहीं।

2–कथात्मक विधि (उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए)–इसके अन्तर्गत शिक्षक/प्रशिक्षक किसी महापुरुष, मेला या अन्य किसी भी विषय पर विस्तार से बताए या पढ़कर सुनाए। सुनी हुई विषयवस्तु पर विद्यार्थियों/प्रशिक्षुओं से उनकी सुविधानुसार निबन्ध, कविता या कहानी लिखने को प्रोत्साहित करे। जैसे–'महात्मा गाँधी' पर लेखन कार्य करना है तो पहले यह आवश्यक है कि गाँधी जी कौन थे? उन्होंने

देश के लिए क्या किया? आदि बातों को बच्चे अच्छी तरह से जान लें। अतः शिक्षक बच्चों के बीच गाँधी जी के बचपन, उनकी शिक्षा, विवाह, उनके व्यवसाय (वकालत), उनकी अफ्रीका यात्रा, भारत वापसी, स्वाधीनता संधर्ष में उनकी भूमिका, सत्याग्रह और अन्त में उनके निधन तथा उनके जीवन से प्रेरणा आदि पर विस्तार से चर्चा करे। उसके बाद विद्यार्थियों से सुनी हुई बातों को अपने ढंग से लिखने को कहें।

कुछ अन्य बातें–शिक्षक/प्रशिक्षक कक्षा में किसी विषय पर निबन्ध लेखन का कार्य करा रहे हों तो निबन्ध लेखन देने से पहले उसके कलेवर को स्पष्ट करना आवश्यक है जिससे विद्यार्थी अपने लेखन की पूर्ण प्रतिभा का परिचय दे सके। वस्तुतः निबन्ध को क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने के लिए सामान्यतः तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है–

(1) प्रारम्भ (प्रस्तावना), (2) मध्य (विषयवस्तु) (3) अन्त (उपसंहार)

प्रारम्भ और अन्त प्रभावशाली रूप में लिखना चाहिए। इसके साथ ही विषयवस्तु के अनुकूल सामग्री का विभाजन कर लेना चाहिए। प्रत्येक खण्ड या संकेत का वर्णन पृथक अनुच्छेद में करना चाहिए। भाषा सरल, सरस एवं स्पष्ट होनी चाहिए। व्यक्त किये गये विचारों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। वर्तनी शुद्ध होनी चाहिए तथा विराम चिह्नों का उचित प्रयोग किया जाना चाहिए।

इस तरह की कुछ बातें बताते हुए विद्यार्थियों को अलग–अलग कक्षाओं में लेखन कार्य का अभ्यास कराया जाना चाहिए जिससे उनकी अभिव्यक्ति को एक सुगठित रूप मिल सके।

मूल्यांकन–

- निबन्ध की भाषा कैसी होनी चाहिए?
- निबन्ध लेखन में किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
- विद्यार्थी विषय विशेष पर अपनी बात रखने में समर्थ हैं या नहीं।
- विचारों में क्रमबद्धता है या नहीं।

3–अभिनय द्वारा–देखी हुई दृश्य और घटनाएँ बच्चों के मन–मस्तिष्क को गहराई से प्रभावित करती हैं। अतः उनके समक्ष किसी पर्व, त्योहार या महापुरुष के जीवन चरित को अभिनय के रूप में प्रस्तुत किया जायेगा तो वे उसके सभी पहलुओं से परिचित होने के साथ ही बड़े चाव से उस पर अपने विचार लिखने में समर्थ होंगे। जैसे–यदि बच्चों के समक्ष पिंजरे में कैद पक्षी की फड़फड़ाहट दिखाते हुए भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष, ब्रिटिश हुकूमत के अलावा और स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए क्रान्तिकारियों द्वारा किये गये त्याग और बलिदान के साथ ही किस प्रकार भारत देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुई, यह दृश्य अभिनय द्वारा दिखाया जाए तो वे स्वतः स्वतंत्रता का अभिप्राय और महत्त्व समझते हुए '15 अगस्त' पर अपने विचार/भाव लिखने को उत्साहित होंगे। इस विधि से कार्य करते हुए इतना ध्यान रखना चाहिए कि संवादों की भाषा सरल, स्पष्ट और बच्चों की समझ वाली हो।

4–वार्तालाप के द्वारा–

शिक्षक विद्यार्थियों से उनके अनुभव से जुड़ी कुछ बातों पर वार्तालाप करते हुए भी उन्हें स्वतंत्र लेखन की प्रेरणा देने में समर्थ हो सकते हैं। जैसे–क्या आप लोगों ने कोई मेला देखा है? मेरे गाँव में तो बैसाखी का मेला लगता है। क्या आपके गाँव के आस–पास भी कोई मेला लगता है? वह मेला कब

और जिस जगह लगता है? क्या आप मेला घूमने जाते हैं? आपने मेले में क्या–क्या देखा? मेले में कौन–कौन सी दुकाने लगती हैं? आपको उसमें सबसे अच्छा क्या लगता है? आदि।

वार्तालाप के बाद विद्यार्थियों से मेले के अनुभव को, देखे गये दृश्य को, आकर्षक वस्तु आदि पर लिखने को कहें।

चित्रों की सहायता से–

शिक्षक होली, दीपावली, ईद या दशहरा आदि किसी भी त्योहार से सम्बन्धित विविध चित्रों को जिसमें उस त्योहार को मनाने का सन्दर्भ, मनाने का समय, ढंग, लाभ आदि समाहित हो विद्यार्थियों को दिखाते हुए उस पर बातचीत करते हुए अपने भाव और विचार लिखने को प्रोत्साहित करें।

जैसे–होली, दशहरा से सम्बन्धित।

चित्र

मूल्यांकन–

- सभी बच्चों की सहभागिता है या नहीं।
- अपनी बात स्पष्ट ढंग से बोल/लिख पा रहे या नहीं।
- उपयोग किये गए शब्द मानकी की दृष्टि से सही है या नहीं।

विषयवस्तु के कुछ अंश देकर–किसी भी विषय से शीर्षक से सम्बन्धित कुछ अंश श्यामपट्ट पर लिखकर खाली या रिक्त अंशों को भरते हुए विषय पर आगे अपने विचार लिखने को कहें, जैसे–

भारत में त्योहार

जीवन में त्योहारों का अपना विशेष महत्त्व...भारत में अनेक जाति, धर्म, सम्प्रदाय के लोग परस्पर प्रेमपूर्वक ....सभी धर्म और सम्प्रदाय के लोगों का अपना एक विशेष............................सभी धर्म और सम्प्रदाय के लोगों का त्योहारों को मिलजुल कर मनाना.................... महापुरूषों देवी–देवताओं के जन्मदिन से जुड़े त्योहार.....................................नववर्ष पर मनाये जाने वाले त्योहार................................प्रकृति से जुड़े त्योहार.................................धर्म विशेष से जुड़े त्योहार...................... राष्ट्रीय त्योहार....................त्योहार से जुड़ा मनोरंजन.................भारत को पर्वों और त्योहारों का देश कहा जाता है।

संस्मरण लेखन–

संस्मरण वह रचना है जिसका सम्बन्ध लेखक की स्मृति से है। भावुक लेखक अपनी स्मृति में सुख–दुःख, हास्य–विनोद, खट्टे–मीठे अनेक प्रकार के अनुभवों को अपने स्मृति पटल पर संजोए रहता है। अवसर पाते ही वह उन विचारों को एक लिखित आकार दे देता है। इसमें कल्पना की मात्रा कम और भोगी हुई अनुभूति अधिक होती है। इसमें लेखक अनुभूत दृश्य, घटना का विवरण तो देता ही है वह अपनी व्यक्तिगत छाप भी उसमें जोड़ देता है। अपनी पसन्द–नापसन्द भी जोड़ देता है।

सामान्यतः संस्मरण किसी प्रसिद्ध व्यक्ति, दृश्य या घटना से सम्बद्ध होते हैं। विद्यार्थियों को इस प्रकार का साहित्य पढ़ने तथा अपने संस्मरण लिखने को प्रोत्साहित करना चाहिए।

विद्यार्थियों द्वारा लिखे गए संस्मरण कक्ष में पढ़कर सुनाए जाएँ। शिक्षक स्वयं भी रोचक संस्मरण कक्ष में पढ़कर सुनाए।

विद्यार्थियों के संस्मरण उनका 'स्कूल का पहला दिन'' 'प्रिय शिक्षक', स्काउटिंग, 'तालाब में डूबते हुए को बचाना' आदि विषयों पर हो सकते हैं।

तुकान्त शब्दों के अभ्यास द्वारा–विद्यार्थियों से एक, दो, तीन, चार आदि शब्दों की तुक मिलाने का अभ्यास कराया जाए। इसी प्रकार एक छोटे वाक्य की तुक मिलाने का अभ्यास कराया जाए। किसी कविता की पंक्ति देकर 8 से 12 पंक्तियों की कविता लिखवाई जा सकती है। इस अभ्यास के बाद किसी सामाजिक समस्या मेला, पर्व या त्योहार पर कविता लिखने का अभ्यास किदया जा सकता है। जैसे–

एक, दो, तीन, चार,
आओ चले कुतुबमीनार।
पाँच, छः, सात, आठ,
देख चल के राजघाट।
नौ, दस, ग्यारा, बारा,
चले चाँदनी चौक फव्वारा।
तेरा, चौदा, पन्द्रा, सोला,
कनाट प्लेस में मुर्गा बोला।

सर्वेश दयाल सक्सेना

इसके अतिरिक्त शिक्षक/प्रशिक्षक विद्यार्थियों/प्रशिक्षुओं से

- कुछ महत्त्वपूर्ण दिनों की डायरी लिखना
- पठित अध्याय को अपनी भाषा शैली में लिखना
- पठित कहानी को संवादों में लिखना
- पठित गद्यात्मक अंश को पद्यात्मक रूप देना
- विविध स्रोतों से आवश्यक सामग्री एकत्र करके अभीष्ट विषय पर अपनी भाषा–शैली में लिखना आदि के माध्यम से भी गद्य और पद्य में स्वतंत्र लेखन को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

पाठ–4
कर्ता, कर्म के अनुसार क्रिया में परिवर्तन

उद्देश्य–

- कर्ता, कर्म के अनुसार क्रिया में परिवर्तन लाने की समझ विकसित करना।
- वाक्य रचना के लिए कर्ता, कर्म एवं क्रिया का होना आवश्क है इसकी जानकारी देना।
- वाक्य रचना की समझ को सुदृढ़ता प्रदान करना।

गतिविधि–01 (बड़े समूह में)–क्रिया से कार्य के होने का बोध होता है।

- राम स्कूल गया।
- श्याम गाना गा रहा है।
- उसकी कलम खो गयी।
- माला ने चावल पकाया।
- मैंने सेब खरीदा।

ऊपर के वाक्यों में गया, गा रहा है, खो गयी, पकाया, खरीदा–द्वारा किसी कार्य के होने का बोध हो रहा है, अतः ये सभी क्रियाएँ हैं।

''जिन शब्दों से किसी कार्य के होने या करने का बोध होता है, उन्हें क्रिया कहते हैं।''
जैसे–गाना, जाना, खोना, पढ़ना, लिखना आदि। क्रिया वाक्य का मुख्य अंग है। इसके बिना वाक्य पूरा नहीं होता।

क्रिया का मूल रूप– क्रिया के मूल रू‹ को धातु कहते हैं, जैसे–तू जा, तू पढ़, तू चल, तू सो। ये हिन्दी के धातु हैं जो (जाना), पढ़ (पढ़ना), चल (चलना), सो (सोना) आदि क्रिया के मूल रूप या धातु हैं।
क्रिया का सामान्य रूप– क्रिया के मूल धातु में 'ना' प्रत्यय जोड़ने से क्रिया का सामान्य रूप बनता है, जैसे–

जा + ना = जाना	खा + ना = खाना	पा + ना = पाना
पढ़ + ना = पढ़ना	रो + ना = रोना	हँस + ना = हँसना

इन्हें यौगिक धातु भी कहते हैं।

गतिविधि–02

राम दौड़ता है। यह एक वाक्य है। इन वाक्य में किन पदों का प्रयोग हुआ है इसकी पुष्टि हेतु उपर्युक्त वाक्य पर निम्नलिखित प्रश्न करें–

कौन दौड़ता है ?

उत्तर होगा–राम दौड़ता है।

कौन के उत्तर में 'राम' आया है जो दौड़ने की क्रिया करता है। अतः कार्य करने वाले को कर्ता कहते हैं।

राम खेलता है।

वह पढ़ता है।

वह जाता है।

उपर्युक्त वाक्यों को दृष्टिगत रखते हुए प्रश्न करें–राम क्या करता है ? उत्तर होगा खेलता है, पढ़ता, जाता है। ये शब्द क्रिया हैं।

मूल्यांकन–

- कर्ता की पहचान आप कैसे करेंगे, उदाहरण सहित समझाइए।
- क्रिया के कुछ उदाहरण दीजिए ?
- नीचे लिखी क्रिया का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) जायेंगे.. ।
(ख) पढ़ाया.. ।
(ग) आए... ।
(घ) रहा था.. ।
(ड.) दिखाया... ।

गतिविधि–03

क्रिया के भेद पर दो प्रकार से विचार किया जाता है–

1. कर्म के आधार पर क्रिया के भेद।
2. प्रयोग और संरचना के आधार पर क्रिया के भेद।

1–कर्म के आधार पर क्रिया के भेद–

1. सकर्मक क्रिया।
2. अकर्मक क्रिया।

सकर्मक क्रिया–जैसे–

1. वीणा पत्र लिखती है।
श्यामा आम चखती है।
राम खाना खाता है।
वीणा क्या लिखती है ? – पत्र।
श्यामा क्या चखती है ?– आम।
राम क्या खाता है ?– खाना।

2. मोहन पढ़ता है।
अवनीश गाता है।
पिताजी पढ़ाते हैं।

उदाहरण–1 के वाक्यों में क्रमशः पत्र, आत तथा खाना कर्म है। इसलिए इनके साथ कर्म नहीं है, फिर भी कर्म के होने की सम्भावना है–जैसे–क्या पढ़ता है ? पुस्तक या कविता, क्या गाता है ? कजली या गीत। क्या पढ़ाते हैं ? हिन्दी, संस्कृत या गणित। अतः ये क्रियाएँ भी सकर्मक हैं।

''जिन क्रियाओं के साथ कर्म की अपेक्षा होती है, उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं।''

मूल्यांकन–

- क्रिया के कितने भेद हैं ?
- सकर्मक क्रिया को उदाहरण सहित समझाइए।

गतिविधि–4

2 अकर्मक क्रिया–जैसे–

- मधुलिका सोती है।

- शफीक जाग रहा है।
- बच्चा रात भर रोता रहा।
- वह सातवीं कक्षा में पढ़ता है।
- वह नित्य खेलता है।

इन वाक्यों में क्रिया–सोती है, जाग रहा है, रोता रहा, का फल सीधे कर्ता (मधुलिका, शफीक तथा बच्चा) पर पड़ता है। ये अकर्मक क्रियाएँ हैं। पढ़ना, खेलना सकर्मक क्रियाएँ हैं, किन्तु ऊपर के वाक्य में वे अकर्मक के रूप में प्रयुक्त हैं। क्या, किसे, किसको आदि प्रश्नों द्वारा इनका उत्तर नहीं आता।

पहचान– क्रिया के साथ 'क्या', 'किसे', या 'किसको' प्रश्न करने पर कुछ उत्तर मिले तो क्रिया सकर्मक होती है। कोई उत्तर न मिले तो क्रिया अकर्मक होती है।

'' अकर्मक क्रिया उसे कहते हैं, जिसमें क्रिया का कर्म न हो (न उसके होने की सम्भावना हो) और उसके कार्य–व्यापार का फल कर्ता पर पड़ता हो।''

मूल्यांकन–

- अकर्मक क्रिया किसे कहते हैं ?
- अकर्मक क्रिया की पहचान हम कैसे करेंगे ? उदाहरण सहित बताइए।
- कुछ वाक्य दिये गये हैं, इनमें से सकर्मक तथा अकर्मक क्रिया छाँटकर सामने लिखिए–
- वे लड़ रहे हैं।..
- मैं फूॅटबाल खेलने जाऊँगा।..
- वह भूल गया।...
- वह गीत गा रही है।......................................
- तुम मुझे भूल गये।..
- मैं खेलने जाऊँगा।...

वचन के अनुसार क्रिया में परिवर्तन

यथा–

गतिविधि–(बड़े समूह में)

- तोते उड़ गए।
- चिड़िया बैठी है।
- दरवाजे पर एक बिल्ली खड़ी है।
- दरवाजे पर दो बिल्लियाँ खड़ी हैं।
- एक लड़की रो रही है।
- चार लड़कियाँ खेल रही हैं।

इन वाक्यों में चिड़िया, बिल्ली, लड़की से एक चिड़िया, एक बिल्ली तथा एक लड़की का बोध

हो रहा है, किन्तु तोते, बिल्लियाँ और लड़कियों से एक से अधिक संख्या का बोध हो रहा है।
नोट–संस्कृत में तीन वचन होते हैं–एकवचन, द्विवचन, बहुवचन। किन्तु हिन्दी और अंग्रेजी में केवल दो वच नही होते हैं।

1. एकवचन–किसी एक वस्तु का बोध हो।
2. ब्हुवचन–एक से अधिक वस्तुओं का बोध हो। वचन में कर्ता और कर्म के हिसाब से क्रिया में परिवर्तन होता है।

मूल्यांकन–

- वचन किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित समझाइए।
- वचन के कितने प्रकार होते हैं ?
- संस्कृत में कितने वचन होते हैं ?

उदाहरण–लिंग के अनुसार क्रिया में परिवर्तन।
यथा–

- विमला स्कूल जा रही है।
- रितेश सो रहा है।
- कुर्सी बहुत अच्छी है।
- तख्त भी बहुत अच्छा है।
- बंदर नाच रहा है।
- बँदरिया भी नाच रही है।

ऊपर के वाक्यों में विमला, कुर्सी, बँदरिया–स्त्री जाति के हैं और रितेश, तख्त तथा बन्दर पुरुष जाति के हैं। इसीलिए उनके साथ प्रयुक्त क्रियाओं के रूप में भी अंतर है।

''स्त्री और पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्दों को लिंग कहते हैं।''

पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के नियम

'ई' जोड़कर	**पुल्लिंग**	**स्त्रीलिंग**
	लड़का	लड़की
	अच्छा	अच्छी
'ईया' जोड़कर	बूढ़ा	बूढ़िया
	डिब्बा	डिबिया
'इन' जोड़कर	बाघ	बाघिन
	नाग	नागिन
'आइन' जोड़कर	हलवाई	हलवाइन
	गुरु	गुरुआइन
'आनी' जोड़कर	सेठ	सेठानी
	देवर	देवरानी
'इका' जोड़कर	बालक	बालिका

सेवक सेविका

मूल्यांकन–

- लिंग किसे कहते हैं ? उदाहरण दीजिए।
- 'नी' और 'आ' प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाइए।

  गतिविधि दो में आपने समझा कि दौड़ने की क्रिया करने वाले को कर्ता कहते हैं।
- राम खेलता है।
- वह पढ़ता है।

राम क्या खेलता है ? वह क्या पढ़ता है ? क्या के उत्तर में गेंद एवं किताब आदि पद आते हैं, जिन्हें कर्म कहते हैं। वाक्य रचना हेतु कर्ता+कर्म+ क्रिया या कर्ता+क्रिया आवश्यक है।

वाक्य विश्लेषण

छात्र (कर्ता) पुस्तक (कर्म) पढ़ता है। क्रिया।

गतिविधि–वाक्य रचना की समझ को सुदृढ़ता प्रदान करने हेतु कुछ गतिविधियाँ आवश्यक हैं जो निम्नलिखित हो सकती हैं–

- फ्लैश कार्डों के 5 सेट (प्रत्येक सेट में 20 कार्ड) तैयार रखें। कर्ता के कार्ड और क्रिया के कार्डों को अलग–अलग रखें तो अच्छा रहेगा। कक्षा को 5 समूहों में बाँट दें। प्रत्येक समूह को कार्डों को मिलाकर वाक्य बनाने को कहें।
- कुछ वाक्य पट्टियाँ पहले से पर्याप्त मात्रा में तैयार रखें। बच्चों में वाक्य पट्टियाँ बाँट दें। श्यामपट्ट के तीन भाग पर क्रमशः कर्ता+कर्म एवं क्रिया लिखें। प्रत्येक बच्चे को दी गयी वाक्य पट्टी से कर्ता, क्रिया और कर्म को उचित खाने में श्यामपट्ट पर लिखने को कहें।
- श्यामपट्ट पर बच्चों से पूछकर कुछ कर्ता, कर्म एवं क्रिया की सूची बना लें। सूची से शब्दों को मिलाकर वाक्य रचना करायें।

तत्सम, तद्भव, देशज रूपों का परिचय

उद्देश्य–

- छात्रों को तत्सम, तद्भव, देशज के रूपों (शब्दों) से परिचय कराना।
- शब्दों के निर्माण में इन तीनों शब्दों की क्या भूमिका है इससे अवगत कराना।
- शब्द भंडार में वृद्धि करना।

गतिविधि–01 (बड़े समूह में)

तत्सम	**तद्भव**	**देशज**
चन्द्र	चाँद	खिड़की
जिह्वा	जीभ	सड़क
अग्नि	आग	जूता
हस्त	हाथ	कटोरा
पश्चिम	पच्छिम	झाड़ू
मयूर	मोर	झोला

नव	नौ	टाँग
सूर्य	सूरज	लोटा
ओष्ठ	होंठ	डिबिया
वायु	हवा	ठेठ
बालक	लड़का	सोहारी
बालिका	लड़की	ताठी
भगिनी	बहिन	खोरा
दुग्ध	दूध	पगड़ी

बच्चों को बताएँ–

तत्सम शब्द–ये वे शब्द हैं जो संस्कृत भाषा से यथावत लिये गये हैं और संस्कृत के समान ही हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं। 'तत' अर्थात् संस्कृत के 'सम्' अर्थात् समान। संस्कृत से आये ये शब्द अपने मूल में हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं। जैसे–माता, पिता, बालक।

तद्भव शब्द–तद्+भव का तात्पर्य है उससे (संस्कृत से) उत्पन्न। ये संस्कृत भाषा से आये हुए वे शब्द हैं जिनका रूप हिन्दी में बदल चुका है। ये शब्द संस्कृत से सीधे न आकर पालि, प्राकृत और अपभ्रंश से होते हुए हिनदी में आये हैं। जैसे–पूर्वः = पूरब

देशज शब्द–ये वे शब्द हैं जो अपने देश में ही स्थानीय बोलियों आदि से निर्मित हैं। जैसे–भौजी, बहिनिया।

अभ्यास के लिए प्रश्न–

1–तत्सम और तद्भव शब्द में क्या अन्तर है ?

2–देशज शब्द किसे कहते हैं ?

3–नीचे दिये गये शब्दों में से चुनकर तत्सम और तद्भव शब्दों के जोड़े बनाइए–

अर्थ, अमावस्या, कान, काष्ठ, अमावस, कर्ण, कपोत, काठ, रात्रि, कबूतर, तृण, रात, तिनका, घोड़ा, घोटक, पक्षी, ईख, पंछी, इक्षु।

4–नीचे दिये गये शब्दों में से तत्सम, तद्भव और देशज शब्द पृथक्–पृथक् लिखिए–

कर्म, साँप, मोर, गोहरी, अग्नि, करम, सर्प, मयूर, माथा, आँसू, मस्तक, लोर, कपाट, मोरैला, आग, गोबर, ऊपली, अश्रु।

5–सुमेलित कीजिए–

तत्सम	**तद्भव**
ज्येष्ठ	धुँआ
ताम्र	भँवरा
धूम	भीख
नासिका	जेठ
भिक्षा	ताँबा
भ्रमर	नाक

6–'देशज' शब्दों की सूची बनाइए।

7–इसमें 'तत्सम' शब्द कौन सा है–सही पर सही का निशान लगाइए–

(क) पत्थर (ख) पहाड़ (ग) प्रस्तर (घ) चट्टान

मूल्यांकन—पाठ्यपुस्तक पढ़ाते समय पुस्तक में आए 'तत्सम', 'तद्भव' एवं देशज शब्दों की पहचान बच्चों को कराइए ताकि उनकी क्षमता में वृद्धि हो सके। उन्हें समय—समय पर इन शब्दों की सूची बनाने को दीजिए तथा उनका वाक्य प्रयोग भी कराइए। ऐसा करने में आप बच्चों की मदद कीजिए। ऐसा करने सक बच्चे आपसे घुल—मिल जायेंगे तथा सीखने में रूचि लेंगे। बीच—बीच में प्रश्न पूछकर उनको शब्दों की पहचान कितनी विकसित हो पायी है इसका भी मूल्यांकन कीजिए। जैसे—आप उन्हें प्रश्न दीजिए—

(1) 'देशज' शब्द पर सही का निशान लगाइए—

(क) जूता (ख) जूती (ग) पनही (घ) या तीनों

इन्हें भी जानिए—

- देशज वे शब्द हैं जो बोलचाल से बने हैं।
- इनकी व्युत्पत्ति का पता नहीं चलता।
- लोक भाषाओं में ऐसे शब्दों की अधिकता है।
  जैसे—तेंदुआ, फुनगी, खिचड़ी, लोटा, डिबिया, चसक, पगड़ी, डोंगा।

सरल, संयुक्त व मिश्रित वाक्य

उद्देश्य—

- छात्रों को सरल, संयुक्त व मिश्रित वाक्य की पहचान कराना।
- सरल वाक्य से मिश्रित वाक्य बनाने का अभ्यास कराना।
- संयुक्त से मिश्रित एवं सरल वाक्य बनाने का अभ्यास कराना।

गतिविधि—1 (बड़े समूह में)

कुछ सरल वाक्य बनाकर—

- लड़का दौड़ता है। (कर्ता कारक)
- सीता पढ़ रही है। (कर्ता कारक)
- सिपाही ने चोर को पकड़ा। (कर्ता कारक)
- बंदर पेड़ पर चढ़ रहे थे। (कर्ता कारक)
- चिट्ठी लिखी जायेगी। (कर्म कारक)
- नौकर को वहाँ भेजा जायेगा। (कर्ता कारक)
- मुझसे बोलने नहीं बनता। (करण कारक)
- मुझे वहाँ जाना था। (सम्प्रदन कारक)

इसे भी जानें—

साधारण वाक्य में एक संज्ञा उद्देश्य और एक क्रिया विधेय होती है और उन्हें क्रमशः साधारण उद्देश्य और साधारण विधेय कहते हैं। उद्देश्य बहुधा कर्ता कारक में रहता है, पर कभी—कभी वह दूसरे कारकों में भी आता है। जैसा कि ऊपर के उदाहरण में दिखाई दे रहा है।

जिस वाक्य में एक क्रिया होती है और एक कर्ता होता है उसे 'साधारण' या 'सरल वाक्य' कहते हैं। जैसे–'बिजली चमकती है', 'पानी बरसा'। इन वाक्यों में एक–एक उद्देश्य, अर्थात् कर्ता और विधेय, अर्थात् क्रिया है। अतः ये साधारण या सरल वाक्य हैं।

- साधारण वाक्य किसे कहते हैं ?

मूल्यांकन–शिक्षक सरल वाक्य के बारे में बेताने के बाद बच्चों से भी इसी तरह के सरल या साधारण वाक्य बताने को कहें। कठिनाई के क्षण में अध्यापक सुगमकर्ता की भूमिका निभायें। सतत मूल्यांकन से ही बच्चों ने कितना सीखा या कहाँ–कहाँ कठिनाई है इसका बोध होता रहेगा और आप इसे अच्छी तरह मदद दे सकते हैं।

गतिविधि–2

2–मिश्र वाक्य–

- उसने उस पुस्तकालय को खरीदा, जो उसके मित्र का था।
- जो लड़के बच्छे होते हैं, वे परिश्रमी होते हैं।
- जो कवि लोकप्रिय होता है, उसका सम्मान सभी करते हैं।

'जिस वाक्य में एक साधारण वाक्य के अतिरिक्त उसके अधीन कोई दूसरा अंग वाक्य हो, उसे मिश्र वाक्य कहते हैं।'

दूसरे शब्दों में जिस वाक्य में मुख्य उद्देश्य और मुख्य विधेय के अलावा एक या अधिक सहायक क्रियाएँ हों, उसे 'मिश्र वाक्य' कहते हैं। जैसे–'वह कौन सा मनुष्य है, जिसने महाप्रतापी राजा भोज का नाम न सुना हो।' इसमें 'वह कौन सा मनुष्य है' मुख्य वाक्य है और शेष 'सहायक वाक्य' क्योंकि वह मुख्य वाक्य पर आश्रित है।

प्रश्न–मिश्र वाक्य किसे कहते हैं ?

मूल्यांकन–

- मिश्र वाक्य के कुछ उदाहरण दीजिए ?
- सरल और मिश्र वाक्य में क्या अन्तर है ?

गतिविधि–3

3–संयुक्त वाक्य–

- वह अस्वस्थ था और इसीलिए परीक्षा में सफल न हो सका।
- सूर्योदय हुआ और कुहासा जाता रहा।
- उसने न केवल गरीब को लूटा, बल्कि उसकी हत्या भी कर दी।
- मैंने खाना खाया और मेरी भूख मिट गयी।

''जिस वाक्य में साधारण अथवा मिश्र वाक्यों का मेल संयोजक अवयवों द्वारा होता है, उसे 'संयुक्त वाक्य' कहते हैं।''

'संयुक्त वाक्य' उस वाक्य समूह को कहते हैं जिसमें दो या दो से अधिक सरल वाक्य अथवा मिश्र वाक्य अव्ययों द्वारा संयुक्त हों। इस प्रकार के वाक्य लम्बे और आपस में उलझे होते हैं, जैसे–'मैं रोटी खाकर लेटा कि पेट में दर्द होने लगा और दर्द इतना बढ़ा कि तुरन्त डॉक्टर को बुलाना पड़ा।'

इस लम्बे वाक्य में संयोजक 'और' है, जिसके द्वारा दो मिश्र वाक्यों को मिलाकर संयुक्त वाक्य बनाया गया। इसी प्रकार 'मैं आया और वह गया' इस वाक्य में दो सरल वाक्यों के जोड़नेवाला संयोजक 'और' है। यहाँ यह याद रखने की बात है कि संयुक्त वाक्यों में प्रत्येक वाक्य अपनी स्वतंत्र सत्ता बनाये रखता है, वह एक दूसरे पर आश्रित नहीं होता, केवल संयोजक अव्यय अ स्वतंत्र वाक्यों को मिलाते हैं। इन मुख्य और स्वतंत्र वाक्यों को व्याकरण में 'समानाधिकरण उपवाक्य' भी कहते हैं।

मूल्यांकन–

- संयुक्त वाक्य किसे कहते हैं ?
- उदाहरण देकर 'संयुक्त वाक्य' का विश्लेषण कीजिए।
- इसी तरह के कुछ उदाहरण आप स्वयं लिखिए।

अर्थ की दृष्टि से वर्गीकरण–

1–विधिवाचक वाक्य–

सरल वाक्य– हम खा चुके।

मिश्र वाक्य– मैं खाना खा चुका, तब वह आया।

संयुक्त वाक्य– मैंने खाना खाया और मेरी भूख मिट गयी।

2–निषेधात्मक वाक्य–

सरल वाक्य– हमने खाना नहीं खाया।

मिश्र वाक्य– मैं खाना नहीं खाया, इसलिए मैंने फल नहीं खाया।

संयुक्त वाक्य– मैंने भोजन नहीं किया और इसलिए मेरी भूख नहीं मिटी।

3–आज्ञावाचक वाक्य–

तुम खाओ, तुम पढ़ो, तुम जाओ इत्यादि।

4–प्रश्नवाचक वाक्य–

- क्या तुम खा रहे हो ?
- तुम्हारा नाम क्या है ?

5–विस्मयवाचक वाक्य–

- ओह! मेरा सिर फटा जा रहा है।

6–सन्देहवाचक वाक्य–

- उसने खा लिया होगा।
- मैंने कहा होगा।

7–इच्छावाचक वाक्य– शुभकामना का बोध हो।

- तुम अपने कार्य में सफल रहो।

8–संकेतवाचक वाक्य–दूसरे की सम्भावना पर निर्भर हों–

- पानी न बरसता तो धान सूख जाता।
- यदि तुम खाओ तो मैं भी खाऊँ।

मूल्यांकन के प्रश्न–

1–विधिवाचक वाक्य से सरल, मिश्र और संयुक्त वाक्य के एक–एक उदाहरण दीजिए ?

- इच्छावाचक और संदेहवाचक वाक्य के एक–एक उदाहरण लिखिए।

2–सरल वाक्य से मिश्र वाक्य बनाइए–

- उसने अपने मित्र की दूकान खरीदा।

  ....

- अच्छी लड़कियाँ परिश्रमी होती हैं।

  ....

3–सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य बनाइए–

- सूर्योदय होने पर रात जाती रही।

  ....

- अस्वस्थ होने के कारण वह परीक्षा में सफल न हो सका।

....

4–मिश्र वाक्य से सरल वाक्य बनाइए–

- राम ने कहा कि मैं निर्दोष हूँ।

  ....

- जो छात्र परिश्रम करेंगे उन्हें सफलता अवश्य मिलेगी।

....

- जो गुरुजन हैं, उनकी सेवा करनी चाहिए।

  ....

5–'कृपया जायें' यह कैसा वाक्य है ?

(क) प्रश्नसूचक (ख) आज्ञार्थक

(ग) अनुरोधवाचक (घ) निषेधात्मक

6–संयुक्त वाक्य का एक उदाहरण लिखिए।

मूल्यांकन–किसी भी भाषा में उपयुक्त शब्द प्रयोग और सुगठित वाक्य–विन्यास का विशेष महत्त्व है। वाक्य रचना संबंधी अशुद्धियाँ मौखिक और लिखित भाषा दोनों को प्रभावित करती हैं। वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ केवल शब्द की वर्तनी तक सीमित रहती हैं किन्तु वाक्य संबंधी अशुद्धियों से बचने के लिए वाक्य रचना में पदक्रम, उपसर्ग, अविकारी, विकारी तथा शब्दार्थ ज्ञान संबंधी अशुद्धियों को शुद्धता का ध्यान देने के साथ शब्दों की वर्तनी पर भी विशेष ध्यान रखना पड़ता है। अशुद्ध वाक्य रचना प्रयोक्ता के भाषा–ज्ञान की अपरिपक्वता का बोध कराती है। छात्रों को ज्यादा से ज्यादा वाक्य रचना की ओर प्रेरित करते हुए उन्हें सरल, मिश्र एवं संयुक्त वाक्यों को पहचानने की क्षमता विकसित करने में उनकी मदद करें। अनेकों उदाहरण उनके सामने प्रस्तुत करें और उनसे भी उदाहरण ढूढ़ने को कहें। बीच–बीच में विषय से संबंधित प्रश्न करते हुए उनका सतत मूल्यांकन करते चलें तथा निरन्तर आगे बढ़ने अर्थात् भाषा ज्ञान, बढ़ाने में उनकी सहायता भी करें।

वाक्यांश के लिए एक शब्द

उद्देश्य–

- अनेक शब्दों या वाक्यांशों द्वारा व्यक्त भाव को एक शब्द में व्यक्त कर सकना।
- शब्दों को प्रभावपूर्ण ढंग से रखकर भाव को व्यक्त कर सकना।
- समय और शक्ति के बचत के साथ–साथ शब्द भंडार में वृद्धि कर सकना।

गतिविधि–1 बड़े समूह में अभ्यास कराया जाय।

- जो सब जानता हो = सर्वज्ञ
- जो खाने योग्य हो = खाद्य
- जे पीने योग्य हो = पेय
- जो वन्दना के योग्य हो = वन्दनीय
- जे सर्वत्र व्याप्त हो = सर्वव्यापी
- जे सबको एक सा समझता हो = समदर्शी
- सिर से पैर तक = आपादमस्तक
- जो कामना रहित हो = निष्काम
- जिसकी आशा न की गई हो = अप्रत्याशित
- छोटा भाई = अनुज
- बड़ा भाई = अग्रज
- दोपहर के बाद का समय = अपराह्न
- जिसके पास कुछ न हो = अकिंचन

गतिविधि–2 (छोटे समूह में)

बच्चों की दो टोली बनाइए। पहली टोली को वाक्यांश के एक शब्द दीजिए। पहली टोली का पहला बच्चा एक शब्द बोलेगा, यथा–''अजेय'' (जो जीता न जा सके)। दूसरी टोली का पहला बच्चा विस्तार वाला शब्द बोलेगा। इस तरह प्रत्येक बच्चे से यह अभ्यास कराया जाय। आप चाहे तो टोली बदलकर भी यह कार्य करा सकते हैं।

अभ्यास कार्य–

1–वाक्यांश के लिए एक शब्द लिखिए–यथा।

- जो प्राप्त न हो सके = ...।
- व्यर्थ खर्च करने वाला = ...।
- अनुकरण करने योग्य = ...।
- जो वस्तु एक ही स्थान पर रहे = ...।
- किए हुए को मानने वाला = ...।

2–नीचे दिये शब्दों का विस्तार कीजिए–

- पांडुलिपि ....।
- सार्वजनिक ....।
- तार्किक ....।
- निर्बल ....।
- निर्भर ....।
- उपत्यका ....।
- प्रशंसनीय ....।
- विश्वसनीय ....।

3–सुमेलित कीजिए–

क	**ख**
• जिसे अक्षर ज्ञान हो	भूतपूर्व
• जो नित्य प्रति नवीन रहे	लोकप्रिय
• जो बुद्धि द्वारा जाना जा सके	नश्वर
• जो व्यक्ति पहले किसी पद पर रह चुका हो	साक्षर
• जो लोगों को प्रिय हो	नितनूतन
• जो नाश को प्राप्त हो	बोधगम्य

4–'जो आसानी से सुलभ हो' वाक्यांश के लिए एक शब्द पर सही का निशान लगाइए–
(क) सुलाभ
(ख) सुफल
(ग) सुलभ
(घ) सफल

5–'प्रत्युपकार' शब्द के लिए 'वाक्यांश का विस्तार' सटीक उत्तर पर सही का निशान लगाइए–
(क) भला करने वाला।
(ख) भलाई की कामना करने वाला।
(ग) भलाई के बदले की गई भलाई।
(घ) बुराई के बदले की गई भलाई।

विधियाँ–'वाक्यांश के लिए एक शब्द' में आप आगमन प्रणाली का उपयोग कर सकते हैं। इस विधि में छात्रों के सम्मुख पर्याप्त उदाहरण रखे जाते हैं। फिर उनसे प्रचलित नियम निकलवाए जाते हैं और उनका अभ्यास करवाया जाता है। इसमें छात्रों की उत्सुकता अन्त तक बनी रहती है। जिससे वे सब बातें ध्यान से सुनते, समझते और धारण करते हैं।

अतः निगमन प्रणाली से यह अधिक उपयोगी और मनोवैज्ञानिक है। समय–समय पर आप अन्य विधियों का प्रयोग कर सकते हैं। जैसे–

- पाठ्यपुस्तक प्रणाली।

- अव्याकृति प्रणाली।
- निगमन प्रणाली।
- सहयोग प्रणाली।

मूल्यांकन–'वाक्यांश के लिए एक शब्द' बताते समय आप बीच–बीच में बच्चों को प्रश्न देकर उसका उत्तर निकलवाएँ तथा अनुमान लगाते रहें कि बच्चों ने आप की बात को कितना समझा है। अगर सीखने में कहीं कमी रह गयी है तो आप फिर से उसका अभ्यास कराएँ तथा बच्चे का सतत मूल्यांकन करते चलें।

बच्चों को बताएँ–

- किसी अनुच्छेद, विस्तृत विवरण, लेख इत्यादि को संक्षिप्त करने में 'वाक्यांश के लिए एक शब्द' बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य करता है।
- बच्चों को शार्ट नोट बनाने में यह महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।
- जितना ही आप इन शब्दों का अभ्यास करेंगे उतना ही अच्छा एवं भावपूर्ण सार लेखन या संक्षिप्तीकरण कर पायेंगे।
- यही संक्षिप्तता परीक्षा के समय बड़े काम की चीज साबित होती है।
- इसलिए आप निरन्तर इसका अभ्यास (लिखित एवं मौखिक) करते रहें ताकि आप भावपूर्ण एवं संक्षिप्त लेखन कर सकें।
- व्याकरण शिक्षण के समय आप किस विधि को सबसे सही मानते हैं और क्यों ?
- आगमन विधि से आप क्या समझते हैं ?
- वाक्यांश संक्षेपण के लिए किस प्रकार सहायक हैं ?

1–पाठ्यपुस्तक विधि–इसे सुग्गा विधि भी कहते हैं। इसमें व्याकरण पुस्तक को लेकर सस्वर वाचन करा दिया जाता है या पुस्तक को आधार बनाकर बिना समझे–बूझे व्याकरण के नियम उपनियम रखवा दिये जाते हैं। यह विधि व्यावहारिक जीवन में कुछ सहायता नहीं कर पाती।

2–अव्याकृति विधि–को समर्थक व्याकरण शिक्षा की अलग महत्ता स्वीकार नहीं करते। उनका कहना है कि उत्तम रचनाओं के अध्ययन से स्वयं ही भाषा पर अधिकार हो जायेगा। लेकिन यह उच्च कक्षाओं के लिए ही उपयोगी है।

3–निगमन विधि–में व्याकरण के नियम या सूत्र रूप में कंठस्थ करा दिए जाते हैं और बाद में उदाहरण द्वारा समझा दिये जाते हैं। जैसे–किसी वस्तु, स्थान या नाम को संज्ञा कहते हैं। उदाहरण–मेज, वाराणसी, राम और श्याम। संस्कृत व्याकरण की शिक्षा में इस विधि का प्रायः उपयोग किया जाता है। इसे सूत्र विधि भी कहते हैं।

4–सहयोग विधि–के समर्थक यह स्वीकार करते हैं कि आवश्यकतानुसार रचना शिक्षण के साथ–साथ व्याकरण के नियमों से भी छात्रों को परिचित कराया जा सकता है।

ध्यान देने योग्य बातें–

- संतुलन दो दृष्टिकोणों का गुणनफल होता हे। आगमन, निगमन तथा सहयोग विधि में से, शिक्षक जिसके द्वारा शिक्षण सुविधानुसार कुशलतापूर्वक व्याकरण का ज्ञान दे सके, अपनाये, विद्यार्थियों

के सम्मुख उदाहरण रखकर प्रश्नों की तालिका बनाकर नियमों को समझने और प्रयोग रूप में लाने के लिए सम्भावित प्रश्न दिये जाने चाहिए, क्योंकि प्रश्नों द्वारा निश्चित स्थिति पर पहुँचा देना व्याकरण का प्रथम कार्य है।

- व्याकरण का कार्य भाषा सिखाना नहीं, वरन उसे व्यवस्थित करना है।
- व्याकरण शब्द और वाक्य पर अनुशासन करता है।
- व्याकरण मुहावरों, लोकोक्तियों तथा अलंकारों का सावधानीपूर्वक प्रयोग सिखाती है।
- भाषा शिक्षण में व्याकरण शिक्षण का अनिवार्य अंग है, अतः इसे मनोवैज्ञानिक ढंग पर नवीन प्रणाली द्वारा पढ़ाना ही हितकर होगा।

शब्द भण्डार की वृद्धि के लिए आप निम्नलिखित कार्य बच्चों को करने को कहें–

1. पर्यायवाची–
    - अंधकार – तिमिर, अँधेरा
    - बादल – मेघ, जलद
2. विलोम–
    - अधिक – कम
    - उपकार –अपकार
3. वाक्यांश के लिए एक शब्द–
    - पीछे चलने वाला – अनुगामी
    - जो कभी बूढ़ा न हो – अजर
4. समानामासी भिन्नार्थक शब्द–
    - अंक – आग, अनिल – वायु
    - कुल – वंश, कूल – किनारा
5. अनेकार्थी शब्द–
    - अंक – गोद, चिह्न, संख्या
    - सुर – देवता, स्वर और ताल

नए शब्दों के निर्माण में संधि, उपसर्ग, प्रत्यय और समास सहायक होते हैं।

संधि– विद्यालय – विद्या + आलय
उपसर्ग – अत्यधिक – अति + अधिक
प्रत्यय – भलाई – भल + आई
समास – माता–पिता – माता और पिता

पाठ–5
पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य पाठ्यवस्तु को पढ़कर समझना

प्रक्रिया–

- **उद्देश्य**
- **विषय–विस्तार**
- **मूल्यांकन**
- **विषय–विस्तार उदाहरण**
- **शिक्षण–तरीका**
- **मूल्यांकन**
- **प्रोजेक्ट कार्य**
- **सन्दर्भ–ग्रन्थ**

उद्देश्य–

1. गद्यखण्डों और कविताओं को उचित आरोह–अवरोह एवं प्रवाह के साथ पढ़ना।
2. मनोरंजन एवं ज्ञानवृद्धि के लिए पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य पाठ्यवस्तु को पढ़ने की योग्यता तथा रुचि जागृत करना।
3. पठित वस्तु के महत्त्वपूर्ण तथ्य, विचार तथा केन्द्रीय भाव को जानने की योग्यता का विकास करना।
4. हिन्दी के परिचित शब्दों के साथ–साथ नये शब्दों, मुहावरों को भी शुद्ध ढंग से पढ़ना एवं समझना।
5. तर्क, चिन्तन, कल्पनाशक्ति का विकास करना।

भाषा की चारों दक्षताओं–सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना में पढ़ना महत्त्वपूर्ण दक्षता है। पढ़ना से अभिप्राय केवल सार्थक ध्वनि के प्रतीक लिपिचिह्नों को पहचानना ही नहीं है, अपितु पहले सुनी हुई सार्थक ध्वनियों के प्रतीक शब्दों को पढ़कर उनका अर्थ ग्रहण करना है। वास्तव में पढ़ना केवल अर्थग्रहण तक ही नहीं रहता बल्कि पठित सामग्री का अर्थग्रहण करने के पश्चात् उसपर अपना मंतव्य स्थिर करने और फिर तदनुसार व्यवहार करने पर सम्पन्न होता है। जब बच्चा लिखी या छपी भाषा को अर्थ से जोड़कर पढ़ना सीख जाता है, तब यह मान लेते हैं कि उसमें पढ़ने का कौशल विकसित हो गया है। इससे स्पष्ट है कि अर्थ को बिना समझे या पढ़ी हुई सामग्री को पहले से ज्ञात किसी चीज से जोड़ने में समर्थ न हो जाने को पढ़ना नहीं कहा जा सकता।

'पढ़ना' समझने के पूर्व उसके तत्वों को समझना आवश्यक है। ये निम्नलिखित हैं–

1–ध्वनि के प्रतीक वर्णों को देखकर पहचानना।

2–वर्णों के प्रयोग से शब्दों का निर्माण करना।

3–शब्दों को उचित दृष्टि सोपान (आई स्पेस) में बाँटकर उचित गति से उच्चरित करना।

4–वाक्य को सार्थक इकाइयों (मीनिंगफुल यूनिट) में बाँटकर पढ़ना।

5–संदर्भ के अनुसार शब्दों का भावग्रहण करना।

6–लेखक के विचारों को समझकर पूर्व अर्जित ज्ञान से पठित सामग्री का संबंध स्थापित करना।
7–पठित सामग्री पर अपना निश्चित मंतव्य बनाना।
8–मंतव्य के आधार पर अपना आचरण स्थिर करना तथा तदनुसार निरंतर व्यवहार करना।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि पढ़ना कोई यांत्रिक कौशल नहीं है। यह एक मानसिक क्रिया है जिसमें देखने, पहचानने, बोलने की सामान्य क्रिया से लेकर सोचने, कल्पना करने, तर्क करने, निर्णय लेने, तत्पश्चात मूल्यांकन करने आदि के व्यापार सम्मिलित हैं।

पढ़ने की प्रक्रियाः–पढ़ने की एक निश्चित प्रक्रिया होती है। गत शताब्दी के अंत से लेकर वर्तमान तक इसको वैज्ञानिक तरीके से जानने के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य हुए हैं। आई मूवमेंट–कैमरा की सहायता से हमारे सामने अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्य प्रकट हुए हैं। पढ़ते समय हमारी आँखें एक दिशा से दूसरी दिशा में (बाएं से दायें) कुछ गति से रुक–रुककर बढ़ती हैं। यह गति वाक्य या पंक्ति के समाप्त होने पर अपेक्षित रूप से कुछ अधिक क्षण तक रूकती है। जैसे बोलते समय हम एक–एक वर्ण न बोलकर शब्द बोलते हैं तथा वाक्य पूरा होने तक सार्थक शब्द समूहों पर कुछ विराम लेते रहते हैं, ऐसी ही स्थिति पढ़ते समय होती है। पढ़ते समय आँखों का दृष्टिकेन्द्र (फिक्सेशन प्वाइंट) वर्ण न होकर एक शब्द बनता है। यह दृष्टिकेन्द्र निरंतर अगले शब्दों की ओर कुछ–कुछ विराम के साथ गतिशील होने लगता है। दो केन्द्रों के बीच के विराम को एक दृष्टि विराम (आई स्पेस) कहते हैं। यह दृष्टिविराम व्यक्तिगत भिन्नता के अनुसार होता है। मानसिक स्तर, शारीरिक अवयवों के कार्य करने की क्षमता, सामाजिक वातावरण, पठन सामग्री का सरल या कठिन होना, आयु, अभ्यास, पठन का उद्‌देश्य आदि मूलभूत ऐसे कारण हैं, जिनका दृष्टिकेन्द्र तथा दृष्टिविराम से सीधा संबंध है। उदाहरण के द्वारा इस प्रक्रिया को समझा जा सकता है–

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
उ	त्त	र	प्र	दे	श	की	रा	ज	धा	नी	ल	ख	न	ऊ	है

प्रत्येक अक्षर पर बल देने से ऊपर की पंक्ति को पढ़ते समय आँख के 16 दृष्टिविराम बनते हैं।

1	2	3	4	5
उत्तर	प्रदेश की	राजधानी	लखनऊ	है

कोई दूसरा पाठक इसी वाक्य को 5 दृष्टिविरामों में पढ़ता है।

उत्तर प्रदेश की राजधानी	लखनऊ है
1	2

पढ़ने में थोड़ा कुशल पाठक इसको दो दृष्टिविरामों में पढ़ सकता है। पढ़ने में कुशल पाठक इस पूरी पंक्ति को एक दृष्टिविराम में भी पढ़ सकता है। पढ़ने का अभ्यास जितना अधिक होगा, पढ़ने की क्रिया उतनी ही तीव्र गति से होती है।

पढ़ते समय की प्रक्रिया को सूक्ष्मतापूर्वक देखें तो पाते हैं कि जब हम किसी लिखित सामग्री को पढ़ते हैं तो उस समय हमारी आँखें जब अक्षरों, विरामचिह्नों, शब्दों और शब्दों के बीच छोड़ी गयी

जगहों का निरीक्षण करती हैं, उस समय हमारा मस्तिष्क उस सामग्री को बहुत ध्यान से नहीं देखता। यदि मस्तिष्क उस सामग्री की छोटी–बड़ी हर चीज/सूचना पर ध्यान देता तो इसका असर पढ़ने की गति पर पड़ता और हम जितनी गति से सामग्री को पढ़ पाते हैं, नहीं पढ़ पाते। यदि हम पढ़ते समय किसी अक्षर के पूरे आकार पर ध्यान देते या एक शब्द के सारे अक्षरों को अथवा एक वाक्य के सारे शब्दों पर ध्यान देते हुए पढ़ते तो पढ़ने की गति धीमी हो जाती। कोई भी निपुण पाठक पढ़ते समय लिखित सामग्री के एक छोटे–से अंश पर ध्यान केन्द्रित करता है, शेष भाग वह अनुमान से ग्रहण करता है। यह अनुमान वह अक्षरों की आकृतियों, शब्द, उनके अर्थ, उनके संयोजन और सामान्य दुनिया से उसके पूर्व परिचय के आधार पर लगाता है।

छोटे बच्चों को पढ़ना सिखाना शिक्षक के लिए एक बड़ी चुनौती की तरह होता है। पढ़ना सिखाने के लिए शिक्षक को बहुत सारे प्रयोग करना होता है। कई तरीकों का प्रयोग करने होते हैं। कई तरीकों का प्रयोग करना होता है। उसमें धैर्य एवं स्फूर्ति का होना अत्यन्त आवश्यक है। वर्णमाला को रटाने या कहानी को शब्दशः जोर से दोहरवाने जैसी गतिविधियाँ पढ़ना सिखाने के लिए ठीक नहीं कही जातीं। क्योंकि ऐसा करते समय बच्चे लिखित भाषा को किसी अर्थ से नहीं जोड़ पाते। वर्णमाला के अक्षरों का अलग से कोई अर्थ नहीं होता। 'कमल' और 'खरगोश' शब्दों से 'क' और 'ख' अक्षरों की पहचान के लिए रटा देने का परिणाम यह होता है कि बच्चा कहीं भी 'क' को देखकर 'कमल' के 'क' रूप में ही पहचानता है। यह सारी प्रक्रिया बच्चों को नीरसता ही देती है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि पुरानी विधियों से बाहर निकलकर पढ़ना सिखाने के लिए नये तरीके अपनाये जायँ।

सरल कहानी, कविता से पढ़ना शुरू करना अच्छा है। यह सामग्री साफ, सचित्र, रंगीन और आकर्षक हो तो बच्चों को पढ़ने में आनन्द आता है। बच्चों को छोटे–छोटे समूहों में बैठकर शिक्षक पढ़ने का अवसर दें। कहानी स्वयं सुनायें। बच्चों से पुस्तक में दिये गये चित्रों पर बात करें।

कई बार इस तरह के अवसर मिलने पर बच्चे पढ़ना जल्दी सीख जाते हैं। कुछ ही समय में वे चित्रों और कहानियों से इतने परिचित हो जाते हैं कि वे शिक्षक के पढ़ने का अनुमान लगाने लगते हैं। इसी अनुमान के सहारे वे एक दिन पुस्तक पढ़ लेते हैं। वास्तव में 'पढ़ने की कुंजी अनुमान लगाने का कौशल' है।

मूल्यांकन–

1. पढ़ना क्या है ?
2. छोटी कक्षाओं में पढ़ना सिखाने के लिए आप कौन से तरीके अपनाएंगे ?
3. 'पढ़ना' में कौन–कौन से तत्व सम्मिलित हैं, उदाहरण सहित समझाइए।
4. पढ़ना–कौशल के विकास में अनुमान लगाने की क्या भूमिका है ?

अन्य पाठ्यवस्तु पढ़नाः–

बच्चों को पढ़ना सिखाने के लिए यह जरूरी है कि उन्हें जो पाठ्यवस्तु दी जाय वह रोचक हो और साथ ही पर्याप्त मात्रा में हो। कक्षा हेतु निर्धारित पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त अनेक पाठ्यवस्तुओं की सहायता लेना पढ़ना सिखाने के लिए जरूरी है। यह पाठ्यवस्तु निम्नलिखित हो सकती हैं–

- **बालोपयोगी पत्रिकाएँः–**बच्चों को दृष्टि में रखकर (कहानी/कविता आदि की) अनेक पत्रिकाएं लिखी गयी हैं और लिखी जा रही हैं। इनमें कहानियाँ, कविताएं, चुटकुले, पहेलियाँ, छोटे–छोटे संवादों वाले रूपक होते हैं, जिन्हें बड़े रोचक तरीके से प्रस्तुत किया जाता है। बच्चे इनको पढ़ने

में रुचि रखते हैं। ऐसी पत्रिकाओं में चंपक, नंदन, चंदामामा, चकमक आदि हैं, अनेकों कॉमिक्स हैं, जिनमें चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत सामग्री बच्चों को बहुत आकर्षित करती है। छोटू लम्बू, मोटू–पतलू, लोटपोट, तेनालीराम आदि अनेक कॉमिक्स बाजार में उपलब्ध हैं। एन0बी0टी0 दिल्ली तथा अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित बालोपयोगी साहित्य बहुत उपयोगी हैं। पंचतन्त्र, कथासरित–सागर, बेताल पचीसी, सिंहासनी बत्तीसी, हितोपदेश, जातक, महाभारत की कहानियों के अनुवाद उपलब्ध हैं, ये कहानियाँ बच्चों को मनोरंजन के साथ बड़ी सीख भी देती हैं। लोककथाओं, स्थानीय लोककथाएं, किसी घटना पर आधारित कथाओं का संग्रह कर–कराकर कोश बनवा लेना, उनसे संबंधित चित्र भी बन जायें (बच्चों के सहयोग से) तो और भी अच्छा होगा। परिचित होने के कारण यह सामग्री बच्चों को पसंद भी आयेगी।

- **समाचार पत्र**–समाचार पत्रों में प्रायः छोटी–छोटी कहानियाँ, कविताएं, प्रेरक प्रसंग, पहेलियाँ–बूझो तो जाने, वर्ग पहेली, चित्रों में अंतर ढूँढ़ो, रास्ता ढूँढ़कर बाहर निकलो, चित्र भरो, क्या तुम जानते हो ?, आओ पतंग बनायें जैसे अनेकों शीर्षकों के अन्तर्गत बच्चों के लिए सामग्री निकलती रहती है। इनके माध्यम से बच्चों में समाचार पत्र पढ़ने के प्रति जागरूकता/रुचि विकसित की जा सकती है। चाहें तो इनको काटकर सादे कागज पर चिपकाकर बच्चों के हाथों में दिया जा सकता है।

  थोड़ी बड़ी कक्षाओं में समाचार–पत्र के शीर्षकों, उनमें छपी खबरों पर भी चर्चा–परिचर्चा समूह में कराई जा सकती हैं।

- विज्ञापनों, पोस्टरों, कैलेण्डरों, टिकटों, लेबलों आदि पर छपे चित्रों का संग्रह (चार्ट या कागज पर) कर के इनको बच्चों के बीच देकर इन पर चर्चा–परिचर्चा/बातचीत करना बच्चों की जिज्ञासा, तर्क, चिंतन को बढ़ाने का अच्छा माध्यम है।

- **अन्य साहित्यः**–हिन्दी के कवियों, लेखकों ने भी अनेक छोटी–छोटी कहानियाँ लिखी हैं, जिन्हें बच्चों को पढ़ने के लिए दिया जा सकता है। प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, डॉ0 श्रीप्रसाद, श्यामलाकांत वर्मा, निरंकार देव सेवक, अमृतलाल नागर, श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी, प्रो0 कृष्णकुमार, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, सुधा चौहान आदि नाम प्रमुख हैं।

  इनके अतिरिक्त नये कवियों/लेखकों द्वारा किसी पत्र–पत्रिका में बच्चों लायक बड़ी अच्छी रचनाएँ देखने, पढ़ने को मिल जाती हैं। उन्हें काटकर संग्रह कर बच्चों के लिए पढ़ने की सामग्री बनायी जा सकती है।

  बच्चों को पढ़ने के लिए कैसी सामग्री दी जाये–इसका आधार तय करना कोई आसान काम नहीं है। इनके चयन में यह ध्यान रखना होगा कि बच्चे कैसी सामग्री पढ़ना पसंद करते हैं ? बहुत उपदेशप्रद, भारी–भरकम शब्दों वाली बातें बच्चों को आकर्षित नहीं करतीं। बच्चों को ऊटपटांग बातें बड़ी अच्छी लगती देखी गयी हैं, अर्थात् जो वह प्रतिदिन देख रहा है, उससे अलग, जिसमें थोड़ा दिमागी कसरत, कल्पनाशीता, जिज्ञासा हो।

  कविताओं की बात करें तो उपर्युक्त बातों के अतिरिक्त तुक वाली कविताएँ बच्चों को भाती हैं, उदाहरणार्थ निम्नलिखित कविता–

1. बहुत जुकाम हुआ नन्दू को

एक रोज वह इतना छींका
इतना छींका इतना छींका
इतना छींका इतना छींका
सब पत्ते गिर गये पेड़ के
धोखा हुआ उन्हें आंधी का (रामनरेश त्रिपाठी)

2. आओ एक बनाएं चक्कर
फिर उस चक्कर में इक चक्कर
फिर उस चक्कर में इक चक्कर
फिर उस चक्कर में इक चक्कर
और बनाते जाएं जब तक
ऊब न जाएं थक कर।
फिर सबसे छोटे चक्कर में
म्याऊँ एक बिठाएं
और बाहरी हर चक्कर में
चूहों को दौड़ाएं।
दौड़–दौड़ कर सभी थकें
हम बैठे मारे मक्कर
नींद लगे हम सो जाएं
वे देखें उझक–उझक कर।
आओ एक बनाएं चक्कर। (सर्वेश्वर दयाल सक्सेना)

3. दहीबड़ा–
सारे चूहों ने मिल–जुलकर
एक बनाया दहीबड़ा,
सत्तर किलो दही मँगवाया
फिर छुड़वाया दहीबड़ा।
दिन भर रहा दही के अन्दर
बहुत बड़ा वह दहीबड़ा,
फिर चूहों ने उसे उठाकर
दरवाजे पर किया खड़ा।
रात और दिन दहीबड़ा ही
सब चूहे अब खाते हैं,
मौज मनाते गाना गाते,
कहीं न घर से जाते हैं। (डॉ0 श्रीप्रसाद)

- कुछ कविताएं/गीत ऐसे होते हैं, जिनका प्रयोग बच्चे बचपन में खेल–खेल में करते हैं, जैसे–घो–घो रानी, कितना पानी.............. एक्का–बुक्का तीन तलोक्का आदि। इन पारम्परिक खेल

गीतों को एकत्र कर संग्रह तैयार कर लेना, पढ़ना सीखने में बहुत काम करेगा। इनसे संबंधित कोई चित्र भी इनके साथ बना/लगा दिया जाय तो अधिक प्रभावकारी होगा।

तरीका–

–पढ़ाने के लिए पाठ्यवस्तु को बच्चों की पहुँच में रखना जरूरी है। शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को अपने सामने बैठाकर कविता पढ़कर, गाकर सुनायें। दो–चार बार सुनने के बाद बच्चे भी साथ में गाएं। बार–बार यह अभ्यास किया–कराया जाय। गाते समय बच्चे कविता की पंक्तियाँ, शब्द देखते जाते हैं और अनुमान लगाते जाते हैं। जब कविता उन्हें याद हो जाती है तो पढ़ते हुए धीरे–धीरे वे शब्दों को पहचानने लगते हैं।

–बाद में इन शब्दों से आप वर्णों की पहचान तक ला सकते हैं, यहाँ आप वर्णों की आकृति बने फ्लैश कार्डों या श्यामपट्ट पर बने वर्णों का सहारा ले सकते हैं।

–वर्णों की पहचान के लिए वर्णमाला के वर्णों को शब्द में ढूँढ़ने की गतिविधि करायें। इसी प्रकार कोई शब्द लिखकर मात्राएं लगवाएं।

–किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ाने के पूर्व उसके प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करना आवश्यक है। इसके लिए उससे पाठ्यवस्तु के प्रति कोई ऐसी बात करें जिससे बच्चा उसे पढ़ने/जानने के लिए उत्सुक हो जाय, तब उसे पढ़ने के लिए कहें।

मूल्यांकनः–(प्रशिक्षकों/शिक्षकों के लिए)

1. दी गयी सामग्री के अतिरिक्त और कौन–कौन सी सामग्री हो सकती है, जिनका प्रयोग बच्चों के पढ़ने के लिए किया जा सकता है, लिखित/बताइए

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

2. बच्चा पढ़ी जा रही सामग्री को समझ रहा है, यह कैसे जानेंगे ?
3. यदि आप कोई कहानी पढ़ाना चाहते हैं तो बच्चा स्वयं उसको पढ़ने के लिए प्रेरित हो, इसके लिए उस कहानी से संबंधित कौन–से प्रश्न/बातचीत करेंगे ?

प्रोजेक्टः–

(1) लोककथाओं, गीतों, पारम्परिक खेलगीतों का संग्रह तैयार करना।

(2) अलग–अलग स्तर (कक्षा–1 से2, 3–5 और 6–8) के बच्चों के लिए पाठ्यवस्तु तैयार कीजिए (छोटे समूह में)।

सन्दर्भ–ग्रन्थ–

- बच्चे की भाषा और अध्यापक –प्रो0 कृष्णकुमार
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005

पाठ–6
औपचारिक एवं अनौपचारिक परिस्थितियों के अनुरूप उपयुक्त भाषा का प्रयोग करना

लेखन प्रक्रिया–

- **उद्देश्य**
- **विषय विस्तार**
- **गतिविधि–1**
- **मूल्यांकन**
- **गतिविधि–2**
- **मूल्यांकन**
- **कुछ महत्वपूर्ण सुझाव**
- **समग्र मूल्यांकन**

उद्देश्य–

- विद्यार्थियों को औपचारिक एवं अनौपचारिक परिस्थिति का बोध कराना।
- उनमें विचार विनिमय की कुशलता का विकास करना।
- भाषा शिष्टाचार से परिचित कराना।
- परिस्थिति एवं अवसर के अनुकूल भाषा प्रयोग की दक्षता का विकास करना।
- प्रसंग के अनुकूल भाषा शैली प्रयोग की दक्षता का विकास।
- व्यक्तित्व का विकास करना।

विषय–विस्तार–भाषा में अपूर्व शक्ति है। यह प्रभावी तभी होती है जब हम उसके उचित प्रयोग की कला से अवगत हों। कब, कहा और क्या कहना/बोलना या लिखना है, प्रत्येक प्रबुद्ध व्यक्ति में इसकी समझ होनी चाहिए। इसके द्वारा मानसिक परिपक्वता का भी बोध होता है। यदि आप किसी मांगलिक अवसर पर शोकाकुल आचरण एवं भाषा का प्रयोग करेंगे या नौकरी के लिए जीवनवृत्त में हास–परिहास पूर्ण भाषा का प्रयोग करेंगे तो ऐसे में आपके मानसिक स्थिति के सन्दर्भ में सन्देह उत्पन्न हो सकता है।

वस्तुतः परिस्थिति के अनुसार भाषा का रूप बदल देना एक विशिष्ट योग्यता मानी जाती है। हर्ष, उत्साह और स्नेह की भाषा अलग होती है तथा शोक, दुःख और पश्चाताप की अलग। इसी प्रकार बच्चों से वार्तालाप, कक्षा में शिक्षण, अधिकारी के समक्ष सम्भाषण अथवा निवेदन, अन्यत्र औपचरिक भाषण, व्याख्यान, विद्वत–मण्डली में विचार विमर्श आदि विभिन्न अवसरों पर भाषा का रूप बदल जाता हे। कहीं तो भाषा सरल बोलचाल की होती है और कहीं गम्भीर, चिन्तन प्रधान हो जाती है। वक्ता को परिस्थिति के अनुसार उचित भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

हमारे विद्यालय के विद्यार्थी भाषा व्यवहार में दक्ष हो सके इसके लिए उन्हें इसकी उचित शिक्षा देते हुए उनका मार्गदर्शन करना आवश्यक है। इसके लिए निम्नलिखित गतिविधियाँ देखी जा सकती हैं–

गतिविधि 01–सर्वप्रथम शिक्षक टेप–रिकार्डर की सहायता से अथवा स्वयं संवाद बोलते हुए अथवा श्यामपट्ट पर लिखकर बच्चों से पहचानने को कहें कि बताओ ऐसी भाषा शैली हम कब, कहाँ और किसके साथ प्रयोग करते हैं। जैसे–

श्यामपट्ट पर लिखकर/स्वयं बोलकर

(1)

सीमा–तुम्हें अब पढ़ाई करनी चाहिए, सौरभ।

सौरभ–कर तो रहा हूँ दीदी।

सीमा–अगर कर रहे होते तो क्या मुझे दिखाई नहीं देता ?

सौरभ–तुम्हें तो बस मुझे डॉटने का बहाना चाहिए होता है।

(2)

''हम कुकुरी बिलारी न होयँ, हमार मन पुसाई तौ हम दूसरा के जाब नहिं त तुम्हार, पचै की छाती पै होरहा भूँजब और राज करब, समुझै रहौ।''

(3)

एक व्यक्ति–आइये–आइये, स्वागत है। लाइये सामान इधर दीजिए। आप आराम से यहाँ बैठिए।

दूसरा व्यक्ति–बहुत–बहुत धन्यवाद।

पहला व्यक्ति–आप कैसे हैं ?

दूसरा व्यक्ति–मैं ठीक हूँ। आप कैसे हैं ? आदि..........

(4)

मैडम–पार्थ! तुम बताओ, 'पंचपरमेश्वर' के लेखक का क्या नाम है ?

पार्थ–(खड़े होकर) मैडम! 'पंचपरमेश्वर' के लेखक का नाम मुंशी प्रेमचन्द है।

मैडम–बिल्कुल ठीक! शाबाश! तुम्हारी तैयारी अच्छी है।

पार्थ–धन्यवाद मैडम।

उपरोक्त संवादों को प्रस्तुत कर शिक्षक जब बच्चों से उसके प्रयोग स्थल के बारे में पूछेंगे तो बच्चे देखते ही या संवादों की भाषा शैली और बोलने के लहजे के आधार पर बड़ी सरलता से यह बता लेंगे कि उपरोक्त में से प्रथम दो उदाहरण घर परिवार के बीच के है, तीसरा घर पर मेहमान के आने पर तथा अन्तिम उदाहरण शिक्षक और छात्र के बीच का है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि बच्चे घर और बाहर की भाषा का अन्तर तो पहचानते हैं बस आवश्यकता है उन्हें स्थल एवं परिस्थिति विशेष के अनुसार भाषा प्रयोग की शिक्षा देने की। शिक्षक बच्चों के समक्ष स्पष्ट करेंगे कि भाषिक दृष्टि से औपचारिक और अनौपचारिक परिस्थिति क्या है ?

औपचारिक परिस्थिति–समारोह में प्रकट किये जाने वाले विचार, अतिथि के स्वागत के समय, शिक्षक से बातचीत में, कार्यालयों में, अधिकारी से बातचीत, वाद–विवाद, परिचर्चा आदि अवसरों पर भाषा अधिकाधिक औपचारिक रूप में प्रयुक्त की जाती है। बोलने वाला एक–एक शब्द नाप–तोल कर प्रयोग में लाता है। औपचारिक भाषा उच्च श्रेणी का कौशल माना जाता है।

अनौपचारिक परिस्थिति–परिवार में परस्पर वार्तालाप, मित्रों के बीच बातचीत, जलपान गृहों में लोगों का आपसी व्यवहार, यात्रा आदि के अवसर को अनौपचारिक परिस्थिति के अन्तर्गत रखा जा सकता है। इन

अवसरों पर व्यक्ति बिना किसी आवरण के सहज, स्वाभाविक ढंग से परस्पर विचारों का आदान–प्रदान करते हैं। इस समय की शब्दावली, वाक्य और विषय भी बड़े लचीले होते हैं। मनुष्य को जीवन में अनौपचारिक परिस्थितियों के अगणित अवसर मिलते हैं। भाषा के अनेक शब्दों का विकास भी अनौपचारिक अभिव्यक्ति के समय होता है। अनौपचारिक अवसर पर इतना ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि शिष्टाचार की सीमा कहीं से खण्डित न होने पाए।

इस प्रकार औपचारिक परिस्थिति में समय, स्थान एवं व्यक्ति की प्रतिबद्धता के अनुसार भाषा का प्रयोग किया जाता है जबकि अनौपचारिक परिस्थिति में समय, स्थान एवं व्यक्ति की प्रतिबद्धता के बगैर अपने परिवेश में वहाँ की जरूरत के अनुरूप भाषा का प्रयोग करने के लिए वह स्वतंत्र होता है।

मूल्यांकन–

- औपचारिक परिस्थिति के अन्तर्गत कौन–कौन से अवसर आते हैं ?
- औपचारिक परिस्थिति के अन्तर्गत कौन–कौन से अवसर आते हैं ?
- मित्र की माँ से वार्तालाप किस परिस्थिति के अन्तर्गत आएगा ?

गतिविधि 02–(वार्तालाप द्वारा) शिक्षक औपचारिक, अनौपचारिक परिस्थितियों के अनुरूप भाषा प्रयोग की शिक्षा/समझ को प्रारम्भिक स्तर पर अपने वार्तालाप द्वारा सहजता से संप्रेषित कर सकता है। इस क्रम में वह सर्वप्रथम औपचारिक ढंग से अपना परिचय देते हुए विद्यार्थियों से उसी के अनुरूप अपना–अपना परिचय देने को प्रोत्साहित करें।

उदाहरण के लिए–'मेरा नाम सोमेश भट्ट है। मैं जनपद के माध्यमिक विद्यालय में सहायक अध्यापक हूँ। स्थानीय नई बस्ती में मेरा निवास है। मुझे गिटार बजाने का शौक है।'

साथ ही उसे यह बताना चाहिए कि औपचारिक परिचय देते समय सामान्यतः चार बातें अवश्य बतानी चाहिए–

- नाम
- कक्षा/व्यवसाय
- निवास
- रुचियाँ

इसी प्रकार किसी अपरिचित का परिचय लेते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखने की सलाह भी देना चाहिए–

- विनम्रता और शालीनता से पेश आये।
- शिष्टाचार के नियमों का पूरी तरह पालन करें।
- दूसरे का स्वभाव जाने बिना हँसी–मजाक न करें।
- पहला वाक्य सम्बोधन और अभिवादन से प्रारम्भ होना चाहिए।
- अभिवादन के बाद सीधे परिचय पूछा जा सकता है। जैसे–क्या मैं आपका नाम जान सकता हूँ ?

  या

  श्रीमान् जी आपका क्या नाम है ?
- नाम जानने के बाद रहने का स्थान, व्यवसाय या शिक्षा आदि बातें।

- परिचय लेने के बाद खुशी जरूर व्यक्त करें।
- और अन्त में धन्यवाद देना न भूलें।

कुछ अन्य बातें–प्राथमिक स्तर पर ही विद्यार्थियों को विविध अवसरों पर प्रयुक्त होने वाले शिष्टाचार सम्बन्धी शब्द सिखा देने चाहिए और उनके प्रचुर अभ्यास भी करा देने चाहिए। **आप, शुभनाम, नमस्कार, प्रणाम, आइए, पधारिए, बिराजिए, आपने कैसे कष्ट किया, क्या आज्ञा है, मेरे लिए क्या आदेश है, मेरे योग्य सेवा, क्षमा करें, खेद है, कृपा कीजिए, बधाई, धन्यवाद** आदि का प्रयोग विद्यार्थियों को वार्तालाप में एवं अन्य अवसरों पर सिखा देना चाहिए। जैसे–

क्र0सं0	**स्थिति**	**भाषा प्रयोग**
1.	अज्ञानतावश कोई गलती या भूल हो जाने पर	माफ कीजिए/ऐसा गलती से हो गया। माफ कीजिए/मुझे बड़ा दुःख है इसके लिए मैं माफी मांगता हूँ या मांगती हूँ आदि।
2.	किसी ने आपका मामूली सा भी काम किया है तो	धन्यवाद।
3.	यदि आप किसी की सहायता करना चाहें तो	क्या मैं आपकी सहायता कर सकती हूँ/सकता हूँ। मुझे अवसर दें आदि।
4.	किसी बड़े अधिकारी/शिक्षक के कमरे में प्रवेश से पहले	क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ/सकती हूँ।
5.	किसी के जन्मदिन के अवसर पर	आपके जन्मदिन पर हार्दिक शुभकामनाएँ। यह दिन बार–बार आए आदि।

इसके साथ ही भाषा शिष्टाचार में विद्यार्थियों को वार्तालाप, गोष्ठी, भाषण, व्याख्यान आदि अवसरों पर प्रयुक्त सम्बोधनों एवं उपयुक्त शब्दावली से भी परिचित करा देना चाहिए। सम्बोधन सम्बन्धी विशेषण–श्री, श्रीमान्, श्रीमती, श्रीयुत, आदरणीय, पूजनीय, श्रद्धेय आदि का प्रयोग सिखा देना आवश्यक है। नाम के अन्त में 'जी' का प्रयोग हमारी संस्कृति का अंग है।

मूल्यांकन–

- धन्यवाद का प्रयोग कब और किन परिस्थितियों में करना चाहिए ?
- 'श्रद्धेय' सम्बोधन किसके लिए प्रयोग करते हैं ?
- औपचारिक परिचय देते समय सामान्यतः किन बातों को बताना चाहिए।

गतिविधि 03–(पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से)–पाठ्यपुस्तकें विद्यार्थियों के भाषा सम्बन्धी विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं। अतः पाठ्यपुस्तक पढ़ाते समय बच्चों का ध्यान इस ओर सरलता से आकर्षित कराया जा सकता है कि कब, कहाँ और कैसी भाषा का प्रयोग किया गया है। उसका परिणाम क्या हुआ ? उदाहरण के लिए–कलरव 5 में 'पंचपरमेश्वर' के जुम्मन और खाला के वार्तालाप का अंश या 'महर्षि वाल्मीकि' में रत्नाकर और ऋषियों के वार्तालाप का अंश हो या फिर मंजरी–6 में निरूपित 'छोटा जादूगर' या 'क्यों–क्यों लड़की' आदि के संवादों/वार्तालाप को लिया जा सकता है। इसके साथ ही विविध भावों की कविता, कहानी, नाटक आदि की प्रस्तुति बच्चों से उसी भाव के अनुसार कराया जाना भी इस दिशा में उपयुक्त होगा।

गतिविधि 04–(विविध उपकरणों की सहायता से)–कम समय में भाषा व्यवहार में अच्छी गति प्राप्त करने/कराने में रेडियो, टेपरिकार्डर, टी0वी0, वीडियो आदि भी महत्त्वपूर्ण सहायक हो सकते हैं। इनसे एक ओर जहाँ पाठयसामग्री को सरस एवं रोचक शैली में प्रस्तुत किया जाता है, वहीं दूसरी ओर विषय अधिक बोधगम्य होने के साथ ही विद्यार्थियों की विचार श्रृंखला में क्रमिक स्थायित्व का भी आधार बन सकता है। इन सामग्रियों को सहायक बनाने के लिए उनमें विवेचनात्मक दृष्टि से आवश्यक छाँट/संकलन की जरूरत होती है। जैसे–

(1) रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों (वार्तालाप, भाषण, नाटक, एकांकी, कविता आदि) को सुनने/सुनाने से निश्चय ही भाषा दक्षता में वृद्धि होती है। इन कार्यक्रमों को सुनने/सुनाने के बाद उन पर परिचर्चा का आयोजन करते रहना चाहिए।

(2) वीडियो सामग्री भाषा शिक्षक द्वारा बनायी जा सकती है। यह सामग्री विविधतापूर्ण होनी चाहिए, क्योंकि यह उन दरारों को भर सकती है, जो मूल कक्षा में छूट गए थे।

(3) इसी प्रकार फिल्मों के उपयुक्त अंशों का संकलन, लेना और देना, साक्षात्कार, परिचर्चा, व्याख्यान, समाचार–दर्शन आदि ऐसे कई पक्ष हैं, जो इन सहायक सामग्रियों के माध्यम से विद्यार्थियों के बीच रखकर उन्हें भाषा व्यवहार में सरलता से दक्ष किया जा सकता है।

गतिविधि 05–(अभिनय की सहायता से)–औपचारिक और अनौपचारिक परिस्थितियों के अनुरूप भाषा प्रयोग के कौशल विकास में अभिनय क्रिया को भी महत्त्वपूर्ण माध्यम के रूप अपनाया जा सकता है। अभिनय भी एक प्रकार का खेल होता है, जो कुछ खेल द्वारा बच्चों को सिखाया जाता है, वह उनके मस्तिष्क में शीघ्र और गहराई से प्रवेश कर जाता है। अतः अभिनय करके अथवा उसको देखने, सुनने से बच्चों में परिस्थिति के अनुकूल वार्तालाप करने का तरीका आ जाता है। वे समझने लगते हैं कि किस प्रश्न का, किस प्रकार का उत्तर दिया जाता है। कब कैसी बात करने से श्रोता पर अधिक प्रभाव पड़ता है। किस प्रकार किस गति तथा शक्ति से अपनी बात कही जाती है ? इसके लिए आवश्यकता होती है तो बस उनके समक्ष भावपूर्ण नाटक, एकांकी या कहानी के प्रस्तुति की।

इसके अतिरिक्त शिक्षक स्वयं भी विशेष स्थिति और समय देकर उस सन्दर्भ में कैसे भाषा का प्रयोग किया जा सकता है इसका संवादात्मक अभिनय कर सकते हैं। जैसे–

ग्राहक और सब्जी विक्रेता का वार्तालाप

ग्राहक–भैया टमाटर क्या भाव है ?

सब्जी विक्रेता–चालीस रूपये किलो।

ग्राहक–भैया तीस रूपये लगा दो। दो किलो लेना है।

विक्रेता–चाहे दस किलो ले लो। एक ही दाम लगेगा।

ग्राहक–तो ठीक है भैया। मुझे सामने वाली दुकान से लेना पड़ेगा।

विक्रेता–सुनो!सुनो! 35 रूपये लगेंगे। लेना है तो लेकर जाओ। तुम्हारे लिए लगा दे रहा हूँ।

ग्राहक–ठीक है। दो किलो तौल दो।

बैंक में

ग्राहक–(कर्मचारी से)–जरा सुनिए। मैं इस बैंक में खाता खोलना चाहता हूँ।

कर्मचारी–कृपया , बाएं तरफ जो पहला कमरा है, वहाँ जाइए।

ग्राहक–(कर्मचारी से)–क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ।

अधिकारी–जी हाँ, बताइए, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ।
ग्राहक– मैं यहाँ खाता खोलना चाहता हूँ। कौन से कागजात लाने होंगे इसके लिए ?
अधिकारी–जी हाँ जरूर। मैं आपको बता रहा हूँ आप यह सब लिख लीजिए और आकर अपना खाता खोलवा लीजिए।
ग्राहक–(सभी कागजात को लिखकर)–जी, धन्यवाद। अब मैं आप द्वारा बताये गये सभी दस्तावेज लेकर आता हूँ।
अधिकारी–आपका स्वागत है।

शिक्षक/प्रशिक्षक चाहे तो विद्यार्थियों के स्तरानुकूल दैनिक जीवन से सम्बद्ध राजनीतिक, सामाजिक, पारिवारिक, शैक्षिक आदि सदस्यों के पारस्परिक वार्तालाप के अभिनय द्वारा भी इस दिश ामें कार्य कर सकते हैं। कुछ परिस्थितियों के उदाहरण इस प्रकार देखे जा सकते हैं–

- मेजबान और मेहमान के परस्पर संवाद।
- पिता और पुत्र/पुत्री के बीच पढ़ाई संबंधी बातें।
- शिक्षक और विद्यार्थी के बीच पढ़ाई सम्बन्धी बातें।
- पारिवारिक संबंधों के परस्पर वार्तालाप।
- खेल के मैदान में खिलाड़ी और पत्रकार का वार्तालाप।
- मित्र की माँ/पिता से वार्तालाप।
- विद्यार्थी और प्रधानाध्यापक का वार्तालाप।
- रेलवे स्टेशन पर टिकट लेने के लिए–यात्री और रेलवे कर्मचारी का वार्तालाप।
- विवाह या अन्य किसी मांगलिक अवसर पर बधाई या अन्य वार्तालाप।
- दुःख, शोक संवेदना के समय के वार्तालापः आदि के द्वारा शिक्षक विद्यार्थियों को सरलता और रोचकता के साथ भाषा व्यवहार में निपुण बना सकता है। जरूरी नहीं कि ये सभी अभिनय बड़े मंच पर ही किया जाये बल्कि इन्हें तो वह अपनी कक्षा में भी दो या तीन विद्यार्थियों की सहायता से आसानी से करा सकता है। ऐसा करने से बच्चे व्यवहारिक रूप से भाषा में कौन सी बात किस लहजे या उतार–चढ़ाव के साथ करनी है इसे बारीकी से समझ सकेंगे।

गतिविधि 06–(लिखित कार्यरूप में)–बहुत से विद्यार्थी बोलने में तो कुशल होते हैं परन्तु उसी बात को परिस्थिति के अनुसार यदि लिखने को दे दिया जाय तो उन्हें असुविधा महसूस होती है। विद्यार्थियों के इस लेखन संकोच को दूर करना आवश्यक है। अतः शिक्षक उन्हें समय–समय पर ऐसे कार्यों या गतिविधियों को लिखने के लिए दें जिससे उनका लेखन संकोच दूर हो सके। इसके लिए पत्र लेखन एक सशक्त माध्यम है जिसका विस्तृत वर्णन पूर्व की इकाई में किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को कुछ काल्पनिक दृश्य देकर उस पर लेखन कराया जा सकता है, इसमें साक्षात्कार के प्रश्न तैयार करना, उत्तर देना, पठित अध्याय को संवादों में लिखना, प्रेस कांफ्रेस, वाद–विवाद, भाषण, छोटी–छोटी पटकथा लिखना तथा विद्यालय में हुए सांस्कृतिक कार्यक्रमों को अपने शब्दों में लिखना आदि सहायक हो सकते हैं।

परिस्थितियाँ चाहे औपचारिक हों या अनौपचारिक यदि बातचीत करते हुए कुछ बातों पर ध्यान रखा जाय तो निश्चय ही व्यक्ति अपनी बातचीत को प्रभावशाली बना सकता है जिनमें कुछ बातें इस प्रकार देखी जा सकती हैं–

अवश्य करें–

- सदा विनम्रता से बात करें।
- सोच समझकर बोलें।
- दूसरों की बात ध्यान से सुनें।
- अपनी आवाज और चेहरे की भाव भंगिमा पर बोलते समय नियंत्रण रखें।
- उम्र और पद में बड़े लोगों से सदा आदर और सम्मान से बात करें।
- दूसरों की बातें सहानुभूतिपूर्वक सुनें।
- वार्तालाप में सदैव शिष्टाचार का पालन करें।
- हंसमुख रहिये परन्तु दूसरों की भावनाओं का सम्मान करते हुए।

ऐसा करने से बचें–

- अपनी ही बात को मत खींचिए।
- बिना बात के तर्क न करें।
- फुसफुसाएं नहीं, साफ और स्पष्ट बोलें।
- व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग न करें।
- दूसरों की प्रशंसा में संकोच न करें।
- बढ़ा–चढ़ा कर किसी बात को न कहें।
- अनावश्यक आत्मीयता प्रदर्शन से बचना चाहिए।
- बिना अर्थ ज्ञान के शब्द का प्रयोग न करें।
- एक ही शब्द बार–बार न दोहराएँ।
- किसी पर अनावश्यक टिप्पणी न करें।
- अभद्र भाषा का प्रयोग न करें।

समग्र मूल्यांकन–

- परिस्थिति के अनुसार भाषा का रूप बदल देना.........................मानी जाती है।
  (विशिष्ट योग्यता/अवशिष्ट योग्यता)
- वाद–विवाद अथवा परिचर्चा में भाषा अधिकाधिक...................प्रयुक्त की जाती है।
  (औपचारिक रूप में/अनौपचारिक रूप में)
- रेडियो, टी0वी0 आदि उपकरणों की सहायता से भी भाषा सीखना क्यों उपयुक्त समझा जाता है।
- अपने बातचीत के प्रभावशाली बनाने के लिए किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

पाठ–7

अधिगम प्रतिफल का मूल्यांकन–शिक्षण प्रक्रिया एवं बच्चों के क्रियाकलापों के साथ प्रथम दो कक्षाओं में मौखिक और प्रेक्षात्मक मूल्यांकन तथा कक्षा–3 से आगे की कक्षाओं में अन्य तकनीकों के पूरक रूप में लिखित परीक्षा का संचालन

लेखन प्रक्रिया–

- **उद्देश्य**
- **विषय–विस्तार**
- **मूल्यांकन**
- **विषय–विस्तार गतिविधियाँ**
- **समग्र मूल्यांकन**
- **प्रोजेक्ट**
- **सन्दर्भ–ग्रन्थ**

उद्देश्य–

- मूल्यांकन के प्रति समझ विकसित करना।
- शिक्षण–प्रक्रियाओं एवं गतिविधियों के द्वारा मूल्यांकन के तरीके को जानना।
- कक्षा–1, 2 एवं पुनः कक्षा–3 से आगे की कक्षाओं में मूल्यांकन कैसे हो–इसकी जानकारी प्राप्त करना।
- लिखित परीक्षा में प्रश्न कैसे रखें जायें, इसकी समझ विकसित करना।

शिक्षा का लक्ष्य व्यापक संदर्भों में क्या है? इसका उत्तर है बच्चों में प्रजातांत्रिक मूल्यों एवं व्यवहारों के प्रति कटिबद्धता, सामाजिक, आर्थिक, लैंगिक एवं अन्य आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशीलता तथा सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक प्रक्रियाओं में भाग लेने की क्षमता उत्पन्न करना।

शिक्षा के उक्त लक्ष्यों को हम प्राप्त कर पा रहे हैं अथवा नहीं अथवा किस सीमा तक प्राप्त कर पा रहे हैं इसके लिए मूल्यांकन जरूरी है। मूल्यांकन शिक्षा के सरोकारों पर आलोचनात्मक प्रतिपुष्टि की एक प्रणाली है। मूल्यांकन में सीखने–सिखाने के तरीके एवं उनकी उपयोगिताओं का आकलन शामिल होता है। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हम बच्चों का ही मूल्यांकन नहीं करते बल्कि इससे स्वयं अपना मूल्यांकन करने में भी मदद मिलती है।

राष्ट्रीय पाठ्चर्या की रूपरेखा–2005 के अनुसार ''शिक्षा में मूल्यांकन शब्द परीक्षा, तनाव और दुश्चिता से जुड़ा है। पाठ्यचर्या की परिभाषा और नवीनीकरण के सभी प्रयास विफल हो जाते हैं, अगर वे स्कूली शिक्षा प्रणाली में जड़े जमाये मूल्यांकन और परीक्षातन्त्र के अवरोध से नहीं जूझ सकते।''

स्पष्ट है कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में स्कूलों में वर्षों से चले आ रहे मूल्यांकन के उन तरीकों से मुक्ति की बात की गयी है, जो समग्र रूप में शिक्षा के लक्ष्यों की प्राप्ति नहीं कर पा रहे हैं, बल्कि भय का कारण बने हुए हैं।

मूल्यांकन के नाम पर ली जाने वाली परीक्षा का आतंक बचपन से ही शुरू हो जाता है। स्कूल और घर दोनों इससे प्रभावित होते हैं।

शिक्षक चाहे, तो मूल्यांकन के सीमित प्रयोजन को प्राप्त कराने वाला मूल्यांकन भी बच्चों के अकादमिक और शैक्षिक विकास पर प्रतिपुष्टि देने वाला बन सकता है। इसके लिए शिक्षक को पढ़ाने से पहले आकलन के तरीकों की तैयारी करनी होगी। इसके लिए मूल्यांकन के मानक और टूल्स विकसित करने होंगे। एक अध्यापक को विद्यार्थियों की उपलब्धि की जानकारी इकट्ठा कर उसका विश्लेषण कर व्याख्या करनी होगी। प्रत्येक बच्चे की नियमित प्रगति रिपोर्ट से बच्चों की उपलब्धियों की जानकारी हो सकेगी। तभी अध्यापक विभिन्न क्षेत्रों में विद्यार्थियों के अधिगम की सीमा की एक समझ बना पायेंगे। वह यह जान सकेंगे कि बच्चे ने कितना सीखा है, बल्कि यह भी कि बच्चे को किस–किस बिन्दु पर मदद की आवश्यकता है। साथ ही शिक्षक को अपने कार्य के तरीके का मूल्यांकन करने और आवश्यक परिवर्तन करने में भी मदद मिल सकेगी।

वर्तमान व्यवस्था में केवल शैक्षिक पहलुओं के मूल्यांकन की ही व्यवस्था है जबकि छात्र के सर्वांगीण विकास में सह शैक्षिक पहलुओं का भी समान महत्त्व होता है। अब यह बात सिद्ध हो चुकी है कि हर विषयवस्तु को सीखने–सिखाने के तरीके में भिन्नता होने के कारण प्रत्येक बच्चे की प्रस्तुति एवं अभिव्यक्ति भी पृथक एवं विशिष्ट होती है। अतः यह आवश्यक है कि बच्चों का मूल्यांकन कागज–कलम परीक्षा के अतिरिक्त अन्य विधाओं द्वारा भी किया जाये। एक समान मूल्यांकन पद्धति उपयुक्त नहीं हो सकती है।

मूल्यांकन के दो पक्ष होते हैं–सतत एवं व्यापक। सतत मूल्यांकन से तात्पर्य है लगातार चलते रहने वाला मूल्यांकन। शिक्षक किसी पाठ को पढ़ा रहे हों, बच्चे पाठ पढ़ रहे हों उस समय बीच–बीच में बच्चों से प्रश्न पूछते रहना, शब्दार्थ पूछते रहना तथा अभ्यास के प्रश्नों पर चर्चा करते रहना ही सतत मूल्यांकन है।

व्यापक से तात्पर्य है बच्चे के नैतिक, सामाजिक, शारीरिक, भावनात्मक विकास की भी जानकारी प्राप्त करना केवल अकादमिक प्रगति को ही देखना नहीं। इस प्रकार सतत और व्यापक मूल्यांकन का आशय है–बच्चे की अकादमिक प्रगति के लिए नियमित रूप से उसकी सामर्थ्य का लेखन, कमियों का चिह्नांकन, सुधारात्मक उपायों का उपयोग, समस्या का निदान, पुनः परीक्षण आदि प्रक्रियाओं को लागू करना तथा इसमें बच्चे की अभिवृत्तियों, अभिरुचियों, जीवनकौशलों एवं जीवनमूल्यों तथा मनोवृत्तियों में होने वाले परिवर्तनों का अनुश्रवण करके सकारात्मक दिशा प्रदान करना है। शैक्षिक और सह शैक्षिक पक्षों का मूल्यांकन दो प्रकार से किया जा सकता है–

1–रचनात्मक मूल्यांकन–इसमें नियमित रूप से शैक्षिक और सहशैक्षिक पक्षों की प्रगति का आकलन किया जाता है। शैक्षणिक रचनात्मक मूल्यांकन में छात्र के संज्ञानात्मक पक्ष का मूल्यांकन होता है। इसमें उसके ज्ञान, जानकारी, अनुप्रयोग, मूल्यांकन और विषयों में सृजन से संबंधित व्यवहार प्राप्त किये गये ज्ञान का अपरिचित परिस्थिति में उपयोग की योग्यता को जाँचा जाता है। इसमें अधिगम विषयक कमजोरियों का तत्काल चिह्नांकन, निदान एवं उपचार करना होता है।

सहशैक्षणिक रचनात्मक मूल्यांकन–में बच्चों के व्यक्तिगत/सामाजिक गुणों, जीवन कौशलों, अभिवृत्तियों, अभिरुचियों, मूल्यों, कार्यानुभव, प्रदर्शन, कलाओं–नृत्य, गायन, चित्रकला आदि, सामाजिक, सांस्कृतिक

गतिविधियों में भागीदारी और शारीरिक शिक्षा–स्काउटिंग, खेलकूद एवं योग इत्यादि में वांछनीय परिवर्तनों का वर्णन एवं मापन किया जाता है।

2–सारांशात्मक मूल्यांकन–इसके अन्तर्गत विशेष समयान्तराल पर बच्चों की शैक्षिक प्रगति का आकलन किया जाता है। यह प्रायः कागज–कलम परीक्षा पर आधारित होता है। इसके अन्तर्गत शैक्षिक वर्ष को सत्रों में विभाजित कर सत्रांत पर सत्र परीक्षाएं एवं शैक्षिक वर्ष के मध्य और अन्त पर अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षाएँ आयोजित की जाती हैं।

एक अच्छा मूल्यांकन और परीक्षा पद्धति, सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग बन सकती है। इससे शिक्षार्थी को तो लाभ पहुँचता ही है, शिक्षातंत्र में भी सुधार होता है। आकलन का प्रयोजन सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं का सुधार करना है और उन लक्ष्यों पर पुनर्विचार करना है जो स्कूल के विभिन्न चरणों के लिए तय किये गये हैं।

मूल्यांकन/अभ्यास–

(1) मूल्यांकन से आप क्या समझते हैं ?

(2) एन0सी0एफ0–2005 मूल्यांकन के बारे में क्या धारणा प्रकट करता है ?

(3) सतत और व्यापक मूल्यांकन क्या है, उदाहरण सहित समझाइए।

भाषा की कक्षा में शिक्षण–प्रक्रिया एवं बच्चों के क्रियाकलापों के साथ अधिगम प्रतिफल का मूल्यांकन–सबसे पहले तो भाषा के शिक्षक को यह ध्यान रखना होगा कि भाषा–शिक्षण का उद्देश्य पाठ्यपुस्तक को पढ़ाना नहीं है, अपितु भाषा से जुड़े कौशलों का विकास करना है। अतः मूल्यांकन में भी दक्षताओं को ही केन्द्र में रखना होगा।

सुनना, बोलना–के मूल्यांकन हेतु–ढूँढ़ना, तर्क करना, आरोपण, भविष्यवाणी, संबंध बैठाना बिन्दु आधार हो सकते हैं।

ढूँढ़ना–चित्र दिखाकर उसमें कुछ चीजें ढूढ़ने के लिए कहें, इस चित्र में क्या है?, लड़कियाँ क्या कर रही हैं? बन्दर ने मुँह में क्या रखा है ?

तर्क करना–इस तरह के प्रश्न हों जिनमें बच्चे को खुद सोचने का अवसर हो। क्यों और कैसे वाले प्रश्न, जैसे–लड़की उदास क्यों है, चूहा क्यों छिपा है?

आरोपण–कल्पनाशक्ति का विकास करने हेतु बच्चों को एक कल्पित स्थिति में स्वयं को डालने, कौन क्या कहेगा यह कल्पना करने और वे खुद कैसा महसूस करेंगे–जैसे प्रश्नों के उत्तर दे पाना।

भविष्यवाणी–यह अनुमान कर सोचने की स्थिति देना है। अब बन्दर क्या करेगा ? चूहा कैसे अपने मित्र को बचा पायेगा ?

संबंध बैठाना–चित्र में दिखाई गई स्थिति का अपनी जिंदगी/अनुभवों से संबंध जोड़ना।

उपर्युक्त बिन्दुओं पर आधारित समझ बन जाने पर यह माना जा सकता है कि बच्चे में सुनना, बोलना कौशल विकसित हो गया है।

पढ़ना–पढ़ायी गयी विषयवस्तु पर कुछ प्रश्न बना कर उसके आधार पर सामग्री की विषयवस्तु पर चर्चा का बहस आयोजित करना। पढ़ी गयी विषयवस्तु पर अपने विचार रखना, उसको अपने शब्दों में सुनाना जैसे अनेकों तरीके हैं जिनपर मूल्यांकन हो सकता है।

लिखना–लिखना भी बच्चे का अपनी बात को कहना ही है। वह जो कुछ लिख रहा है उसमें अपनी बात कह पा रहा है या नहीं, यह महत्त्वपूर्ण है। मूल्यांकन में यह ध्यान रखना होगा कि केवल सही गलत

का चिह्न बनाना पर्याप्त नहीं है, अपितु सही विकल्प लिखकर उसपर कुछ सकारात्मक टिप्पणी लिखना जरूरी है। प्राथमिक स्तर पर व्याकरण, वर्तनी बहुत बड़ा मुद्दा नहीं है। इसके आधार पर लिखित सामग्री का अंकन कम न किया जाय। वर्तनी आदि ठीक करने हेतु उन शब्दों के साथ अलग से काम करने की जरूरत है।

आकलन में हमें विद्यार्थियों की उपलब्धि का परीक्षण के साथ ही बच्चे में सीखने के प्रति अभिवृत्ति, रुचि और स्वयं सीख पाने की क्षमता का भी आकलन करना जरूरी है।

शिक्षण करते समय शिक्षक को हर विद्यार्थी का रिपोर्ट कार्ड बनाना जरूरी है। इससे शिक्षक अपने हर विद्यार्थी के बारे में सोचता है कि उसने सत्र के दौरान क्या सीखा और किस क्षेत्र में उसको ज्यादा मेहनत करने की जरूरत है। यह काम शिक्षक बड़ी आसानी से पढ़ाते समय कर सकता है। हर बच्चे के अवलोकन के आधार पर वह डायरी में प्रतिदिन सूचनाएँ लिखता रहे तो उसे बच्चों की प्रगति समझने में कठिनाई नहीं होगी। उदाहरण के लिए वह कक्षा के बच्चे के विषय में लिखता है–''सुमन ने पाठ को बड़े चाव से पढ़ा, उसे पाठ के चित्र बहुत पसन्द आये.......................'' उसे बाद में पलटने पर उसे प्रगति का व्यवस्थित रिकार्ड मिल जाता है।

पढ़ने से जुड़े कौशलों के विकास का आकलन करने के लिए भी बच्चों का व्यक्तिगत स्तर या अवलोकन जरूरी है। पढ़ने में दक्षता के क्रमिक विकास का पता लगाने के लिए हर बच्चे के पास शिक्षक की पहुँच होनी चाहिए। बच्चों की संख्या के अनुसार शिक्षक सप्ताह, पखवाड़ा या फिर महीने में समय निकाल सकता है, जिसमें वह बच्चे का पढ़ना ध्यान से सुन सके। वैसे तो पढ़ने से संबंधित काम के दौरान कक्षा में बच्चों का अवलोकन नियमित चलेगा ही।

लिखने के कौशल का आकलन करने के लिए अलग–अलग हर बच्चे का रिकार्ड रखना जरूरी है। बच्चे की कापी भी एक तरह का रिकार्ड ही है। लिखना वास्तव में एक समग्र कौशल है, अतः बच्चे के अन्दर के विचार, किसी विषयवस्तु को लेकर उसकी अपनी सोच कैसी है, उसको लिखित माध्यम से व्यक्त कर पा रहा है–यही इसके आकलन में ध्यातव्य होगा, न कि शुद्धता होगी। सहज होकर बोलने और लिखने की स्वतंत्रता बच्चे की भाषायी विकास के लिए एक जरूरी शर्त है। उन्हें मानक भाषा के लिए टोकना, गलतियाँ निकालना निश्चित रूप से भाषा शिक्षण के उद्देश्य को पूर्ण होने से रोक देंगी।

मूल्यांकन / अभ्यास–

1–सुनना, बोलना दक्षताओं का मूल्यांकन करने के लिए कक्षा में आप कौन सी गलतियाँ / तरीके अपनायेंगे?

प्रथम दो कक्षाओं में मौखिक और प्रेक्षात्मक मूल्यांकन–भाषा की प्रथम दो कक्षाएँ भाषा सीखने की बुनियाद होती है इनमें मूल्यांकन का तरीका अन्य कक्षाओं से थोड़ा भिन्न होता है। मूल्यांकन प्रेक्षण पर आधारित होता है और मौखिक गतिविधियाँ सम्मिलित होती हैं। बच्चा जब विद्यालय में आता है तो उसके पास अपनी भाषा में या कुछ मामलों में अनेक भाषाओं में बातचीत करने की क्षमता विकसित हो चुकी होती है। वह सुनी गयी बातों को समझना और बोलना जानता है। उसकी इस क्षमता को बढ़ाना तथा ज्ञान–संवेदना के द्वारा विकसित करना भाषा शिक्षण का उद्देश्य होता है। अतः मूल्यांकन करते समय इसका ध्यान रखा जाना जरूरी है।

- इस समय बच्चे की घर की भाषा में बोलने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाना चाहिए और न ही उच्चारण की शुद्धता की कोई बात होनी चाहिए।

- इन कक्षाओं में किसी भी तरह की लिखित परीक्षा से बचने की बात की जाती है।
- भाषा शिक्षण का यह स्तर अध्यापक से संवेदनशील व्यवहार एवं प्रेक्षण कर मूल्यांकन करने की दक्षता की अपेक्षा रखता है। बच्चों के व्यवहारों का ठीक तरीके से प्रेक्षण हो सके इसके लिए निम्नलिखित तरीके शिक्षक द्वारा अपनाना अच्छा होगा–

गतिविधियाँ–भाषा की कक्षा में जो क्रियकलाप अपनाये जा रहे हैं वे छोटे समूहों में हों। चार या पाँच बच्चों का समूह हो।

– बच्चों को आपसी बातचीत पर रोकना ठीक नहीं बल्कि उसकी बातचीत ध्यान से सुनने की प्रवृत्ति विकसित करें। उन्हें रोचक काम देने से वे काम में व्यस्त हो जायेंगे।

– कक्षा का माहौल बेझिझक होकर अपनी बात कहने योग्य बनायें।

– हर बच्चे की बोलने, सुनने की क्षमताओं का डायरी में उल्लेख करते रहें। इसमें बच्चे का अपनी बात कह पाने का आत्मविश्वास, प्रश्न पूछने की आदत, मुखरता, दूसरों की बात सुनने में रुचि, सुनने का धैर्य और सुनी हुई बात पर टिप्पणी करना चाहिए।

मूल्यांकन/अभ्यास–

1–कक्षा–शिक्षण में प्रेक्षात्मक मूल्यांकन कैसे किया जा सकता है?

कक्षा तीन से आगे की कक्षाओं में–इस कक्षा तक बच्चा भाषा की दक्षताओं पर शुरूआती स्तर पर काम शुरू कर चुका होता है। अतः उससे मौखिक और लिखित माध्यमों द्वारा बातचीत करने (संवाद) के कौशल एवं आलोचनात्मक चिंतन के विकास हेतु क्रियाकलाप कराने चाहिए। कक्षा–तीन तक विद्यार्थी की भाषा को मानक बनाने के प्रयास से बचना चाहिए। कक्षाचार के बाद समृद्ध एवं रोचक अवसर देकर इसे मानक की ओर ले जाना चाहिए। सकारात्मक अवसर मिलने पर विद्यार्थी स्वयं ही मानक भाषा को ग्रहण करने लगते हैं।

इन कक्षाओं में मूल्यांकन हेतु मौखिक और लिखित दोनों तरीके अपनाये जाते हैं। इसकी प्रचलित विधियाँ भी हैं जो निम्नवत् हैं–

मौखिक परीक्षा, लिखित परीक्षा, व्यावहारिक परीक्षा, निरीक्षण, साक्षात्कार, छात्र–रचना, अभिलेख (रिकार्ड), डायरी, प्रोजेक्ट आदि।

परीक्षा प्रक्रिया–उ0प्र0 के पाठ्यक्रम (बेसिक शिक्षा परिषद) में वर्ष में तीन बार परीक्षाएँ लेने की बात कही गयी है। सत्र परीक्षा माह सितम्बर, नवम्बर और फरवरी के प्रथम सप्ताह में ली जायेगी तथा इन तीनों परीक्षाओं में प्राप्त औसत अंकों के 25 प्रतिशत अंक मुख्य परीक्षा के अंकों में जोड़े जायेंगे।

मूल्यांकन हेतु गतिविधियाँ–

- कहानी/कविता पर चर्चा–कहानी सुनना, सुनाना तत्पश्चात् उसके पात्रों, वस्तुओं, घटनाओं पर प्रश्न के माध्यम से चर्चा करना। (मौखिक)
- कहानी/कविता को अपनी भाषा में बताना (मौखिक एवं लिखित)।
- कहानी का सार लिखना–पढ़ी या सुनी हुई कहानी को अपने शब्दों में लिखना।
- वाक्य बनाना–एक समूह को संज्ञा, सर्वनाम शब्द के कार्ड और दूसरे को क्रिया के कार्य देकर वाक्य बनवाना और लिखवाना।
- पैराग्राफ (अनुच्छेद) लेखन–अर्थपूर्ण शब्दों को आपस में मिलाकर वाक्य बनवाना और लिखवाना।

- कविता लेखन–बच्चों को कविता की पहली पंक्ति बताएं और उन्हें कविता पूरी करने के लिए दें। अपनी कविता में से ऐसे शब्दों को चिह्नित करने के लिए कहें, जिनकी ध्वनि एक समान है।
- चित्र से कहानी/कविता लेखन–चित्र दिखाएं और उनसे संबंधित कुछ शब्द भी दें। बच्चे इसके आधार पर कहानी या कविता लिखें।
- कहानी पढ़कर उसपर अभिनय करना।
- व्यतिक्रम में रखे वाक्यों को सही कर कहानी जमाना।
- शब्दों/वाक्यों का श्रुतलेख बोलकर लिखवाना।
- कहानी को धाराप्रवाह पढ़ना।
- शीर्षक बनवाना–कहानी, पैराग्राफ या कविता देकर उसका शीर्षक लिखवाना।
- अपने बारे में, प्रिय व्यक्ति, पसंदीदा त्योहार, अड़ोस–पड़ोस आदि के बारे में लिखवाना।
- कहानी/कविता/अनुच्छेद पर प्रश्न बनवाना।
- अपठित कविता से दिये गये प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़कर लिखवाना।
- किसी स्थल का अनुभव कराकर उन्हें व्यवस्थित ढंग से लिखना।
- शब्दकोश में किसी शब्द का अर्थ ढूँढने के लिए देना।
- समाचार–पत्र पढ़ना और खास–समाचारों पर चर्चा करना। किसी समाचार के बारे में विस्तार से बताना।
- कहानी को संवाद के रूप में बदलना संवाद को कहानी बदलना। इसी प्रकार एक विधा को अन्य विधाओं में परिवर्तन कर पाना।

भाषा–शिक्षण के मूल्यांकन के लिए इनके अतिरिक्त अनेकों गतिविधियाँ हो सकती हैं, जिनसे आसानी से मूल्यांकन किया जा सकता है। क्रियाकलाप या गतिविधियाँ मूल्यांकन का अच्छा तरीका होती हैं। एक तो इनसे हर बच्चे का बारीकि से मूल्यांकन हो जाता है और दूसरे, बच्चों पर कोई दबाव भी नहीं होता। इनमें काम करते हुए कई बच्चों का एक साथ मूल्यांकन हो जाता हे। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के लिए ये गतिविधियाँ अच्छा साधन हैं।

लिखित परीक्षा–कक्षा–3 से ऊपर की लिखित परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्न कैसे हों–यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। प्रश्नों के संबंध में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 के अन्तर्गत निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण बिन्दु उठाये गये हैं–

'प्रश्नपत्र बनाने वालों से यह अपेक्षा है कि वे व्याख्या करने और अधिगम के व्यावहारिक पहलू पर ज्यादा जोर दें, न कि पुस्तक में दिये गये तर्क और तथ्यों पर।' प्रश्नों के प्रारूप में इसी बात की पुष्टि के लिए कुछ उदाहरण भी दिये हैं, यथा–'एक लौह प्रगलन उपक्रम में आरम्भ करने से पहले कौन सी चार बातें ध्यान में रखने की जरूरत होती है?' इस प्रश्न को यदि इस प्रकार पूछा जाय ''एक उद्योगपति लौह प्रगलन लगाना चाहता है तो उसे किस स्थान का चुनाव करना चाहिए और क्यों ?'' इसी प्रकार दूसरा प्रश्न है–'चिड़िया की चोंच का आकार अनुकूलन में किस प्रकार सहायक होता है?' इस प्रश्न को दूसरी तरह से रखने पर यह ज्यादा उपयुक्त होगा–

'अपने आपपास दिखने वाली साधारण चिड़िया की चोंच का चित्र बनाओ। उसकी चोंच के आधार पर समझाओ कि वह किस प्रकार का भोजन करती होगी और आपके आसपास में उसे वैसा भोजन कहाँ मिलता होगा?'

इस प्रकार के प्रश्नों से बच्चे अपने व्यावहारिक ज्ञान को किताबी ज्ञान से जोड़ सकेंगे। अतः प्रश्न ऐसे होने चाहिए जो बच्चे की समझ को व्यावहारिक धरातल पर और अधिक पुष्ट कर सकें।

प्रश्नों का प्रकार–प्रश्नों को निम्नलिखित श्रेणियों के अनुसार बाँटा जा सकता है–

(क) अभिव्यक्ति के माध्यम के अनुसार–

(1) मौखिक प्रश्न–इनका प्रयोग मौखिक परीक्षण और साक्षात्कार के समय किया जाता है। प्राथमिक कक्षाओं, जैसे–कक्षा 1 एवं 2 में मौखिक प्रश्नों का प्रयोग लगभग 60 से 70 प्रतिशत तक उपयोगी होता है। मौखिक प्रश्न के समय बच्चा शिक्षक के सामने रहता है। इसमें मूल्यांकन अधिक विश्वसनीय होता है।

(2) लिखित प्रश्न–लिखना, पढ़ना, अभ्यास आदि कार्यों में इनका उपयोग किया जाता है। सत्रीय परीक्षा तो इन्हीं के माध्यम से होती है।

(ख) सीखने के स्तर के अनुसार–

1–ज्ञानात्मक प्रश्न–इनका सम्बन्ध जानकारी (ज्ञान), समझ और स्मृति से होता है।

2–भावात्मक प्रश्न–इनका सम्बन्ध बच्चों के उन सभी भावों, रुचियों, आदर्शों, मूल्यों और आदतों से होता है, जो इनके चरित्र निर्माण में विशेष रूप से सहायक होते हैं।

3–क्रियात्मक–ऐसे प्रश्न बच्चों की सर्जनात्मक/रचनात्मक प्रवृत्ति से जुड़े होते हैं। ऐसे प्रश्नों के उत्तर में मस्तिष्क और हृदय के साथ–साथ शरीर की इन्द्रियाँ भी सक्रिय रहती हैं।

(ग) उत्तर देने की प्रक्रिया के अनुसार–

1–निबंधात्मक प्रश्न–निबन्धात्मक प्रश्न बहुत दिनों तक परीक्षाएं लेने के एकमात्र साधन थे, इसलिए ऐसे प्रश्नों को परम्परागत प्रश्न भी कहते हैं। निबन्धात्मक प्रश्न के तीन रूप होते हैं–

(अ) दीर्घ उत्तरीय–शैक्षिक उपलब्धि का सर्वोच्च ढंग से मापन करते हैं।

(ब) लघु उत्तरीय–5–6 पंक्तियों में उत्तर की अपेक्षा।

(स) अति लघु उत्तरीय–एक या दो शब्दों अथवा वाक्यों में।

2–वस्तुनिष्ठ प्रश्न–इन्हें निश्चित उत्तरीय और अति लघु उत्तरीय भी कहते हैं। प्रत्येक प्रश्न का एक निश्चित और सही उत्तर होता है। ये दो प्रकार के होते हैं–

(क) पूर्ति प्रश्न–रिक्त स्थान की पूर्ति करनी होती है।

(ख) चयन प्रश्न–(अ) बहुविकल्पीय (ब) सत्यासत्य (ग) वर्गीकरण (घ) मिलान (ड़.) तार्किक प्रश्न–क्रमबद्धता के प्रश्न, सहसम्बन्ध के प्रश्न, रिश्तों के प्रश्न, दिशा परिवर्तन के प्रश्न आदि।

प्रश्नपत्र में सभी स्तर के प्रश्नों को रखना पड़ता है क्योंकि कक्षा में सामान्य, सामान्य से कम स्तर एवं प्रतिभावान बच्चे होते हैं। प्रश्नपत्र में सामान्यतः 25 प्रतिशत प्रश्न सरल हों जिन्हें कक्षा के सभी बच्चे कर सकें। 50 प्रतिशत सामान्य प्रश्न रखे जायं तथा 25 प्रतिशत प्रश्न थोड़े कठिनाई वाले होते हैं।

समग्र मूल्यांकन–

1–कक्षा में सतत और व्यापक मूल्यांकन करने के पीछे क्या मंशा है ?

2–शिक्षण–प्रक्रिया में पढ़ने और लिखने के कौशल का मूल्यांकन कैसे करेंगे, उदाहरण सहित समझाइए।

3–कक्षा–एक और दो में मौखिक मूल्यांकन कैसे करेंगे?
4–कक्षा–तीन से ऊपर की कक्षाओं में मूल्यांकन के कौन–कौन से तरीके अपनाये जाने चाहिए और क्यों?
5–आपकी दृष्टि में लिखित परीक्षा के लिए कक्षा–4 से 8 तक के लिए प्रश्न कैसे होने चाहिए।

प्रोजक्ट–

- कक्षा–6 के लिए हिन्दी भाषा की वार्षिक परीक्षा के लिए प्रश्नपत्र तैयार कीजिए।

सन्दर्भ–ग्रन्थ–

- बच्चे की भाषा और अध्यापक–प्रो0 कृष्णकुमार
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005

–0–